रोसड़ा की संजीवनी

रोसड़ा अनुमंडल की आत्मा और उसकी विशेषताओं को जीवंत करती 208 कविताओं का एक अद्वितीय संग्रह !

संजीव कुमार सिंह

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sanjeev Kumar Singh 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-984-5

Cover Design: Shivam Gaur
Typesetting: Sagar

First Edition: May 2026

।। माटी का गौरव ।।

बूढ़ी गंडक की लहरों में, जिसका गौरव गान है।
मिथिला के इस आँगन का, रोसड़ा ही सम्मान है।।
लिखी गई **'संजीवनी'** यह, जन–जन की आवाज है।
मिट्टी की खुशबू समेटे, यह माटी की पहचान है।।

।। जीवंतता और संघर्ष ।।

संघर्षों की तपिश झेलकर, जो कुंदन बन निखरा है।
रोसड़ा के हर जर्रे में, साहस बनकर बिखरा है।।
इस पुस्तक के पन्नों में, जीवन का सार मिलेगा।
कलम चली है सत्य हेतु, जो हृदय द्वार तक उतरेगा।।

।। पत्रकारिता की दृष्टि ।।

बदलाव की जो बयार चली, उसे शब्दों में ढाला है।
रोसड़ा की उस जिजीविषा को, हमने यहाँ सँभाला है।।
सिर्फ खबर नहीं यह **'संजीवनी'**, जन–मन की धड़कन है।
क्षेत्र के उत्कर्ष हेतु, यह पावन सा समर्पण है।।

।। इतिहास और विरासत ।।

पुरखों की विरासत का, इसमें पावन उजियारा है।
रोसड़ा की इस माटी ने, वीरों को ललकारा है।।
इतिहास के पन्नों से चुनकर, यादों को सहेजा है।
'संजीवनी' के रूप में, एक प्रेम–पत्र ये भेजा है।।

।। अनुमंडल का श्रृंगार।।

कलम बनी **'संजीवनी',** शब्द बने आधार।
रोसड़ा का गौरव लिखा, छंदों में हर बार।।
पत्रकारिता के साथ ही, काव्य की जो बहती धार।
संजीव कुमार सिंह की लेखनी, अनुमंडल का श्रृंगार।।

।। जन–चेतना और विकास ।।

जहाँ रुकी थी कलम कभी, वहाँ से राह बनाई है।
रोसड़ा के विकास की, हमने अलख जगाई है।।
यह पुस्तक नहीं दर्पण है, जन–जन की अभिलाषा का।
'संजीवनी' संवाहक है, लोक–शक्ति की भाषा का।।

।। संघर्ष और जिजीविषा ।।

बाधाओं की लहरों को, जिसने चीर दिखाया है।
रोसड़ा ने हर संकट में, खुद को वीर बताया है।।
वही जीवनी, वही कहानी, इन शब्दों में महकेगी।
पढ़ेगा जब कोई इसे, तो धड़कन इसकी चहकेगी।।

।। कृतज्ञता का आधार ।।

संस्कारों की इस थाती में, रोसड़ा का गौरव गाता हूँ।
साहित्य की पावन धारा से, संस्कृति का दीप जलाता हूँ।।
पूर्वजों की कृतज्ञता का आधार, **'संजीव'** का यह संकल्प है।
मिट्टी के ऋण को चुकाना ही, जीवन का एकमात्र विकल्प है।।

।। शब्द और संकल्प ।।

सत्य की स्याही से लिखी, हर एक गाथा पावन है।
कलम की इस तपस्या में, महकता जन–जन का आँगन है।।
रोसड़ा की मिट्टी का तिलक, माथे पर हमने लगाया है।
पत्रकारिता के धर्म से ही, जीवन का सार सजाया है।।

।। राष्ट्र और सनातन ।।

सनातन की अचल शक्ति, रगों में तेज भरती है।
राष्ट्र प्रेम की पावन लौ, हृदय को दीप करती है।।
'संजीव' का यह संकल्प रहे, सेवा के पथ पर सदा अडिग।
भारत माँ के चरणों में, समर्पित हर एक कृति है।।

।। प्रस्तावना ।।

'रोसड़ा की संजीवनी' केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि मेरी उस माटी के प्रति कृतज्ञता है, जिसने मुझे पहचान दी। यह पुस्तक एक यात्रा है—अतीत के गौरव से भविष्य के संकल्प तक की। इस यात्रा में मेरे साथ मेरे पुरखे हैं, यहाँ के संघर्षशील व्यक्तित्व हैं और यहाँ की पावन नदियाँ व मंदिर हैं।

।। रोसड़ाः काल—प्रवाह और संकल्प ।।

लोकतंत्र के इस पावन पथ पर, गौरव की यह गाथा है।
रोसड़ा की जनता स्वयं हर युग में, अपना भाग्य विधाता है।।

बावन से पच्चीस तक का, जो सफर यहाँ पर आया है।
'संजीव' की प्रखर लेखनी ने, उसे पन्नों पर सजाया है।।

महावीर राउत से शुरू हुआ, सेवा का वह प्रथम अध्याय।
रामाकांत झा की सोशलिस्ट गूँज, और **सहदेव** का न्याय।।

रामाश्रय राय का जनसंघ दीप, और **प्रयाग मंडल** का स्वर।
भोला मांडर और **गजेंद्र सिंह** ने, सींचा विकास की डगर।।

अशोक कुमार की समता लहर, और **मंजू हजारी** का मान।
वीरेंद्र कुमार ने पच्चीस से बढ़ा रहे है रोसड़ा का सम्मान।।

विधायकों की इस कड़ी ने, लोकतंत्र को प्राण दिए।
हमने भी इस गौरव—गाथा में, शब्द—दीप जला दिए।।

पर यह पुस्तक केवल सत्ता का खेल नहीं।
यह **आरसी** की कविताओं का ओज है।।

यह **संजीव कुमार सिंह** की निर्भीक पत्रकारिता है।
यह **आरसीनगर एरौत** की मिट्टी की महक है।।

रोसड़ा को जिला बनाने का एक पवित्र संकल्प है।
इसमें **करियन** और **एरौत** के मंदिरों की घंटियाँ भी हैं।।

बागमती, करेह एवं बूढ़ी गंडक की लहरों का संगीत भी है।
जिसमें गूंजती जन–जन की हर एक चीख और उम्मीद भी है।।

यह **'रोसड़ा की संजीवनी'** आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे गर्व है कि मैं इस महान भूमि का एक अदना सा **लेखक** और **सेवक** हूँ।

–संजीव कुमार सिंह

ग्राम–पोस्ट– आरसीनगर एरौत
वाया– रोसड़ा, जिला– समस्तीपुर
पिनकोड –848210, बिहार
मोबाईल नम्बर 9955644631

|| दो शब्द ||

'रोसड़ा की संजीवनी' मात्र एक काव्य संग्रह नहीं, बल्कि मेरे अंतर्मन की गहराइयों से उपजा अपने अनुमंडल के प्रति एक श्रद्धा–सुमन है। यह पुस्तक हमारे गौरवशाली **रोसड़ा अनुमंडल** की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को काव्यात्मक शैली में संजोने का एक विनम्र प्रयास है।

इस संग्रह में आपको रोसड़ा की माटी की महक और यहाँ की धड़कन महसूस होगी। इसमें अनुमंडल की स्थापना के संघर्ष, जिला बनने के अधूरे सपने और राह में आई अड़चनों का जिक्र है, तो वहीं यहाँ के अमर स्वतंत्रता सेनानियों का शौर्य गान भी है। मैंने कोशिश की है कि रोसड़ा की चौहद्दी से लेकर इसके गाँव–गाँव, चौक–चौराहों, प्रसिद्ध मंदिरों, कल–कल बहती नदियों और यहाँ के जीवंत हाट–बाजारों को शब्दों के माध्यम से सजीव कर सकूँ।

राजनीतिक परिदृश्य हो या भौगोलिक विस्तार, यहाँ के हुनरमंद हाथ हों या साहित्य के मनीषी–इस पुस्तक में सभी पहलुओं को मौलिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

एक विनम्र निवेदन

मैं साहित्य का विद्यार्थी हूँ, विद्वान नहीं। अतः यदि इस काव्य यात्रा में कहीं भाषा, व्याकरण, छंद या लिंग संबंधी त्रुटियाँ दृष्टिगोचर हों, तो उन्हें मेरी सीमाएँ समझकर क्षमा करें और मेरी भावनाओं व अभिव्यक्ति के आनंद को प्रधानता दें। यह पुस्तक आज आपके हाथों में है। इसके सृजन और प्रकाशन की प्रक्रिया में अत्यधिक आर्थिक श्रम और संसाधनों का निवेश हुआ है। अतः मेरा आपसे सप्रेम आग्रह है कि पुस्तक के लिए निर्धारित **'सहयोग शुल्क'** अवश्य प्रदान करें। आपका यह सहयोग न केवल मेरा मनोबल बढ़ाएगा, बल्कि भविष्य में क्षेत्रीय साहित्य की सेवा के लिए मुझे और मुझ जैसे अन्य कलमकारों को निरंतर प्रेरित करेगा। हम साहित्य सृजन के लिए समर्पित है आप हमें **आर्थिक सहयोग** अवश्य करें, ताकि हम इस पथ पर निरंतर बढ़ते रहे। पुस्तक क्रय कर पढ़ें और अपने साहित्य प्रेमी मित्रों एवं शुभचिंतकों को भी पुस्तक के बारे में बताएं एवं क्षेत्र विशेष पर आधारित पुस्तक क्रय करने के लिए प्रेरित करें। ऐसी पुस्तक यदि आपके अपने घर के पुस्तकालय या स्कूल की लाईब्रेरी में उपलब्ध है तो आपके बच्चों के लिए प्रेरक एवं लाभकारी सिद्ध होंगी। आशा है, **'रोसड़ा की संजीवनी'** आपके हृदय को स्पर्श करेगी।

विनीत

–संजीव कुमार सिंह

।। संश्लिष्ट विहंगावलोकन।।

'संजीवनी बिहार' (पाक्षिक समाचार–पत्र) एवं **'आईना समस्तीपुर'** मासिक पत्रिका के संपादक संजीव कुमार सिंह के सद्यः प्रकाश्य काव्य–संग्रह **'रोसड़ा की संजीवनी'** पर विहंगम दृष्टिपात करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं यह देख कर अत्यंत आह्लादित हूँ कि साहित्य के क्षेत्र में एक ऐसी प्रतिभा उद्‌भासित हुई है, जो आरसी नगर (एरौत) की है। इन्होंने हिन्दी तथा मैथिली काव्य–जगत को अपनी अनंत और अमोघ कृतियों से संवर्धित कर राष्ट्रीय स्तर पर अपना विशिष्ट कीर्तिमान स्थापित किया है।

मैं **महाकवि आरसी प्रसाद सिंह** जी के अक्स में **संजीव कुमार सिंह** की साहित्य–अलंकार से सुसज्जित छवि का अवलोकन कर भावविभोर हूँ। महाकवि आरसी की ही भाँति संजीव कुमार सिंह ने अपने साहित्य–सृजन से न केवल अपने व्यक्तित्व को निखारा और सँवारा है, अपितु अपनी मौलिक परंपरा और महाकवि आरसी प्रसाद सिंह के मनीषी गौरवपूर्ण व्यक्तित्व की जीवंतता में **'संजीवनी'** की शक्ति भी भर दी है।

संजीव कुमार सिंह की व्यापक दृष्टि ने इस पुस्तक में समस्त अनछुए पहलुओं और विशेषताओं को उजागर किया है। एक खोजी पत्रकार और मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित एक सिद्ध कवि के रूप में इन्होंने अपने लोकरंजक स्वभाव को भी यहाँ अभिव्यक्त किया है।

संजीव कुमार सिंह, दैनिक हिन्दुस्तान एवं दैनिक जागरण के माध्यम से पत्रकारिता के क्षेत्र में हमेशा सुर्खियों में रहे है। पत्रकारिता की मर्यादा को हमेशा कायम रखते हुए इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी कला–कौशल को साहित्य जगत में स्थापित किया है।

'रोसड़ा की संजीवनी' नाम की इस काव्य–कृति को पढ़कर मुझे सहसा यह श्लोक स्मरण हो आया है–

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निज विलसंतः सन्ति संतः कियन्तः।।

संजीव कुमार सिंह की इस सद्भावना का समादर करते हुए मैं माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन्हें भविष्य में इससे भी अधिक उत्कृष्ट काव्य–रचना की शक्ति प्रदान करें।

अयमारम्भः शुभ्राय भवतु।

–डॉ परमानन्द मिश्र
पूर्व प्राध्यापक
हिन्दी विभागाध्यक्ष
उदयनाचार्य कॉलेज ,रोसड़ा
दिनांकः 21–01–2026 ई0

।। स्नेह–वृष्टि ।।

आरसीनगर, एरौत के लाल **संजीव कुमार सिंह** मूलतः एक खोजी पत्रकार हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका लंबा अनुभव है। **'दैनिक जागरण'** और **'दैनिक हिन्दुस्तान'** में पत्रकारिता के दौरान इन्हें रोसड़ा अनुमंडल के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिवेश के अतीत व वर्तमान को विश्लेषित करने का सुनहरा अवसर मिला, जिससे उनके अनुभव के आयाम विकसित हुए।

इसी का परिणाम है कि इन्होंने हिंदी जगत को **'रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा'** जैसी अनमोल कृति दी। मेरा विश्वास है कि नई पीढ़ी के लिए यह पुस्तक स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक के रोसड़ा के सत्ता–संघर्ष और उसकी सामाजिक बुनावट को समझने में सहायक सिद्ध होगी। मुझे लगता है कि यह रोसड़ा के लिए एक विश्वसनीय **संदर्भ–पुस्तक** के रूप में मान्य होगी। इसी क्रम में उनकी दूसरी अनमोल कृति **'बिहार का सत्ता संग्राम'** है, जो संपूर्ण बिहार की राजनीतिक उठा–पटक के परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। **'बिहार का सत्ता संग्राम'** इनकी बिहार के लोकप्रिय राजनीतिक पुस्तकों में दूसरे स्थान पर है।

संजीव कुमार सिंह न केवल हिंदी और मैथिली के विख्यात साहित्यकार आरसी प्रसाद सिंह के गाँव एरौत से आते हैं, बल्कि रिश्ते में उनके चचेरे पौत्र भी हैं। अतः स्वाभाविक रूप से वे उनसे प्रभावित हैं और उनकी साहित्यिक विरासत के सच्चे उत्तराधिकारी हैं। पत्रकारिता के साथ–साथ उनमें गहरा साहित्यिक रुझान भी है और वे निरंतर काव्य–सृजन करते रहते हैं। इसी का प्रतिफल है–उनकी काव्य–कृति **'रोसड़ा की संजीवनी'**। इस कविता संग्रह में उनकी कुल 208 कविताएँ संकलित हैं।

इन कविताओं के माध्यम से संजीव कुमार सिंह ने रोसड़ा, यहाँ के संघर्षों, महान विभूति उदयनाचार्य, आचार्य सुरेन्द्र झा सुमन, कविवर आरसी प्रसाद सिंह एवं रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा और यहाँ के गौरव–स्थलों का पद्यात्मक गुणगान किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी पिछली दोनों महत्वपूर्ण कृतियों की तरह यह कृति भी पाठकों के बीच समादृत होगी और **संदर्भ–पुस्तक** के रूप में मान्य होगी। मेरी ओर से उन्हें बहुत–बहुत शुभकामनाएँ!

सस्नेह

–हरिनारायण सिंह 'हरि'
प्रसिद्ध कवि, पत्रकार एवं साहित्यकार
दिनांकः 24–01–2026 ई0

|| मंगल कामना ||

कृतित्व का व्यक्तित्व के साथ गहरा संबंध होता है। वस्तुतः कृतित्व को व्यक्तित्व की प्रतिलिपि माना जाता है। **'प्रभाकर शतक'** में इसी तथ्य को इस रूप में कहा गया है – **कृतिराख्याति व्यक्तित्वम्**। (अर्थातः कृति ही व्यक्तित्व की व्याख्या करती है)।

कृतित्व और व्यक्तित्व का ऐसा मणिकांचन संयोग विरले लोगों में ही देखा जाता है। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ऐसे ही विरल व्यक्तित्वों में एक नाम डॉ. संजीव कुमार सिंह का भी आता है।

डॉ. संजीव कुमार सिंह उसी उर्वर भूमि की उपज हैं, जिसकी उपज महाकवि आरसी प्रसाद सिंह थे। डॉ. सिंह महाकवि के वंश–वृक्ष की ही एक प्रशाखा (संबंध में चचेरे पौत्र) हैं और ये महाकवि आरसी के पद–चिह्नों पर निर्भय एवं निर्बाध गति से निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

विद्या–वाचस्पति मानद उपाधि से सम्मानित डॉ. सिंह ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना एक अनुपम प्रतिमान स्थापित करने के पश्चात कविता के क्षेत्र में भी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। पत्रकार होने के साथ–साथ डॉ. सिंह एक मर्मज्ञ कवि भी हैं। य **'अच्छे कवि'** इस अर्थ में हैं कि इन्होंने अपने विचारों, अनुभवों एवं चिंतन को अत्यंत सहज, सरल और लोक भाषाओं में छंदोबद्ध किया है। इनकी विशेषता यह है कि जहाँ पारंपरिक काव्यशास्त्रीय, भाषिक या व्याकरणिक जटिलताएँ कविताओं को दुरूह बनाने लगती हैं, वहाँ इन्होंने जन–रुचि का ध्यान रखते हुए अपनी रचनाओं को व्याकरण के मोहजाल से मुक्त रखा है। इनकी कविताओं का उन्मुक्त प्रवाह इनके पूर्णतः प्रगतिशील दृष्टिकोण को दर्शाता है।

'अर्धांगिनीः एक काव्य यात्रा', 'बिहार का सत्ता संग्राम', 'रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा' तथा **'महाकवि आरसी स्मरणिका' (भाग–1 और भाग–2)** के सफल प्रकाशन के उपरांत, अब डॉ. संजीव कुमार सिंह अपना नवीन काव्य–संग्रह **'रोसड़ा की संजीवनी'** लेकर माँ भारती के मंदिर में उपस्थित हुए हैं।

मैंने इनके इस प्रकाशनाधीन संग्रह की अनेक कविताएँ सुनी हैं। इनकी भाषा की सरलता और स्वाभाविकता मन–प्राणों को आह्लादित कर देती है। कविताओं में प्रयुक्त छंदों में ग्रामीण बालिकाओं जैसी जो अल्हड़ता है, वह इस कृति को प्राणवान बनाती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनकी पूर्ववर्ती कृतियों की भाँति ही इस संग्रह को भी व्यापक जन–सम्मान और आदर प्राप्त होगा।

मैं **डॉ. संजीव कुमार सिंह** को हार्दिक बधाई देता हूँ और मंगलकामनाओं के साथ इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

तथास्तु!

–परमानन्द प्रभाकर
प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार
'प्रभाकर पड़ाव'
ग्राम–पो० : रुपौली बुजुर्ग,
वायाः उजियारपुर
(राम जानकी मंदिर के निकट) पिन – 848132
दिनांकः 25 जनवरी, 2026 ई०

।। लेखक के प्रति आत्मीय भाव।।

वर्ष 1999 ई0 के 02 मई को जब **श्री संजीव कुमार सिंह** को जीवन साथी के रूप मैंने स्वीकार किया तब मुझे इस बात का अहसास नहीं था कि मानव मूल्यों के जिस सिद्धांत को दुनिया भूल रही है, उसे इन्होंने अपने जीवन का आधार माना है। ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ कि मुझे **श्री संजीव कुमार सिंह** जैसे जीवन साथी मिले। **'रोसड़ा की संजीवनी'** नाम की काव्य संग्रह पुस्तक के लिए कवि रूप में श्री संजीव कुमार सिंह का व्यक्तित्व एक बार फिर पाठकों के सामने प्रर्दशित हो रहा है। इससे पहले महाकवि आरसी प्रसाद सिंह के प्रति अपनी अपार आस्था का परिचय देते हुए **'महाकवि आरसी स्मरणिका' अंक 1 और 2** का संपादन करने का इन्हें सुअवसर प्राप्त हो चुका है। **'बिहार का सत्ता संग्राम'** एवं **'रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा'** नाम की राजनीतिक पुस्तक का लेखन कर एक लेखक के रूप में भी इन्हें लोकप्रियता प्राप्त हो चुका है। प्रस्तुत है भाव पुष्प की ये पंक्तियां –

।। भाव–पुष्प ।।

।। संपादक का संकल्पः आईना और संजीवनी ।।

आईना समस्तीपुर थामे, सच का चेहरा दिखाते हैं।
जिले की हर धड़कन को, वह शब्दों में सजाते हैं।।

मासिक पत्रिका के पन्नों पर, संस्कृति का जो रंग चढ़ा।
संजीव जी की संपादकीय से, हर वर्ग का विश्वास बढ़ा।।

संजीवनी बिहार बना, जन–जन की बुलंद आवाज।
निष्पक्ष पत्रकारिता ही, जिसका है असली अंदाज।।

अखबार के हर कॉलम में, सच की लौ जलती है।
संजीव जी के संपादन में ही, व्यवस्था यहाँ बदलती है।।

कलम की स्याही से उन्होंने, निर्भय होकर लिखा सदा।
चाहे सत्ता का हो दबाव, न बदला अपना नेक इरादा।।

रोसड़ा की गलियों से उठकर, जो गूँज बिहार में है।
संपादक की उस निष्ठा का, लोहा सारे संसार में है।।

मुझे गर्व है कि हमने लेखक, संपादक, पत्रकार कवि संग एक मानवीय संवेदना से भरपूर जीवन साथी के रूप में श्री संजीव कुमार सिंह को प्राप्त किया। **'रोसड़ा की संजीवनी'** नाम का काव्य संग्रह इन्हें कवि रूप को प्रर्दशित करने के लिए काफी है। प्रस्तुत **'काव्य संग्रह'** का हर पन्ना पाठकों को रोसड़ा के राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, एवं भौगोलिकता का काव्यात्मक रूप है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि **'रोसड़ा की संजीवनी'** पाठकों के अपार प्रेम और स्नेह से **श्री संजीव जी** की **संजीवनी** का दर्जा प्राप्त करेगी। मंगल कामनाएँ।

–सविता सिंह, पत्रकार

दिनांकः 26–01–2026 ई0

।। पूज्य पिता के प्रति संततियों का भाव।।

'रोसड़ा की संजीवनी' काव्य संग्रह के कवि **श्री संजीव कुमार सिंह** के इस रूप को जानकार हमें अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमसबों ने अपने **पूज्य पिता श्री संजीव कुमार सिंह** के अनुशासन प्रिय, धैर्यशील एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के बारे में खुद अनुभव किया है। उन्होंने अपने अन्दर के मानवता प्रेम को समाजसेवा में बदलकर खुद सरकारी नौकरी को तिलांजलि दी। बचपन में मुझे पिताश्री के द्वारा लिया गया यह निर्णय गलत लगता था। परन्तु, हम तीनों भाई–बहन उम्र बढ़ने और पिताश्री को गांव के झंझावातों को झेलने के दौरान जो दृश्य देखा उसे देखकर पिता जी के हर निर्णय पर अब विश्वास है। **दैनिक हिन्दुस्तान** एवं **दैनिक जागरण** जैसे लोकप्रिय समाचार पत्रों से पत्रकारिता की शुरूआत करने वाले हमारे पिता जी ने **'संजीवनी बिहार'** नाम का पाक्षिक अखबार एवं **'आईना समस्तीपुर'** नाम की मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया तो हमें लगा कि यह व्यवसाय है। लेकिन, लाखों रूपये इसमें लगाने के बाद यह घाटा का सौदा साबित हुआ। उन्होंने इसे प्रकाशित करना बंद नहीं किया। एलआईसी की एजेंसी से होने वाली आमदनी को अखबार निकालने में खर्च करते हुए अपने पत्रकारिता एवं शोषण के खिलाफ अपनी लेखनी से आवाज बुलंद करने वाले हमारे पिता जी ने बाद के दिनों में आय के साधन के तौर पर एरौत गांव में ही **'संजीवनी मेमोरियल पब्लिक स्कूल'** खोल कर शिक्षा के क्षेत्र में कार्य फिर से आरम्भ किया। जबकि इन्होंने वर्षो पहले शिक्षक की सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था।

पुस्तक लिखना और पढ़ना, सांस्कृतिक आयोजन में आर्थिक रूप से बढ़ चढ़कर भागीदारी, महाकवि आरसी प्रसाद सिंह जी की जयन्ती एवं पुण्यतिथि आयोजित करना, उनकी प्रतिमा स्थापित करना, क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन, युवाओं को नाटक खेलने एवं आयोजन करने जैसे भूमिका के अलावे महायज्ञ, कीर्तन, रामायण–गोष्ठी आदि धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन करने, मंदिरों के उत्थान के लिए अपने निजी–कोष का उपयोग और अपनी जमा पूंजी का अधिकांश भाग इसमें व्यय करने को हम सभी परिवार के सदस्य फिजुलखर्ची समझते थे। लेकिन, हम सभी भाई–बहन ने उम्र बढ़ने के साथ ही यह अनुभव किया तो पिता जी के द्वारा किए गए सभी कार्य की सराहना करने को हमलोग आज बाध्य हो रहे है।

पत्रकार के रूप में निर्भिकता, लेखक के रूप में तटस्थता, शिक्षक के रूप में अनुशासनप्रियता, ग्रामीणों से आपसी वैमनश्ता के दौरान धैर्यशीलता, राजनीति में पद प्राप्ति के लिए संघर्षशीलता, संततियों के प्रति कर्तव्यपरायणता, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा एवं आस्था का भाव तो देखने को मिला था। परन्तु, उनके अन्दर एक कवि भाव भी छिपा है यह संदेहपूर्ण था। परन्तु, पिता श्री ने अपनी पहली **'काव्य–संग्रह 'अर्धांगिनीः एक काव्य यात्रा'** पाठकों के बीच

परोसा तो हमें उनकी हास्य–व्यंग्य एवं प्रेम की नायिका के रूप में हमलोगों ने अपनी मां को पाया। इसमें पति–पत्नी के सभी रिश्तों को आम जीवन की अपनी काव्य शैली में परोसकर उन्होंने साबित किया कि उनके भीतर कवि का एक रूप भी मौजूद है। पिताश्री की दूसरी काव्य संग्रह के रूप में **'रोसड़ा की संजीवनी'** नाम की यह पुस्तक का प्रकाशन होते ही दुनिया मेरे पिताश्री को पत्रकार, संपादक, लेखक के साथ –साथ कवि रूप में भी अनुभव करेगी। पूज्य पिताश्री को प्रणाम करते हुए यह **गौरव–गान** इस पुस्तक के कवि के सम्मान में प्रस्तुत करते हुए हम गौरान्वित है–

।। संजीवनी संकल्पः रोसड़ा का गौरव–गान।।

कलम हाथ में, सत्य साथ में, मन में रोसड़ा का प्यार।
लेखनी से रच रहे पिता जी, एक नया संसार।।

संजीवनी की धार बनकर, बह रही यह लेखनी।
ऐसी अनूठी, ऐसी पावन, और कहीं न देखनी।।

पत्रकारिता और संपादन,

'आईना समस्तीपुर' में झलका, जिले का स्वरूप सलोना।
'संजीवनी बिहार' ने सीखा, सच का ही बीज है बोना।।

संपादक की प्रखर दृष्टि ने, जन–जन की पीड़ा जानी।
निर्भय होकर लिखी सदा, इस माटी की गौरव कहानी।।

साहित्यिक विरासत

'आरसी स्मरणिका' के अंकों में, पूर्वज का आशीष बसा।
अंक एक और दो के भीतर, साहित्य का अनमोल रसा।।

महाकवि के शब्द–शिल्प को, घर–घर तक पहुँचाया है।
चचेरे पौत्र ने दादा **'आरसी'** का, गौरव–ध्वज फहराया है।।

राजनीतिक विश्लेषण,

'बिहार का सत्ता संग्राम' और **'रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा'**।
विश्लेषण की गहराई ने, दी वैचारिक शुचिता की मात्रा।।

सत्ता के गलियारों से लेकर, गाँवों की पगडंडी तक।
इन की आवाज गूँजती, निष्पक्षता की कसौटी तक।।

शिक्षा और भविष्य

एरौत की उस पुण्य भूमि पर, शिक्षा का मंदिर ठाना।
'संजीवनी मेमोरियल' ने, भविष्य को गढ़ना है माना।।

जहाँ उदयनाचार्य, आरसी और सुमन जी की छाया है।
उसी ज्ञान की परंपरा को, आप ने अपनाया है।।

समापन

नमन है ऐसे संपादक को, नमन है उस साहित्यकार को।
जो शब्दों से सींच रहे हैं, रोसड़ा के इस संस्कार को।।

'रोसड़ा की संजीवनी' अब, जन–जन का आधार बने।
इस माटी का गौरव–गान, विश्व का श्रृंगार बने।।

जय रोसड़ा! जय मिथिला! जय बिहार।

आपका स्नेहाकांक्षी
– सत्यम कुमार सत्यम , एमए, अंग्रेजी
– शिवम कुमार सिंह, इंटर, विज्ञान
– तन्नु प्रिया इंटर, प्रथम वर्ष
दिनांक: 30–01–2026 ई0

|| आभार ||

किसी भी कृति का सृजन मात्र एक व्यक्ति का प्रयास नहीं, बल्कि अनेक शुभ संकल्पों और आशीर्वादों का प्रतिफल होता है। **'रोसड़ा की संजीवनी'** को शब्दबद्ध करने की इस यात्रा में मुझे जिनका संबल प्राप्त हुआ, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा सौभाग्य है।

सबसे पहले, मैं अपनी माटी के महान हस्ताक्षर **महाकवि आरसी प्रसाद सिंह जी** की जन्मस्थली को नमन करता हूँ। उस पावन भूमि की आबोहवा और उनकी साहित्यिक विरासत का ही प्रभाव है, जिसने मेरे भीतर काव्य की चेतना को जीवित रखा।

मैं इस कृति को अपने पूज्य पूर्वजों और अभिभावकों के चरणों में समर्पित करता हूँ। मेरे **दादा स्व. राजेश्वर प्रसाद सिंह** एवं **दादी स्व. जानकी देवी** तथा **चचेरे दादा महाकवि आरसी प्रसाद सिंह** के संस्कारों और आशीर्वाद ने मुझे सदैव मार्ग दिखाया है। मेरे **पिता श्री शिवशंकर प्रसाद सिंह** और **माता श्रीमती रंजना देवी** के असीम स्नेह और विश्वास के बिना यह लेखन संभव नहीं था। उनकी प्रेरणा ही मेरी असली शक्ति है। रिश्ते में अग्रज भ्राता **प्रो0 सीताराम सिंह 'सरोज'** की विद्ववता से सीख के बिना यह संभव नहीं था।

साहित्यिक यात्रा के इस पड़ाव पर मुझे रोसड़ा अनुमंडल क्षेत्र के वरिष्ठ साहित्यकारों और जानकारों का जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, वह मेरे लिए अमूल्य निधि है। **'साहित्य संगम संस्था'** की मासिक काव्य संगोष्ठियों में सहभागिता और विभिन्न मंचों पर कविता पाठ एवं मंच संचालन के अनुभवों ने मेरी लेखनी को धार दी है।

एक पत्रकार के रूप में अपने कार्यक्षेत्र के दौरान मैंने जो तथ्य, खोजपूर्ण विवरण और जन–संघर्षों के अनुभव संचित किए, उन्हीं को मैंने इस पुस्तक में काव्यात्मक शैली में पिरोने का प्रयास किया है। मैं उन सभी साथियों और सहयोगियों का आभारी हूँ, जिन्होंने पत्रकारिता के सफर में इन स्मृतियों को संजोने में मेरी मदद की।

अंत में, उन सभी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष मित्रों और पाठकों का धन्यवाद, जिनका प्रोत्साहन मेरे लिए ऊर्जा का स्रोत रहा है।

सादर,

संजीव कुमार सिंह

अनुकमणिका

खंड– 1

|| श्री गणेश वंदना || 1
|| शारदा वंदना || 2
|| माँ शारदे वंदना || 3
|| रोसड़ा पर माँ की कृपा : एक वंदन || 4
|| थानेश्वरी माँः रोसड़ा की रक्षक || 5
|| रोसड़ा अनुमंडल गौरव गानम् || 6
|| श्री रोसड़ा–महिमा–वन्दनम् || 7
|| श्री रोसड़ा–शक्ति–अष्टकम् || 8
|| रोसड़ा के आंगन में नारायण || 9
|| कलम के प्रहरीः रोसड़ा का गौरव || 10
|| रोसड़ा गौरव गान || 11
|| मेरा रोसड़ाः आस्था का शिखर || 12
|| रोसड़ाः जग में महान || 13
|| गौरव–गान || 14
|| समस्तीपुर की शानः रोसड़ा अनुमंडल || 16
|| रोसड़ाः मिथिला का गौरव द्वार || 17
|| रोसड़ाः हृदय बिहार का || 18
|| नमन रोसड़ा की माटी को || 19
|| नवगीतः रोसड़ा का गौरव || 20
|| रोसड़ाः परंपरा और आस्था का संगम || 21
|| रोसड़ा अनुमंडलः प्रखंड स्थापना की यशगाथा || 22
|| प्रशासनिक शक्तिः रोसड़ा अनुमंडल || 23
|| प्रगति के पथः रोसड़ा का सड़क जाल || 24
|| हाट और बाजारः रोसड़ा की आर्थिक संजीवनी || 25
|| हुनर का सम्मान || 26
|| रोसड़ाःनदियों और रिश्तों का संगम || 27
|| न्याय–मार्तंडः उदयनाचार्य || 28
|| न्याय–रणभेरी || 29

|| मौन दर्शनः करियन की छाया में|| 30
|| एरौत की अमराईः प्रकृति के चितेरे आरसी|| 31
|| शब्द और शक्ति का संगम || 32
|| हुंकारः रोसड़ा का शौर्य–गान || 33
|| रोसड़ाः एक आध्यात्मिक अंतर्यात्रा || 35
|| रोसड़ाः काव्य की पावन स्थली || 37
|| युग–कवि आरसीः एरौत का अनमोल रतन || 38
|| रोसड़ा के तीन स्तंभः गौरव की गाथा || 39
|| रोसड़ा का विधायी इतिहासः 1952 से 2025|| 40
|| हुंकारःरोसड़ा माँगे अपना अधिकार|| 42
||रोसड़ा नगरः विकास की एक गौरवगाथा|| 43
|| रोसड़ा के सारथीः एक गौरवगाथा|| 44
||रोसड़ा का जमीनी कुरुक्षेत्र|| 46
|| अधूरा संकल्पः रोसड़ा की जिला वाली डगर|| 47
|| रोसड़ाः संघर्ष से शिखर की ओर|| 48
|| रोसड़ाः संसदीय इतिहास की महागाथा|| 50
|| विरासत की टीसः रोसड़ा लोकसभा|| 52
|| इतिहास के पन्नों सेः जब रोसड़ा आए 'देशरत्न'|| 53
|| रोसड़ा का गौरवः काष्ठ कमंडल|| 54
|| हिन्दुस्तान के गौरव|| 55
|| रोसड़ाः साहित्य का संगम स्थल|| 57
|| साहित्य की पावन धाराः साहित्य संगम|| 58
||रोसड़ाः धरती है विद्वान की|| 59
|| साहित्य की सुरभिः समय सुरभि अनंत || 64
|| साहित्य का शंखनादः साहित्य संदेश|| 65
|| युग दीपः एक आह्वान|| 66
|| संजीवनी बिहारः सच की आवाज|| 67
|| आईना समस्तीपुरः समाज का दर्पण|| 68
|| धरोहर की पुकारः कुमार संग्रहालय|| 69
|| आस्था का संगमः खैरा वाली दरगाह|| 70
|| रोसड़ा अनुमंडलः प्रखंड स्थापना की यशगाथा|| 71
|| सती माँः आस्था और विरासत || 72
||देवधाः वीरता और विश्वास की गाथा|| 73

|| हसनपुर की मिठासः एक जीवंत गौरवगाथा || 75

|| मंगलगढ़ः गौरव की गाथा|| 77

|| रोसड़ा के कलमकार|| 78

|| वारी गॉव की महिमा|| 79

|| महिमा गानः सोनूपुर की शारदे|| 80

|| मिथिला की माटी का गौरव|| 81

|| मिथिलाः समय के पदचिह्न और ज्ञान का शिखर|| 82

|| शिक्षा के दीपः रोसड़ा के गौरव|| 83

|| भीरहा की होलीः मिथिला में वृंदावन का स्वरूप|| 84

|| रोसड़ा की धरोहरः श्री गोशाला|| 85

|| रोसड़ा की संजीवनीः अनुमंडल गौरव || 87

|| उदयनाचार्य का विद्या मंदिरः गौरवशाली पूर्ण गाथा|| 88

|| मुरादपुर–हरिपुरः दिलों का सेतु|| 90

|| बैद्यनाथपुर के छह खूँटः गुलाब चौधरी वंश–गाथा|| 91

|| छोटा–सा एक गॉव मोहम्मदपुर|| 92

|| करियनः ज्ञान की शाश्वत धरोहर|| 93

|| रण–बांकुरेः जयदेव और सूर्यदेव|| 94

|| शिवाजीनगरः विकास और विरासत की गाथा|| 95

|| शिक्षा का पावन मंदिरः शिवाजीनगर|| 96

|| अड़रिये ब्राह्मणः शौर्य और संस्कार|| 97

|| गौरवगाथाः भीरहा गांव|| 98

|| युवक संघ भीरहाः सेवा का एक शतक|| 99

|| सावर्ण वंश की यश–गाथा|| 100

|| रोसड़ा का गौरवः उदयनाचार्य कॉलेज|| 101

|| हमारा गौरवः सिंघिया || 102

|| मेरा गौरवः प्यारा बिथान|| 103

|| रोसड़ा का गौरवः मुक्केबाज बेटियाँ|| 105

|| सिसोदिया शौर्यः थतिया से एरौत तक|| 106

|| महादेव मठ का कबीर गुरूद्वारा|| 108

|| गौरव.ग्रामः हमारा एरौत|| 109

|| पुरखों की थातीः नरौल मलीछाम की गूंज|| 110

|| भीरहाः शौर्य और संस्कृति का संगम|| 111

|| आस्था का कवचः एरौत के देव–स्थान|| 112

|| रहुआः दो अंचलों का मिलन द्वार|| 113
|| रोसड़ाः सियासत के शिखर और विकास की गाथा|| 114
|| रोसड़ा के विकास सारथी|| 115
|| जहांगीरपुर उत्तर का गौरव|| 116
|| पंचायतः मोतीपुर की समरसता|| 117
|| ठाहर बसढ़िया का गौरव|| 118
|| मुरादपुर की महिमा|| 119
|| संकल्प का प्रतीकः एरौत की संजीवनी|| 120
|| अगस्त क्रांति के अमर पुरोधाः रोसड़ा की हुंकार|| 121
|| 15 जनवरी 2001 ई0ः रोसड़ा का वह काला सूर्यास्त|| 122
|| बैद्यनाथपुरः शिक्षा, शौर्य और शक्ति का संगम|| 124
|| वारिसनगर की विकास गाथा|| 126
|| बहेड़ी का राजनैतिक सफर (1977–2005)|| 127
|| विभूतिपुर का जनादेश|| 129
|| सिंघियाः एक गौरवशाली अतीत की याद|| 130
|| हसनपुर की विकास यात्राः 1967 से 2025 तक|| 131
|| रुसेरा घाट स्टेशन|| 132
|| राम लखन सिंह उद्यानः रोसड़ा की पहचान|| 133
|| न्याय का मंदिर :रोसड़ा व्यवहार न्यायालय|| 134
|| रोसड़ा का सुरक्षा कवच|| 135
|| मेरे श्याम, मेरा शक्ति धाम|| 137
|| एरौत का गौरवगान|| 138
|| रोसड़ा के आंगन में सोहर|| 139

खंड– 2

|| करियन का सूर्यः गोवर्धनाचार्य|| 142
|| शास्त्र–शिखरः पंडित चित्रधर मिश्र|| 143
|| महामहोपाध्याय रामेश्वर झाः एक वंदन|| 144
|| ज्ञान के शिखरः पंडित विद्यानाथ झा|| 145
|| सुदर्शन अवतारः श्री सनकनंदन पाठक|| 146
|| पांडित्य का जीवंत प्रतीकः पंडित चंद्र शेखर मिश्र|| 147
|| रोसड़ा के ऋषिः पंडित जीवनाथ मिश्र|| 148
|| आयुर्वेद के अमर साधकः भुवनी बाबू|| 149

|| जन–सेवा का संबलः डॉ. सी.एम. झा|| 150

|| शब्द–साधना का महाप्राणः डॉ. विपिन विहारी ठाकुर || 151

|| क्रांति के अमर पुरोधाः राजेश्वर प्रसाद सिंह|| 153

|| दामोदरपुर का शेरः अमर सेनानी विश्वनाथ सिंह|| 154

|| इंकलाब का पर्यायः यदुनंदन सिंह|| 156

|| स्वतंत्रता के पुरोधाः रामनिरीक्षण सिंह|| 157

|| नयानगर का अमर सपूतः रामफल शर्मा|| 158

|| नयानगर का वह वीर सेनानीः राम कल्याण सिंह|| 159

|| स्वतंत्रता सेनानीः जगत मंडल|| 160

|| युगपुरुषः राम लखन सिंह || 161

|| अजातशत्रुः भोला मांडर || 163

|| त्याग की प्रतिमूर्ति प्रयाग बाबू|| 165

|| अमर विभूतिः दामोदर नारायण चौधरी|| 166

|| अमर पुरोधा और कलम का सिपाही|| 167

|| लोक–नायकः डिप्टी साहब|| 168

|| शिवाजी नगर के स्वप्नद्रष्टाः गजेन्द्र प्रसाद सिंह || 169

|| बल्लीपुर का एक अमर सेनानी गंगेश नारायण|| 171

|| बैद्यनाथपुर के सत्येन्द्र नारायण चौधरी|| 172

|| रोसड़ा में सत्यपाल सिंह || 173

|| विद्वत्ता का सूर्यः डॉ. देवनारायण यादव|| 174

|| सारस्वत साधकः डॉ. केदार नाथ 'लाभ'|| 175

|| साहित्य के साधकः डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'|| 176

|| साधना का शिखरः डॉ. मेघन प्रसाद|| 177

|| साहित्य की साधिकाः सुशीला झा|| 178

|| मिथिला की ज्योतिः शकुंतला चौधरी|| 179

|| साहित्य के अनन्य साधकः सत्य नारायण झा|| 181

|| श्रद्धा के सुमनः महंत रामचंद्र दास|| 182

|| शब्द–शिल्पी आचार्य राम जपी शर्मा || 183

|| भीरहा का गौरवः प्रो फूलेन्द्र राय|| 184

|| माटी का लालःसहदेव महतो|| 185

|| जन–नायकःश्री बंधु महतो|| 186

|| जन–नायकः गंगा प्रसाद|| 187

|| विभूतिपुर का प्रथम स्वरः परमानन्द सिंह मदन|| 188

|| विभूतिपुर का 'लौहपुरुष': चन्द्रबली ठाकुर || 189
|| विभूतिपुर का अमर सेनानीः श्री रामदेव वर्मा|| 190
|| जनसेवकः श्री मुसाय नायक|| 191
|| जननायकः गजेन्द्र प्रसाद हिमांशु|| 192
|| श्यामा कुमारीः संघर्ष की एक प्रतिध्वनि|| 193
|| सिंघिया के जननायकः श्री राम जतन पासवान|| 194
|| लोकप्रिय जननायकः श्री रामाश्रय राय|| 195
|| लोकतंत्र के सेनानीः श्री रमाकांत झा|| 196
|| जनसेवा के पावन स्वरः श्री महावीर राउत|| 197
|| जननायकः श्री बालेश्वर राम|| 198
|| कुल का गौरवः महेश्वर प्रसाद सिंह|| 199
|| वीरः श्री ठक्कन चौधरी|| 200
|| रमौल का अमर स्वाभिमानः महावीर मंडल|| 201
|| भीरहा का फतह नारायण रायः एक अमर सेनानी|| 202
|| कलम की शहादतः पत्रकार विकास रंजन|| 203
|| कलम का सिपाहीः रेवती कांत पाठक|| 204
|| मिथिला का गौरवः बासुकीनाथ|| 205
|| गीतों का मछेराः बुद्धिनाथ मिश्र|| 206
|| राष्ट्र–साधकः डॉ० राम विलास राय|| 207
|| साधना का शिखरः प्रो. शिवशंकर प्रसाद सिंह|| 208
|| साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्रः डॉ. परमानंद मिश्र|| 209
|| साधना का शिखरः रमाकांत 'रमा'|| 210
|| काव्य–साधना का 'दिवाकर' || 211
|| अधिवक्ता की गजलः रोसड़ा का गौरव|| 212
|| साहित्य के साधकः डॉ. तृप्ति नारायण झा|| 214
|| साहित्य सारथीः श्री राम स्वरूप सहनी 'रोसड़ाई'|| 215
|| जीवन की अनकही राहें|| 216
|| न्याय के पथ परः चित्तरंजन प्रसाद सिंह|| 217
|| व्यक्तित्व का आलोकः तेज नारायण सिंह 'तपन'|| 218
|| काव्य–साधना का शिखरः विजय व्रत कंठ|| 219
|| साहित्य साधक : डॉ. प्रवीण कुमार प्रभंजन|| 220
|| मिथिला का गौरवः सरोज कुमार झा|| 222
|| साहित्य के 'बालक': राम बालक सिंह|| 223

|| साहित्य के पथिकः वाचस्पति सौरभ || 224

|| विरासत के संवाहकः डॉ. विजय कुमार चौधरी || 225

|| साहित्य के साधकः डॉ. प्रभात कुमार || 226

|| साधना का शिखरः नरेंद्र कुमार सिंह || 227

|| माटी का गौरवः अनुकूल रॉय || 228

|| सुरों का साधकः अर्जुन कुमार चौधरी || 230

|| साहित्य का युवा साधकः जगमोहन चौधरी || 231

|| नयानगर का नक्षत्रः राहुल कुमार भारद्वाज || 232

|| विरासत और विकासः श्री अशोक कुमार 'मुन्ना' || 233

|| सफर सेवा काः सिद्धांतों की नई किरण || 234

|| कर्मयोगी कलमकारः ललित कुमार || 235

|| कलम का मुसाफिरः त्रिपुरारि || 236

|| ब्रह्मेन्द्र झाः शब्द और साधना का संगम || 237

|| कुल का गौरवः डॉ. महेश कुमार || 238

|| शौर्य और शास्त्र का संगमः बिहार || 239

|| रोसड़ा के पथ परःबटगामनी || 240

विनय–निवेदन 242

पाठकीय निवेदन 243

|| संजीव की लेखनीःगद्य एवं हास्य–व्यंग्य से महाकाव्य तक || 244

उपसंहारः 245

खंड– 1

।। श्री गणेश वंदना ।।

नमन हो तुमको गजानन, तुम ही आदि आधार हो।
रोसड़ा की पावन धरा पर, सुख–शांति का विस्तार हो। 1।

लेखनी में धार देना, शब्दों में विश्वास हो।
'संजीवनी' की हर कथा में, सत्य का अहसास हो। 2।

प्रथम निमंत्रण आपको, हे विघ्नहर्ता देव तुम।
मिटा दो संशय हृदय के, मार्गदर्शक देव तुम। 3।

सिद्धि–बुद्धि के विनायक, रिद्धि–सिद्धि के साथ आओ।
लोक–मंगल की इस पुस्तक में, ज्ञान का दीप जलाओ। 4।

लम्बोदर सुत ईश के, मूषक तुम्हारी सवारी है।
तुम्हारी कृपा से ही सजती, अभिव्यक्ति हमारी है। 5।

पत्रकारिता के इस सफर में, संबल बनकर रहना तुम।
कल्याणकारी **'संजीवनी'** की, शक्ति बनकर रहना तुम। 6।

नमन हो तुमको गजानन, तुम ही आदि आधार हो।
रोसड़ा की पावन धरा पर, सुख–शांति का विस्तार हो। 7।

|| शारदा वंदना ||

हे वीणा–वादिनी भवानी, दे दो ऐसा वरदान।
रोसड़ा की पावन माटी का, लिखूँ गौरव–गान। 1।

छह प्रखंडों की क्यारी में, उपजे शब्द–अनूप।
मठ–मंदिर और नदियाँ गाएँ, तेरा पावन रूप। 2।

राजनीति की मर्यादा हो, संस्कृति का हो मेल।
चिंतन में शुचिता आए माँ, सुखद हो समय का खेल। 3।

धार्मिक निष्ठा की धारा से, सींचो जन का मन।
ज्ञान से हो आलोकित, पावन धरती का कण–कण। 4।

लेखन में **संजीवनी** भर दो, हे मैया जगदंब।
तेरी कृपा ही इस पुस्तक का, बने मुख्य अवलंब। 5।

खेल जगत और गलियों में भी, गूँजे तेरा राग।
ज्ञान–रश्मि से मिटे अंधेरा, जगे देश का भाग्य। 6।

हे वीणा–वादिनी भवानी, दे दो ऐसा वरदान।
रोसड़ा की पावन माटी का, लिखूँ गौरव–गान। 7।

।। माँ शारदे वंदना ।।

हे वीणावादिनी, ज्ञानदायिनी, सुमिरूँ तोहे बारंबार।
रोसड़ा की पावन माटी में, भर दो अपनी करुणा अपार। 1।

छह प्रखंडों की सुरभित बगिया, शब्द–पुष्प से महक उठे।
लेखनी मेरी सत्य कहे माँ, जन–जन का सोया भाग्य जगे। 2।

बुढ़ी गंडक की लहरों में, माँ स्वर का ऐसा राग भरो।
मठ–मंदिर और देवालय में, सात्विक भाव का वास करो। 3।

सड़क, पुल और खेल के, मैदानों का नव–निर्माण दिखे।
काव्य सृजन के दर्पण में, सुंदर **अनुमंडल** का रूप खिले। 4।

राजनीति की मर्यादा हो, संस्कृति का सम्मान रहे।
सामाजिक चिंतन की धारा में, समरसता का ज्ञान बहे। 5।

धार्मिक निष्ठा बनी रहे माँ, अंतर्मन उजियार करो।
संजीव की इस छोटी भेंट को, माता तुम स्वीकार करो। 6।

हृदय कुंज में वास करो माँ, जननी तुम आधार हो।
मेरी **चौथी** पुस्तक की, तुम ही तारणहार हो। 7।

हे वीणावादिनी, ज्ञानदायिनी, सुमिरूँ तोहे बारंबार।
रोसड़ा की पावन माटी में, भर दो अपनी करुणा अपार। 8।

।। रोसड़ा पर माँ की कृपा : एक वंदन ।।

समस्तीपुर जिले की शान है, दरभंगा कमिश्नरी का मान है।
बिहार का स्वाभिमान है अपना, हिन्दुस्तान का सम्मान है। 1।

इसी मिट्टी के कण–कण में, माँ दुर्गा का दिव्य विधान है।
रोसड़ा के हर आंगन में, बसता भक्ति का वरदान है। 2।

बड़ी मैया की कृपा बरसे, गूंजे जय–जयकार यहाँ।
छोटी मैया का आशीष मिले, मिट जाए अंधकार यहाँ। 3।

लक्ष्मीपुर की मैया सबकी, खुशियों से झोली भरती है।
ममता की शीतल छाया से, माँ संकट सारे हरती है। 4।

रजिस्ट्री ऑफिस वाली माँ का, दरबार बड़ा ही न्यारा है।
उनका पावन दर्शन ही, हम भक्तों का सहारा है। 5।

शहर हो या गांव अपना, हर जगह बस माँ का वास रहे।
रोसड़ा के हर जन–मानस में, जगदम्बा का विश्वास रहे। 6।

सप्तश्लोकी के मंत्रों से, गूंजता सारा आसमान है।
शक्ति की इस आराधना से, बढ़ता रोसड़ा का मान है। 7।

संजीव की कलम करे वंदन, माँ सदा सहाय हों आप।
समृद्धि आए घर–घर में, मिटें सभी क्लेश और पाप। 8।

।। थानेश्वरी माँः रोसड़ा की रक्षक ।।

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते। 1।

थाना परिसर के आँगन में, माँ थानेश्वरी विराजी हैं।
रोसड़ा की रक्षा की खातिर, शक्ति यहाँ पर साजी है। 2।

सप्तश्लोकी का सार यहाँ, साक्षात नजर है आता।
भक्तों के संकट हरने को, माँ से जुड़ा है नाता। 3।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम... मंत्र यहाँ सच होता है।
जो भी आता द्वार आपके, वह न कभी फिर रोता है। 4।

एक हाथ में न्याय की शक्ति, एक हाथ वरदान रहे।
थानेश्वरी की छाया में, सुरक्षित हर इंसान रहे। 5।

वर्दी की निष्ठा के संग, भक्ति की अविरल धारा है।
रोसड़ा के कोने–कोने में, माँ का ही जयकारा है। 6।

प्रशासन और आस्था का, यह मिलन बड़ा ही पावन है।
थानेश्वरी के चरणों में, झुकता सबका जीवन है। 7।

।। रोसड़ा अनुमंडल गौरव गानम् ।।

सदा नमामि रोसड़ा नगरं, व्यापार–केन्द्रं सुशोभितम्।
बूढ़ी गंडक पावन तटे, जन–जन मानस मोदितम्।। 1।।

उदयनाचार्य न्याय–तर्कैः, भूमिरेषा अलंकृता।
सुमन काव्य–सुगंधि युक्ता, विप्र–विद्वज्जन पूजिता।। 2।।

आरसी महाकवि–प्रभाभासा, साहित्य–गगन विकासिता।
विभूतिपुरं कर्म–भूमि, ज्ञान–ज्योति प्रकाशिता।। 3।।

हसनपुरं इक्षु–क्षेत्रं, चीनी–मिल–प्रभा मण्डितम्।
श्रम–साधना तत्र विराजते, कृषक–भाग्य वर्द्धितम् ।। 4।।

सिंघिया च विभाति नित्यं, कृषि–सम्पदा पूरितम्।
धान्य–पूर्णा धरा अत्र, सुजलां सुफलां शोभितम्।। 5।।

बिथानं च जल–मग्नं, मत्स्य–वैभव विलासिनम्।
प्राकृतिक–वरदान युक्तं, जीवन–धारा रञ्जितम्।। 6।।

शिवाजीनगर पुण्य भूमि, अध्यात्म–ज्ञान विकासिनम्।
भक्ति–धारा प्रवहति नित्यं, शांति–सुख–सुवासितम्।। 7।।

सर्वे प्रखण्डाः सम्मिलिताः, रोसड़ा–गौरव वर्द्धकाः।
संजीव–लेखनी धन्या, गौरव–गाथा गायकाः।। 8।।

।। श्री रोसड़ा–महिमा–वन्दनम् ।।

मिथिला विभूति मण्डितं, सदैव शौर्य शोभितं।
बुढ़ी–गण्डकी तट विलासितं, नवीन कान्ति भास्वरम्। 1।

कृषि–व्यापार गौरवम्, सुबुद्धि ज्ञान वर्धनं।
नमामि रोसड़ा पुरं, विकास मार्ग तत्परम्। 2।

अनेक देव मन्दिरं, पवित्र भक्ति सागरं।
हनुमन्–कृपा–प्रदीपितं, सुधर्म–कर्म–रञ्जकम्। 3।

उदार लोक जीवनं, सुसंस्कृति सुभास्वरं।
श्रयेऽहं रोसड़ा विभुं, समृद्धि सिद्धि दायकम्। 4।

प्राचीन–हाट–शोभितं, सुवर्ण–मण्डि–राजितं।
वाणिज्य–शक्ति–केन्द्रकं, दरिद्र–दुःख–भञ्जकम्। 5।

रेल–यान–गामिनं, सुदूर–देश–सम्पर्कं।
भजामि रोसड़ा–धराम्, सदैव अन्न–पूरितम्। 6।

साहित्य–कला–मण्डितं, मनीषी–कवि–चिन्तितं।
विद्या–दान–दीक्षितं, सुशिष्य–ज्ञान–साधकम्। 7।

आतिथ्य–देव–पूजनं, समरसता–प्रवाहकं।
नमामि मातृ–भूतलं, सुधी–जनैः सुसेवितम्। 8।

अनुमण्डल–प्रशासकं, न्याय–नीति–रक्षकं।
शांति–अमन–दायकं, सुशासनैः समन्वितम्। 9।

अतुल्य–प्रेम–बन्धनं, मिथिला–मान–वर्धनं।
जयतु रोसड़ा–पुरं, सकल–मङ्गल–दायकम्। 10।

।। श्री रोसड़ा–शक्ति–अष्टकम् ।।

गण्डकी–प्रवाह–वेग, वेग–पूर्ण–धावितं।।
तटस्थ–रोसड़ा–पुरं, अखंड–शक्ति–मण्डितम्।।

स्वर्ण–अन्न–हाट–भाट, वाणिज्य–शक्ति–गर्जितं।।
नमामि मातृ–भूतलं, विकास–दक्ष–वर्धितम्।। 1।।

रेल–यान–घोष–नाद, दिक–दिगन्त–पूरितं।।
विशाल–व्यापार–तंत्र, शत्रु–बुद्धि–चूरितम्।।

युवा–शौर्य–हुंकार–भर, कर्म–धर्म–तत्परं।।
नमामि रोसड़ा–पुरं, सदैव–विजय–तत्परम्।। 2।।

हनुमन्त–भीम–शक्ति, भक्ति–भाव–उज्ज्वलं।।
मनीषि–ज्ञान–साहित्य, कला–कुञ्ज–मंगलम।।

अतिथि–सत्कार–व्रतं, समरसता–प्रवाहकं।।।
नमामि रोसड़ा–पुरं, समस्त–विघ्न–नाशकम्।। 3।।

अनुमण्डल–प्रशासकं, न्याय–दण्ड–धारितं।।
मिथिला–भाल–तिलकं, शौर्य–गाथा–पूरितम्।।

अटल–अजेय–अक्षुण्ण, मान–शान–वृद्धितं।।
जयतु–जयतु–रोसड़ा, विश्व–पटल–चिह्नितम्।। 4।।

।। रोसड़ा के आंगन में नारायण ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं, गण्डक तट का पावन वास।।
देवधा की इस पुण्य भूमि में, होता प्रभु का सुखद आभास।।

पद्‌मनाभं सुरेशं, जहाँ शिव–हरि का अनुपम मेल।।
श्रद्धा की सरिता बहती यहाँ, मिटते सारे माया–खेल।।

विश्वाधारं गगनसदृशं, रोसड़ा का विस्तृत है व्यापार।।
सत्यनारायण की कथा यहाँ, करती सबका बेड़ा पार।।

मेघवर्णं शुभाङ्गं, खेतों में झूमती हरियाली।।
जैसे लक्ष्मीपति विष्णु ने, खुद भरी हो सबकी झोली खाली।।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, देवकुण्ड का जल है पावन।।
भक्तों के मन को मोह लेता, यहाँ का आध्यात्मिक सावन।।

विद्यामयं सुखकरं प्रभु, ज्ञान की जहाँ ज्योति जली।।
रोसड़ा की शिक्षा–दीक्षा से, जीवन की हर राह चली।।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम्।।
समस्तीपुर की इस नगरी पर, रहे सदा हरि का हाथम्।।

जहाँ भक्ति में शक्ति बसती, और कर्म ही पूजा महान।।
वही है अपना प्यारा रोसड़ा, प्रभु विष्णु का वरदान।।

।। कलम के प्रहरीः रोसड़ा का गौरव ।।

उदयन के तर्क की शक्ति, सुमन की गूँजती वाणी।।
आरसी के गीतों में सिमटी, इस माटी की कहानी।।

बासुकीनाथ का चिंतन गहरा, बुद्धिनाथ के छंद निराले।।
साहित्य के इन दीपों ने, यहाँ स्वर्ण–युग हैं पाले।।

इसी कड़ी में सजग प्रहरी, एक नाम उभर कर आता।।
संजीव कुमार सिंह पत्रकार, जो सच से नाता जोड़ता।।

लेखन में जिनके पैनापन, और वाणी में है धार।।
जन–गण की जो पीड़ा समझे, वह पत्रकारिता का सार।।

नहीं झुके जो सत्ता आगे, न डिगे जो मुश्किल राहों में।।
रोसड़ा की हर खबर बसी है, जिनकी अपनी बाँहों में।।

साहित्यकारों की इस धरती का, मान बढ़ाते **संजीव** यहाँ।।
कलम की ताकत से लिखते, न्याय और सत्य की नई दास्ताँ।।

धन्य है यह रोसड़ा मंडल, जहाँ मेधा की बहुतायत है।।
कहीं काव्य की मधुर तान, तो कहीं पत्रकारिता की **'आयत'** है।।

।। रोसड़ा गौरव गान ।।

हे रोसड़ा निराले, तू शान इस नगर की।
पावन धरा है अपनी, पहचान इस डगर की। 1।

गंडक की धार सुंदर, कल–कल जहाँ सुनाती।
उर्वर धरा ये अपनी, सोना सदा उगाती। 2।

व्यापार की ये नगरी, वैभव यहाँ बरसता।
मेहनत की गूँज सुनके, हर विघ्न यहाँ थमता। 3।

प्राचीन काल से ही, तेरा रहा ठिकाना।
इतिहास के पन्नों में, है नाम ये पुराना। 4।

सद्भाव की ये धरती, भाईचारा सिखाती।
संस्कार की सुगंधित, खुशबू यहाँ महकती। 5।

शिक्षा की ज्योति चमके, हर ओर हो उजियारा।
विकसित बने ये अंचल, सबसे ही प्यारा–प्यारा। 6।

संजीव भाव जाग्रत, जन–जन में आज कर दे।
उन्नति की नई उमंगें, हर एक हृदय में भर दे। 7।

पुण्यमयी ये रोसड़ा, मिथिला का श्रृंगार।
प्रगति पथ पर अग्रसर, महके सदा अपार। 8।

।। मेरा रोसड़ाः आस्था का शिखर ।।

गंडक की इन लहरों में, सदियों का इतिहास बहता है।
मंदिरों के ऊँचे शिखरों में, यहाँ देवत्व रहता है। 1।

जहाँ चितर पंजियार की महिमा, और गंडकी नाथ का द्वार है।
वह शहर नहीं, मेरी रगों में बसता, संस्कृति का सार है। 2।

कही गूँजती है महादेव मठ में, सोमेश्वर की पावन वाणी।
सोनामाई और बड़ी दुर्गा माँ, दिखतीं जन–जन की कल्याणी। 3।

भरत दास की कुटिया से, कबीर मठ के उपदेशों तक।
आस्था की ज्योति जलती है यहाँ, सदियों से अवशेषों तक। 4।

नंदचौक पर कृष्ण कन्हैया की, सजती अद्भुत झाँकी है।
डाक–बंगला में माँ शारदे की, पावन छवि अभी बाकी है। 5।

थानेश्वरी की चौखट हो या, बाबा खास का वह मजार।
मजहब बाद में आता है यहाँ, पहले है इंसानी प्यार। 6।

दर्जन भर इन देव स्थलों की, पावन यह परिपाटी है।
मंदिरों का शहर कहलाता, यह रोसड़ा की माटी है। 7।

कलम उठा जब लिखता हूँ मैं, गौरव का यह गान सखे।
यही मेरी पहचान अमिट है, यही मेरा अभिमान सखे। 8।

।। रोसड़ाः जग में महान ।।

गंडक की धार बहे, पावन पुकार रहे।
मंदिरों का शहर यह, जग में महान है। 1।

चितर पंजियार विराजे, गंडकी नाथ साजे।
सोमेश्वर महादेव, शिव का वरदान है। 2।

बड़ी–छोटी दुर्गा माई, सोनामाई ज्योति आई।
भरत दास, कबीर मठ, ज्ञान की यह खान है। 3।

बाबा खास की मजार, अमन का है द्वार यहाँ।
नंदचौक पर कृष्ण सखा, गौरव की शान है। 4।

थानेश्वरी माई द्वार, सुख का अपार सार।
हनुमत लला का यहाँ, गूंजता वितान है। 5।

लिखे जब कलम '**संजीव**', सत्य की मशाल लिए।
रोसड़ा की माटी प्रभु, स्वर्ग के समान है। 6।

आस्था की ईंटों से यहाँ, विश्वास का प्राचीर है।
बहती जहाँ प्रेम की, गंडक जैसी नीर है। 7।

मंदिरों के इस शहर में, जो भी शीश झुकाता है।
बदलती उसके जीवन की, स्वयं ही तकदीर है। 8।

।। गौरव–गान ।।

नमन उस पुण्य भूमि को, जहाँ मिथिला का मान है।।
बूढ़ी गंडक की लहरों में, जिसका गौरव गान है।।

उत्तर बिहार का ह्रदय कहाती, व्यापारों की रानी है।।
रोसड़ा की मिट्टी में लिपटी, शौर्य और विद्वानी है।।

न्याय के पुरोधाः उदयनाचार्य

जहाँ तर्क की कसौटी पर, ईश्वर को भी तोला था।।
न्याय शास्त्र का गुप्त मंत्र, जिस मिट्टी ने ही खोला था।।

उदयनाचार्य के ज्ञान–तेज से, यह भू पावन–पावन है।।
उनका दर्शन आज भी करता, संशयों का शमन है।।

उस आदि दार्शनिक की मेधा को, यह जग शीश नवाता है।।
रोसड़ा का कण–कण उनके, पद–चिह्नों को गाता है।।

जीवन के कविः आरसी प्रसाद सिंह,

चलो एरौत की उस गलियारे, जहाँ **'आरसी'** की वाणी है।।
दामोदर का वंशज वह, गुलाब की प्रेम–कहानी है।।

'जीवन और जवानी' के, जो महाप्राण कहलाते है।।
जिनके छंदों में बिहार के, स्वप्न मुस्कुराते है।।

उन्नीस अगस्त का वह सूरज, साहित्य गगन का तारा था।।
वह महाकवि हमारे, स्वाभिमान का जीवंत गौरव था।।

मैथिली के संरक्षकः आचार्य 'सुमन',

बल्लीपुर की सुवासित माटी, **'सुमन'** जहाँ मुस्काते हैं।।
मैथिली के अक्षरों में, जो प्राण फूँक कर जाते हैं।।

आचार्य सुरेन्द्र झा की लेखनी, संस्कृति की ढाल रही।।
उनके ही पुरुषार्थ से, मिथिला की भाषा निहाल रही।।

राजनीति के मंचों पर भी, जो साहित्य की शान रहे।।
रोसड़ा के वे रत्न सदा, भारत माँ का अभिमान रहे।।

आस्था और समापन

जहाँ बाबा सोमेश्वर का, पावन मंगल दरबार है।।
जहाँ पुरानी बाजार का, बढ़ता अपरंपार व्यापार है।।

साहित्य, तर्क और भक्ति का, यह संगम सबसे प्यारा है।।
भारत के मानचित्र पर, चमचमाता यह सितारा है।।

नमन है इस जननी को, नमन यहाँ के वीरों को।।
जो अपनी कलम और कर्म से, बदलें काल की लकीरों को।।

जय रोसड़ा! जय मिथिला! जय बिहार!!

।। समस्तीपुर की शानः रोसड़ा अनुमंडल ।।

समस्तीपुर की बगिया में, एक डाल निराली है।।
रोसड़ा अनुमंडल की यहाँ, छटा बड़ी मतवाली है।।

मुख्य शाखा बनकर खड़ा, यह गौरव का प्रतिमान।।
छह पत्तों से सज रहा, इसका अपना आसमान।1।

शिवाजीनगर की माटी बोले, अपना स्वाभिमान।।
विभूतिपुर की धरती पर, गूँजे वीर बखान।।

बिथान की जलधारा में, बसती है हरियाली।।
सिंघिया के आँगन में, छाई है खुशहाली।2।

हसनपुर की चीनी मिल, मीठा रस घोलती।।
रोसड़ा की व्यापारिक साख, जग में है बोलती।।

छह प्रखंड ये छह पत्ते, एक ही डाल का प्यार।।
सभ्यता और संस्कृति का, यह सुंदर संसार।3।

अनुमंडल की शाखा ये, बड़ी मजबूत प्रधान।।
समस्तीपुर के गौरव में, जोड़ रही नया मान।।

'संजीव' की कलम लिखे, जन–जन की यह बात।।
रोसड़ा के इन पत्तों में, छिपी है नई प्रभात।4।

।। रोसड़ाः मिथिला का गौरव द्वार ।।

सुनो सुनाता हूँ गाथा मैं, रोसड़ा की पहचान की।
स्थापना की उस तिथि और, माटी की मुस्कान की। 1।

एक दिसंबर सन् छिहत्तर (1976) को, नव सूर्य यहाँ मुस्काया था।
अनुमंडल की इस धरती ने, नया मान तब पाया था। 2।

प्रथम सारथी बनकर आए, शांति सदन शर्मा श्रीमान।
कलम की ताकत से जिन्होंने, गढ़ दिया नया विधान। 3।

उत्तर में कुशेश्वर–बहेड़ी, दरभंगा का साया है।
दक्षिण में खोदावंदपुर, बेगूसराय को लाया है। 4।

पूरब में अलौली खड़ा है, खगड़िया की शान लिए।
पश्चिम में दलसिंहसराय, समस्तीपुर का मान लिए। 5।

हसनपुर की चीनी मिल की, महक यहाँ की सांसों में।
उद्यम और मिठास घुली है, किसानों की बातों में। 6।

करेह, बागमती और कमला, जल की धारा लाती हैं।
बूढ़ी गंडक की लहरें, पावन लोरी सुनाती हैं। 7।

नरहन और मन्दाडीह की, धरती बड़ी पुरानी है।
विभूतिपुर के कण–कण में, गौरवमयी कहानी है। 8।

कबीर मठ का ज्ञान यहाँ, बाबा खास का पावन द्वार।
चितर पंजियार और सोमेश्वर, करते सबका बेड़ा पार। 9।

शिवाजी नगर की पावन रज में, उदयनाचार्य का वास है।
इतिहास और अध्यात्म का, रोसड़ा में संगम खास है। 10।

मैं **संजीव कुमार सिंह**, अपनी लेखनी से नमन करूँ।
इस मिट्टी की खुशबू को, अपनी सांसों में जतन करूँ। 11।

।। रोसड़ाः हृदय बिहार का ।।

बूढ़ी गंडक की लहरों में, सदियों का इतिहास ढला।
रोसड़ा के इस आँगन में, व्यापार और विश्वास पला। 1।

नगर परिषद की धड़कन में, सतरंगी विस्तार यहाँ।
रेल की पटरियों ने जोड़ा, सपनों का संसार यहाँ। 2।

रूसेरा घाट पे रुकती गाड़ी, प्रगति का संदेश सुनाती।
उदयनाचार्य कालेज की मेधा, जग में है अलख जगाती। 3।

अम्बेडकर चौक पे समता का, संकल्प अडिग दिखलाता है।
नंदचौक और प्रभु ठाकुर मुहल्ला, अपनापन महकाता है। 4।

बड़ी दुर्गा और छोटी दुर्गा, शक्ति की वरदान यहाँ।
चितर पंजियार मंदिर और, सोमेश्वर का ध्यान यहाँ। 5।

कबीर मठ की शांति, महावीर स्थान का तेज प्रखर।
महादेव मठ की छाया में, निखरा रोसड़ा का यह नगर। 6।

पुरानी चौक की हलचल और गांधी चौक की वह सादगी।
अनुमंडल रोड पे चलती, इस शहर की पावन जिन्दगी। 7।

उपकारा और डाक–बंगला, प्रशासनिक पहचान यहाँ।
दुग्ध शीतक केन्द्र बना, श्वेत क्रांति की जान यहाँ । 8।

सिनेमा चौक, पंचवटी और भीरहा रोड की शान निराली।
शारदानगर के आँगन में, बसती सुख की नई दिवाली। 9।

ब्लाक रोड और बाबा स्थान, श्रद्धा का अटूट विश्वास है।
पर अब इस जन–जन के मन में, एक बड़ी ही प्यास है। 10।

उठ रही है अब एक हुंकार, जिसे **'संजीव'** ने स्वर दिया।
रोसड़ा को जिला बनाओ, जन–जन ने यह प्रण लिया। 11।

नक्शा बदले, भाग्य बदले, यह माँग पुरानी है।
रोसड़ा के इस स्वाभिमान की, अब नई कहानी है। 12।

।। नमन रोसड़ा की माटी को ।।

बूढ़ी गंडक की लहरों में, जिसका गौरव पल रहा।
मिथिला की इस पावन भू पर, प्रेम का दीपक जल रहा। 1।

उत्तर बिहार का गौरव है, व्यापार की यह शान है।
रोसड़ा की मिट्टी में बसी, मानवता ही पहचान है। 2।

जहाँ गूँजती मधुर मैथिली, मीठी जिसकी बोली है।
सावन की यहाँ हरियाली, और फागुन की रंगोली है। 3।

परिश्रम की है राह यहाँ, और सपनों का आकाश है।
शिक्षण और संस्कारों का, फैला यहाँ प्रकाश है। 4।

कभी मंडी की हलचल में, कभी खेतों की हरियाली में।
खुशहाली की चमक दिखती, हर घर की थाली में। 5।

नमन है इस पावन पथ को, नमन यहाँ के वीरों को।
जो अपनी मेहनत से बदलें, समय की हर लकीरों को। 6।

ऐ मेरी भूमि रोसड़ा! तुझे शीश हम नवाते हैं।
तेरी ही मिट्टी की खुशबू, अपने गीतों में गाते है। 7।

।। नवगीतः रोसड़ा का गौरव ।।

धन्य–धान्य से पूर्ण धरा यह, रोसड़ा धाम हमारा।
चरण पखारे गंडक जिसके, यह प्राणों से प्यारा। 1।

आमों के झुरमुट में कोयल, कुहू–कुहू स्वर गाती।
कण–कण में है लक्ष्मी बसती, घर–घर खुशियाँ आती। 2।

कला–काव्य की अद्‌भुत थाती, जग में नाम कमाया।
मिट्टी की सोंधी खुशबू ने, सबको गले लगाया। 3।

मंदिर–मस्जिद और शिवालय, प्रेम–भाव का संगम।
तपसी बाबा की शांति में, गूँज रहा है सरगम। 4।

गंडकी नाथ और पवन सुत, सबकी व्याधि मिटाते।
सत्यनाम का नारा देकर, कबीर हमें जगाते। 5।

उदयन की यह पावन भूमि, संतों का यह डेरा।
कुला–नन्द की कुर्बानी ने, दिया नया एक सवेरा। 5।

आरसी–सुमन की जन्म–भूमि यह, प्रभु का लीला–धाम।
शत–शत वंदन इस मिट्टी को, मेरा बारम्बार प्रणाम। 6।

।। रोसड़ाः परंपरा और आस्था का संगम ।।

जहाँ बाबा सोमेश्वर विराजते, शिव की असीम कृपा है।
श्रद्धा और विश्वास की यहाँ, बहती निर्मल धारा है।।

मंदिर की उन घंटियों में, गूँजता हर–हर महादेव।
भक्तों के संकट हर लेते, शिव शंभू देवों के देव।।

पुरानी बाजार की गलियाँ, जहाँ रौनक कभी न सोती है।
व्यापारियों की मेहनत यहाँ, माटी को करती मोती है।।

सिनेमा चौक से गुमती तक, यादों का एक मेला है।
रोसड़ा का हर बाशिंदा, अपने–आप में अकेला है।।

बूढ़ी गंडक का वह घाट, जहाँ ढलता सूरज सोना है।
छठ की पावन अर्घ्य यहाँ, भक्ति का कोना–कोना है।।

लक्ष्मी की कृपा बरसती, मेहनत का जहाँ सम्मान है।
इतिहास के पन्नों में दर्ज, रोसड़ा का ऊँचा नाम है।।

।। रोसड़ा अनुमंडलः प्रखंड स्थापना की यशगाथा ।।

प्रथम अक्टूबर अट्ठावन को, रोसड़ा का उदय हुआ।
प्रशासनिक गलियारों में तब, नया सवेरा हृदय हुआ।।

उसी वर्ष अगस्त पहली को, सिंघिया ने आकार लिया।
विकास की इस नई डगर पर, अपना सब आधार लिया।।

तिथि पहली अप्रैल और साल उन्नीस सौ उनसठ (1959) था।
हसनपुर का जन्म हुआ, वह पल गौरव का उत्कर्ष था।।

विभूतिपुर की स्थापना का, अक्टूबर साठ (1960) है साल।
सांस्कृतिक थाती समेटे, यह प्रखंड है बेमिसाल।।

समय चक्र आगे बढ़ा और आया तेईस फरवरी तिरानवे (1993)।
बिथान बना प्रखंड नया, जन–जन के मन में हर्ष हुए।।

उसी वर्ष अगस्त सात को, शिवाजीनगर का हुआ सृजन।
छह रत्नों से सज गया देखो, रोसड़ा का यह पावन आँगन।।

छह प्रखंड यह शान हमारी, रोसड़ा अनुमंडल का मान है।
कलमकार '**संजीव**' की दृष्टि में, यह गौरवमयी पहचान है।।

लिखता हूँ इतिहास क्षेत्र का, पत्रकारिता की धार से।
जुड़ा हुआ है जन–जन हमसे, निष्पक्ष और सच्चे प्यार से।।

।। प्रशासनिक शक्तिः रोसड़ा अनुमंडल ।।

रोसड़ा अनुमंडल की महिमा, शासन का आधार यहाँ।
छह प्रखंडों की ताकत से, सजता यह संसार यहाँ।।

संजीवनी की कलम लिख रही, प्रशासनिक विस्तार को।
नमन करें हम रोसड़ा के, इस गरिमामयी आकार को।।

शिवाजीनगर, विभूतिपुर, और हसनपुर की शान।
बिथान, सिंघिया, रोसड़ा है, इस धरती की जान।।

छह प्रखंड और छह अंचल में, बँटा हुआ है काम यहाँ।
जन–जन की सेवा ही बस, प्रशासनिक पैगाम यहाँ।।

न्याय का पावन मंदिर देखो, व्यवहार न्यायालय है खड़ा।
सत्य की जीत जहाँ होती, कानून जहाँ सबसे है बड़ा।।

अनुमंडल पुलिस कार्यालय, सुरक्षा का विश्वास है।
उपकारा की चारदीवारी, अनुशासन का आभास है।।

हथौड़ी से लरझा घाट तक, थानों का पहरा भारी।
सिंघिया, बिथान, हसनपुर में, सजग पुलिस की है वारी।।

विभूतिपुर और शिवाजीनगर, शांति का पथ चुनते हैं।
रोसड़ा की गलियों में प्रहरी, सुरक्षा–ताना बुनते हैं।।

नगर परिषद रोसड़ा चमके, सिंघिया नगर पंचायत है।
विकास की इस गंगा में, जन–गण की ही हिमायत है।।

बाढ़ नियंत्रण हथौड़ी–रोसड़ा, विपदा से हमें बचाते हैं।
निबंधन कार्यालय के दस्तावेज, हक की बात सुनाते हैं।।

प्रशासन की इस शक्ति को, **संजीव** ने स्वर दिया है।
रोसड़ा के हर कार्यालय को, अपनी श्रद्धा का अर्घ्य दिया है।।

अनुमंडल की यह सक्रियता, जिला बनने का आधार बने।
रोसड़ा का यह प्रशासनिक वैभव, पूरे बिहार का प्यार बने।।

।। प्रगति के पथः रोसड़ा का सड़क जाल ।।

रोसड़ा की धरती पर अब, विकास के रथ दौड़ रहे।
सड़कों के ये नए किनारे, कल से आज को जोड़ रहे।।

संजीवनी की कलम चले, तो प्रगति की तस्वीर बने।
रोसड़ा के हर गांव की अब, नई और स्वर्ण लकीर बने।।

527–ई की धमक निराली, दरभंगा तक राह गई।
आमस–दरभंगा की यह दूरी, अब विकास की राह बन गई।।

पटना–पूर्णिया सिक्स–लेन अब, रोसड़ा होकर गुजरेगा।
निर्माणाधीन यह महापथ, अंचल का भाग्य सँवारेगा।।

रोसड़ा–हथौड़ी पथ पर देखो, गाँवों की यह पावन लड़ी।
मुरादपुर, एरौत, ठाहर, और बलुआहा की है शान बड़ी।।

बलहा, नंदेनगर, बाघोपुर, फिर बल्लीपुर, गाहर आए।
रहटौली, मधुरापुर होते, हथौड़ी तक खुशहाली जाए।।

शिवाजीनगर की ओर बढ़ें तो, मिर्जापुर, लालपुर मिलते।
सोनूपुर, मोतीपुर, बैद्यनाथपुर में विकास के फूल खिलते।।

गायघाट, करियन, पुरा, ठनका, डुमरा, शिवराम की डगर।
बरियाही में राम लखन सिंह सेतू, जोड़े शासन का नगर।।

कोल्हुआ घाट की राह चली, पांचोपुर, ढ़रहा के पार।
ढ़ट्टा, भीरहा, भरवाड़ी में, उन्नति का है अब विस्तार।।

टेकुना मठ, परोरिया, दुधपुरा, संग सिंघिया का नाम।
कोल्हुआ घाट का पथ संवारे, रोसड़ा के अटके काम।।

मब्बी–महुली की कच्ची पगडंडी, अब पक्की पहचान बनी।
थतिया–मोकरी की यह दूरी, जन–जन की मुस्कान बनी।।

हसनपुर से बिथान तक, सड़कों का जो जाल बिछा।
संजीव कहे–रोसड़ा की अब, बदल रही है पूर्ण दिशा।।

|| हाट और बाजारः रोसड़ा की आर्थिक संजीवनी ||

जहाँ सड़कों के चौराहे पर, सपनों के बाजार सजे।
रोसड़ा के इन गाँवों में, व्यापार के शंख बाजे।।

संजीवनी की कलम चले, तो आर्थिक शक्ति की बात हो।
मेहनत और व्यापार की, हर दिन एक नई शुरुआत हो।।

हथौड़ी और मुरादपुर के, चहल–पहल भरे वह चौक।
जहाँ खरीदारी की खातिर, जनता का उमड़ता शौक।।

एरौत के बाजार में, अपनों का सा व्यवहार मिले।
ठाहर और बलुआहा में, खुशियों का घर द्वार मिले।।

मोतीपुर और बैद्यनाथपुर, समृद्धि के नए केंद्र बने।
शिवाजीनगर की सड़कों पर, कई नए व्यापार बुने।।

बरियाही का बाजार देखो, सेतु की शक्ति से खिला।
करियन की पावन मिट्टी को, व्यापार का भी मान मिला।।

भीरहा की वह पुरानी रौनक, आज भी कायम है यहाँ।
सिंघिया और हसनपुर का, लोहा मानता सारा जहाँ।।

कोल्हुआ घाट और बिथान के, मेलों का वह अनूठा रंग।
जहाँ किसान और व्यापारी, चलते हैं अब एक संग।।

मब्बी–महुली से थतिया तक, सजी हैं छोटी–बड़ी दुकानें।
बदल रहा है अब रोसड़ा, छोड़ पुराने सब बहाने।।

संजीव कहे–इन बाजारों ने, गाँवों को आत्मनिर्भर किया।
हर दुकानदार, हर ग्राहक ने, उन्नति का ही दीप दिया।।

|| हुनर का सम्मान ||

खेतों में लहराता मक्का, खुशहाली का पैगाम है।
रोसड़ा के हर किसान का, दुनिया में अब नाम है।।

बागमती की मछली और, दूध की पावन धार यहाँ।
मेहनत और व्यापार का, सजता सदा संसार यहाँ।।

कारीगर के हाथों में, मिट्टी भी सोना बनती है।
बांस की तीलियों से यहाँ, नई कहानी बुनती है।।

मछुआरों के जाल में, उम्मीदों की चमक यहाँ।

मेहनतकश के माथे पर, स्वाभिमान की दमक यहाँ।।

बाजारों की रौनक में, अपनों का ही प्यार है।

रोसड़ा का हर एक कोना, प्रगति का आधार है।।

ना केवल जिला, अब जग में परचम लहराना है।

अपनी माटी के इस हुनर को, दुनिया को दिखाना है।।

संजीव कहे–इन उत्पादों को, वैश्विक पहचान दिलाना है।
रोसड़ा के हर हुनर को, राज्य स्तरीय सम्मान दिलाना है।।

।। रोसड़ाःनदियों और रिश्तों का संगम ।।

पश्चिम में बागमती सोहे, पूरब से सूरज लाली लाए।
उत्तर में कमला–करेह की लहरें, पावन संदेश सुनाए।।

दक्षिण में बूढ़ी गंडक की, अविरल बहती धारा है।
नदियों के इस आँगन में, बसा रोसड़ा हमारा है।।

रोसड़ा, विभूतिपुर, बिथान, सिंघिया की अपनी शान।
हसनपुर और शिवाजी नगर, महकाते सबका मान।।

छह प्रखंडों की पावन माला, एक सूत्र में पिरोई है।
इस मिट्टी की खुशबू में तो, मिश्री सी मिठास समाई है।।

अनोखा यह संगम स्थल है, राजनीति के रंगों का।
मेल यहाँ अद्‌भुत दिखता, विकास और उमंगों का।।

खगड़िया, समस्तीपुर, उजियारपुर, तीन लोकसभा का द्वार।
तीन सांसद मिलकर करते, इस धरती का बेड़ा पार।।

रोसड़ा, विभूतिपुर की अपनी, अलग चुनावी बारी है।
हसनपुर संग नाता गहरा, जिसकी महिमा भारी है।।

वारिसनगर के आँगन में, शिवाजी नगर की छह पंचायत।
विविधता में एकता की, यह सबसे सुंदर है आयत।।

नदी, डगर और जन–प्रतिनिधि, सब यहाँ आकर मिलते हैं।
रोसड़ा के इस चमन में ही, प्रगति के फूल खिलते हैं।।

गर्व हमें है इस माटी पर, जहाँ संगम की गहराई है।
प्रकृति और शासन की यहाँ, सुंदर एक परछाई है।।

।। न्याय–मार्तंडः उदयनाचार्य ।।

करियन की उस पावन माटी को, शत–शत वंदन करता हूँ।
जहाँ जन्मा था तर्क का सूरज, उस गौरव को याद करता हूँ।।

शिवाजीनगर प्रखंड की धरती, जिसका मान निराला है।
रोसड़ा अनुमंडल के मस्तक पर, ज्ञान का एक उजाला है।।

तर्क, न्याय और दर्शन का, जिसने विश्व में डंका बजाया था।
प्रखर मेधा के बल पर जिसने, ईश्वर का अस्तित्व दिखाया था।।

जब–जब उठा विवाद जगत में, बौद्ध और सनातन के बीच यहाँ।
उदयनाचार्य की तार्किक शक्ति ने, विजय पताका फहराई वहाँ।।

'आत्मतत्वविवेक' की रचना से, संशय के बादल छाँट दिए।
नास्तिक मत के कुतर्कों के, स्वयं के तर्क से बंधन काट दिए।।

समस्तीपुर की इस धरती ने, ऐसा विद्वान महान दिया।
जिसने भारत के गौरव को, पूरे जग में सम्मान दिया।।

नमन उस महानदार्शनिक को, जो सत्य का साक्षात् रहा।
करियन की वह पुण्य धरा, इतिहास का अमर प्रभात रहा ।।

।। न्याय–रणभेरी ।।

उठो हिंद के न्याय–प्रहरियों, करियन की ललकार सुनो।
तर्क–शास्त्र के महासमर की, तुम प्रखर हुंकार सुनो। 1।

शिवाजीनगर की माटी से, एक सिंह गर्जना उठी थी।
जिसके ज्ञान के प्रलय–वेग से, मिथ्या की जड़ टूटी थी। 2।

रोसड़ा की उस रणभूमि पर, जब नास्तिक दल उमड़ पड़ा।
तब न्याय का खड्ग लिए हाथों में, एक अकेला वीर अड़ा। 3।

उदयनाचार्य की प्रज्ञा ने, कुतर्कों के मस्तक काट दिए।
बौद्ध और सनातन के रण में, संशय के पर्वत छाँट दिए। 4।

समस्तीपुर की धमनियों में, वही पुरातन रक्त बहे।
जो तर्कों की आंधी में भी, पर्वत सा अविचल रहे। 5।

अनुमंडल रोसड़ा के माथे पर, यह गौरव का चंदन है।
जिसके ज्ञान के आगे झुकता, सारा विश्व–अभिनंदन है। 6।

नहीं परास्त हुआ वह योद्धा, जिसने ईश्वर सिद्ध किया।
तर्क की ऊँची लहरों पर, जिसने निज विश्वास प्रसिद्ध किया। 7।

कलम आज फिर हुंकार रही, उस पूर्वज की गाथा में।
लिख दो रोसड़ा का शौर्य–नाम, भारत माँ के माथा में। 8।

।। मौन दर्शनः करियन की छाया में ।।

शांत खड़ी है गंडक देखो, जैसे कोई ध्यान लगा।
करियन की इस पावन रज में, एक अनूठा ज्ञान जगा। 1।

शिवाजीनगर के कुंजों में, अब भी वह मौन समाहित है।
उदयनाचार्य की प्रज्ञा से, यह अमृत यहाँ प्रवाहित है। 2।

न कोई कोलाहल शब्दों का, न तर्कों का कोई शोर यहाँ।
अंतर्मन की गहराई में, खिंचता मन का डोर यहाँ। 3।

न्याय शास्त्र की उन गलियों में, ईश्वर का आभास मिला।
जैसे खिले हों हृदय–कमल, और भक्ति का मधुमास मिला। 4।

बौद्ध–शून्यता के भीतर भी, पूर्णत्व उन्होंने देख लिया।
सत्य सनातन की ज्योति में, निज जीवन को लेख लिया। 5।

रोसड़ा अनुमंडल की छाया, शीतल चंदन सी लगती है।
जहाँ प्रज्ञा की निर्मल धारा, अंतर में ही जगती है। 6।

विश्व जीत कर भी जो ब्राह्मण, शांत चित्त और सौम्य रहा।
उस महामना के चरणों में, सारा जग ही नत रहा। 7।

कलम थमी है उस चौखट पर, जहाँ सत्य ही बसता है।
रोसड़ा की इस माटी में ही, शाश्वत पथ प्रशस्त है। 8।

।। एरौत की अमराईः प्रकृति के चितेरे आरसी ।।

खड़ी मौन गंडक की लहरें, अब भी गीत सुनाती हैं।
आरसी के छंदों की खुशबू, पवन संग ले आती हैं।।

एरौत के उन आम्र–कुंज की, सोंधी सी वह गंध यहाँ।
कलमकार के अंतर्मन का, खुलता एक अनुबंध यहाँ।।

गुलाब के कोमल अधरों पर, ओस की बूंदें सजती थीं।
दामोदर की लहरों में, पायल वीणा सी बजती थी।।

प्रकृति के पावन अंचल को, उन्होंने माँ सा मान दिया।
पत्ते–पत्ते की धड़कन को, अपनी सुंदर तान दिया।।

झरने, नदियाँ और हिमालय, जिनके काव्य के गहने थे।
जीवन के हर सुख–दुख उनको, तरुवर बन कर सहने थे।।

फूलों की मुस्कान चुराकर, गीतों में वह भरते थे।
प्रकृति के उस महाकोष से, शब्दों का श्रृंगार करते थे।।

रोसड़ा की इस हरी धरा पर, **आरसी** एक मिसाल रहे।
मिट्टी, पानी और हवा के, वे अनमोल गुलाल रहे।।

आज भी उनकी यादें बनकर, कोयल यहाँ कूकती है।
उनकी लेखनी के आगे, स्वयं प्रकृति भी झुकती है।।

।। शब्द और शक्ति का संगम ।।

कलम जहाँ तलवार बने, और शब्द बनें जन–क्रांति का स्वर।
साहित्य और राजनीति का, संगम यहाँ है सबसे प्रखर।।

रोसड़ा की इस माटी ने, दोनों को ही मान दिया।
एक हाथ में शास्त्र रखा, तो दूजे में संविधान दिया।।

आरसी के गीतों में जहाँ, जीवन की करुणा बहती थी।
वहीं **'सुमन'** की प्रखर चेतना, सत्ता से भी कुछ कहती थी।।

राजनीति के रण में भी, जो सत्य का दामन थाम चले।
विद्वानों की इस धरती के, पावन ही सब काम चले।।

लेखनी जब समाज की, पीड़ा को स्वर देती है।
तभी राजनीति भी अपना, नया मार्ग चुन लेती है।।

संजीवनी का संकल्प यही, जन–जन का कल्याण रहे।
साहित्य रहे मर्यादा में, और देश का सम्मान रहे।।

इतिहास गवाह है इस भू का, यहाँ ज्ञान कभी न हारा है।
कलम और कर्म के बल पर ही, चमकता यह सितारा है।।

रोसड़ा की यह गौरव–गाथा, युग–युग तक गूँजती रहेगी।
साहित्य–नीति की यह गंगा, निरंतर यहाँ बहती रहेगी।।

।। हुंकारः रोसड़ा का शौर्य–गान ।।

उठो लेखनी! आज जगाओ, रोसड़ा के उस स्वाभिमान को।
गंडक की लहरों में गूँजे, उन वीरों के जयगान को।।

यह भूमि नहीं केवल माटी, यह पुरखों का वरदान है।
ज्ञान और विज्ञान के रण में, यह मिथिला की शान है।।

न्याय–खड्ग जब हाथ में लेकर, **उदयनाचार्य** अड़े थे।
तर्क–शास्त्र के महासमर में, अकेले ही वह खड़े थे।।

ईश्वर की सत्ता को साधा, अपनी प्रखर मेधा से।
काँप उठा था दंभ जगत का, उनके ज्ञान–प्रभा से।।

उस दार्शनिक की हुंकार का, साक्ष्य यहाँ का कण–कण है।
रोसड़ा की इस माटी का, ज्ञान–जगत को अर्पण है।।

गरज उठा एरौत का बेटा, **आरसी** जिसकी वाणी थी।
कलम नहीं वह काल–चक्र की, चलती एक कहानी थी।।

दामोदर का लहू रगों में, गुलाब का आशीष रहा।
झुका न सकता कोई उसको, ऐसा ऊँचा शीश रहा।।

'जीवन और जवानी' को उसने, रण–भेरी का स्वर दिया।
साहित्य के महायुद्ध में, अपना जीवन अर्पण कर दिया।।

बल्लीपुर का वह **'सुमन'** प्रखर, जो मैथिली का अमर गान था।
शब्दों के उस महाबली का, संकल्प ही उसकी पहचान था।।

आचार्य सुरेन्द्र ने भाषा की, सीमाओं को विस्तार दिया।
अपनी प्रखर मेधा से उसने, सोए जग को ललकार दिया।।

कलम बनी तलवार जहाँ, और स्याही बनी लहू का धार।
ऐसे ही विद्वानों से तो, महक रहा मेरा बिहार।।

बाबा सोमेश्वर की कृपा जहाँ, और गंडक का हुंकार रहे।
रोसड़ा के हर वासी के मन, शौर्य का ही संचार रहे।।

नमन है उन बलिदानों को, नमन है उस प्रज्ञा को।
कोटि–कोटि वंदन है मेरा, रोसड़ा की इस आज्ञा को।।

।। रोसड़ाः एक आध्यात्मिक अंतर्यात्रा ।।

शांत खड़ी गंडक की धारा, जैसे कोई मौन तपस्वी।
रोसड़ा की इस माटी में है, छिपी एक आभा मनस्वी।।

कोलाहल से परे यहाँ तो, ज्ञान का निर्मल झरना है।
इस पावन तीर्थ की रज में, सबको वंदन करना है।।

उदयनाचार्य के शांत चित्त से, निकला न्याय का सार यहाँ।
तर्क की ऊँची लहरों में भी, स्थिर था आधार यहाँ।।

ईश्वर की सत्ता को पाया, अंतर्मन की गहराई में।
सत्य साक्षात् खड़ा हुआ था, उनकी मौन विदाई में।।

जैसे कोई ध्यान मग्न हो, वैसे यह भू–मुस्काती है।
उनके दर्शन की सुवास, अब भी मन को महकाती है।।

एरौत के कुंजों में जैसे, आरसी का संगीत बसा।
प्रकृति के पावन अंचल में, मानवता का मीत बसा।।

दामोदर के धैर्य और गुलाब की करुणा का संगम।
शांत हृदय से निकले उनके, शब्द–शिल्प के अनुपम क्रम।।

जैसे संध्या की बेला में, कोई दीप जला जाता है।
आरसी का व्यक्तित्व हमें, शाश्वत सुख का पथ दिखाता है।।

बल्लीपुर के **'सुमन'** खिले, जो मैथिली के उपवन में।
सौम्य भाव और विनय बसा था, जिनके पावन जीवन में।।

आचार्य सुरेन्द्र झा की वाणी, जैसे शीतल चंदन है।
जिसके स्पर्श मात्र से होता, सबका अभिनंदन है।।

साहित्य की इस साधना को, शब्दों में क्या तोलें हम।
शांति की इस मूरत को, बस मन ही मन में खोलें हम।।

बाबा सोमेश्वर के चरणों में, झुका यहाँ हर मस्तक है।
शांति, शील और सादगी की, यह भूमि ही दस्तक है।।

यहाँ न कोई द्वेष, न ईष्या, बस प्रेम की ही गंगा है।
रोसड़ा की इस छाया में, मन अति पावन, चंगा है।।

।। रोसड़ा: काव्य की पावन स्थली ।।

नमन है उस माटी को, जहाँ ज्ञान का दीप जलता है।
जहाँ के कण–कण में, साहित्य का सूरज पलता है।।

यह भूमि नहीं केवल व्यापार की, यह विद्या का मंदिर है।
यहाँ के कवियों की वाणी में, बसा अमृत का सागर है।।

महाकवि आरसी की **'आरसी'** में, जिसने यौवन का गान लिखा।
देश–प्रेम और प्रकृति का, अद्‌भुत अमिट वितान लिखा।।

जीवन के उस महापथ पर, जो राह दिखाते जाते हैं।
रोसड़ा के ऐसे सपूत, युग–युग तक पूजे जाते हैं।।

आचार्य सुरेन्द्र **'सुमन'** की, जहाँ मैथिली मुस्काती है।
जिनकी कविता मिथिला की, संस्कृति का गौरव गाती है।।

शब्दों के वे शिल्पी थे, साहित्य के वे अमर दीप।
जिनकी लेखनी के मोती, बिखरे हैं मानस के समीप।।

न्याय शास्त्र के सूर्य, जहाँ उदयनाचार्य का वास रहा।
तर्क और दर्शन की धरती पर, जिनका अटूट विश्वास रहा।।

ईश्वर की सत्ता सिद्ध की, जिन्होंने अपनी मेधा से।
धन्य हुई है रोसड़ा की भू, उनकी ज्ञान–प्रभा से।।

ऐसी पावन, ऐसी गौरवमयी, मेरी रोसड़ा की धरती है।
जहाँ की हवाएँ आज भी, साहित्य की वंदना करती हैं।।

आस्था, व्यापार और ज्ञान का, यह अनूठा संगम है।
मेरी माटी का हर कोना, अपने आप में एक अनुपम है।।

।। युग–कवि आरसीः एरौत का अनमोल रतन ।।

मिथिला की उस उर्वरा मिट्टी का, एक गौरव गान लिखता हूँ।
रोसड़ा के **एरौत** गाँव का, ऊँचा मैं सम्मान लिखता हूँ।।

उन्नीस अगस्त उन्नीस सौ ग्यारह को, एक दिव्य ज्योति जागी थी।
साहित्य जगत की सोई हुई, किस्मत उस दिन जागी थी।।

दामोदर नारायण सिंह के, आँगन का वह तारा था।
माता गुलाब देवी की आँखों का, वह राज दुलारा था।।

समस्तीपुर की शान बढ़ा दी, दरभंगा का मान किया।
हिन्दी और मैथिली सेवा में, अर्पण अपना प्राण किया।।

जीवन और जवानी के, जो अमर कवि कहलाते थे।
प्रकृति और प्रेम के छंदों में, जो रस बरसाते थे।।

'आरसी' की लेखनी से, नवयुग का आह्वान हुआ।
उनकी अमर कविताओं से, जन–जन का कल्याण हुआ।।

पंद्रह नवम्बर छियानवे को, महाप्रयाण कर गए ऋषि।
छोड़ गए वे शब्द–शिल्प, जैसे नभ में ध्रुव की ज्योति।।

रोसड़ा प्रखंड की माटी का, वह बेटा बड़ा महान था,
बिहार के उस **महाकवि** पर, पूरे देश को नाज था।।

।। रोसड़ा के तीन स्तंभः गौरव की गाथा ।।

रोसड़ा की इस माटी का, वंदन बारम्बार है।
जहाँ महामानवों ने जन्मी, प्रज्ञा की तलवार है।।

'संजीव' की कलम आज, उन महाप्राणों को गाती है।
जिनके नाम से रोसड़ा की, दुनिया शीश झुकाती है।।

आरसी के छंदों में जैसे, यौवन का उल्लास मिला।
प्रकृति की हर कली–कली को, गीतों का मधुमास मिला।।

साहित्य–गगन के उस सूरज ने, एरौत को चमकाया था।
हिंदी की पावन वीणा तब, नया एक स्वर पाया था।।

सुरेन्द्र झा 'सुमन' की प्रज्ञा, मिथिला का गौरव बनी।
जिनके शब्द–बाणों के आगे, सत्ता भी नत–मस्तक तनी।।

साहित्य और संसद तक जिनका, निर्भीक सदा अधिकार रहा।
रोसड़ा के उस मनीषी पर, मुदित सदा संसार रहा।।

विपीन बिहारी ठाकुर ने, सेवा का जो दीप जलाया।
जन–जन के अधिकार हेतु, अपना सर्वस्व लगाया।।

साहित्य–नीति के शिल्पी बन, वे जनमानस के मीत रहे।
रोसड़ा के हर संघर्षों में, वे ही सबसे प्रीत रहे।।

ये तीन स्तंभ हमारे हैं, **संजीवनी** की शक्ति हैं।
इनके चरणों में ही तो, **रोसड़ा** की सच्ची भक्ति है।।

संजीव कहे इन रत्नों से ही, रोशन है यह नगर हमारा।
इनके ही पदचिन्हों पर, चल रहा यह डगर हमारा।।

।। रोसड़ा का विधायी इतिहासः 1952 से 2025।।

लोकतंत्र के पावन पथ पर, गौरव की यह शान है।
रोसड़ा की जनता ही इस, स्वर्णिम युग की जान है।।

परिवर्तन की इस आँधी में, जनमत सदा ही प्रधान रहा।
रोसड़ा की इस पावन मिट्टी में, लोकतंत्र का मान रहा।।

कभी मशाल, कभी कमल खिला, कभी हाथ का साथ मिला।

जनता के हर एक फैसले से, विकास का नया फूल खिला।।

बावन '1952' से पच्चीस '2025' तक का, जो सफर यहाँ पर आया है।
संजीव की प्रखर लेखनी ने, उसे पन्नों पर सजाया है।।

महावीर राउत ने नींव रखी, प्रथम विधायक बनकर आए।
सत्तावन '1957' की जीत ने उनके, सेवा के फिर फूल खिलाए।।

बासठ '1962' और सरसठ '1967' में, **रामाकांत झा** का था दौर।
सोशलिस्ट की गूँज उठी थी, जनता के मन मचा था शोर।।

सहदेव महतो ने उनहत्तर '1969' में, हाथ का साथ निभाया था।
बहत्तर '1972' में जनसंघ का दीपक, **रामाश्रय राय** ने जलाया था।।

स्वतंत्र स्वर बनकर उभरे, सतहत्तर '1977' में **प्रयाग मंडल**'।
अस्सी '1980' में **रामाश्रय राय** ने, फिर से जीती थी हलचल।।

पचासी '1985' में **भोला मांडर**, लोकदल की शान बने।
छियासी '1986' से **गजेंद्र सिंह**, रोसड़ा की पहचान बने।।

नब्बे, पंचानवे और पाँच '2005' तक, उनका ही अधिकार रहा।
जनता दल और आरजेडी का, उनके संग आधार रहा।।

दो हजार में **अशोक कुमार** ने, समता का परचम लहराया।
दो हजार दस में **मंजू हाजरी** ने, केसरिया गौरव पाया।।

पंद्रह '2015' में फिर **अशोक कुमार**, कांग्रेस संग विजय हुए।
जनता के सुख–दुख की खातिर, वे भी सदा निर्भय हुए।।

बीस ‘2020’ में **बीरेंद्र कुमार** ने, कमल खिलाया माटी में।
पच्चीस ‘2025’ में फिर जीत दर्ज की, विकास की इस परिपाटी में।।

संजीवनी है इस सफर में, लोकतंत्र का मान बढ़ा।
रोसड़ा के इन नायकों से ही, गौरव का ये सोपान चढ़ा।।

।। हुंकारःरोसड़ा माँगे अपना अधिकार ।।

उठो कि अब अधिकार हेतु, रणभेरी को बजाना है।
रोसड़ा के स्वाभिमान को, जिला अब बनवाना है।।

बूढ़ी गंडक की लहरों में, अब उबाल आना चाहिए।
हक की खातिर हर मस्तक पर, रोष छाना चाहिए।।

अनुमंडल की सीमा में, कब तक कैद रहोगे तुम।
अपनी ही उपेक्षा का विष, कब तक सहोगे तुम।।

व्यापार यहाँ, विज्ञान यहाँ, और प्रज्ञा का विस्तार यहाँ।
फिर क्यों जिला बनने को खड़ा, मेरा शहर लाचार यहाँ।।

उदयनाचार्य की तर्कशक्ति, अब शब्दों में ढलनी चाहिए।
सत्ता के गलियारों में, एक ज्वाला जलनी चाहिए।।

रेल की पटरी, सड़कों का जाल, और गूँजता ये बाजार।
चीख–चीख कर कह रहा, हम जिला बनें, है ये अधिकार।।

संजीवनी की कलम आज, हुंकार यही भरती है।
सोयी हुई हुकूमत से, बस प्रश्न यही करती है।।

इतिहास हमारा गौरवशाली, वर्तमान भी है महान।
रोसड़ा को जिला बनाओ, यही है जन–जन का अरमान।।

थकना मत, रुकना मत, जब तक लक्ष्य न मिल जाए।
इस माटी के हर चेहरे पर, जिला का गौरव खिल जाए।।

संजीव का यह संकल्प है, जन–शक्ति अब जागेगी।
अन्याय की हर दीवार अब, रोसड़ा से भागेगी।।

।। रोसड़ा नगरः विकास की एक गौरवगाथा।।

अठारह अप्रैल अठारह सौ उनहत्तर, जब रोसड़ा ने अंगड़ाई ली थी।
नगरपालिका की गौरवमयी नींव, इतिहास के पन्नों पर पड़ी थी।।

प्रथम अध्यक्ष के गौरव पथ पर, **राम टहल पंजियार** विराजे।
नगर विकास की पहली किरण में, नई उमंग के स्वर थे साजे।।

नेतृत्व की महान परंपरा, **हरिवंश, प्रयाग, बद्री** की कर्मठता न्यारी।
सूर्य शेखर और **मुसाय नायक**, जन–जन की सेवा दिल से प्यारी।।

परमानंद पूर्वे, रामविलास महतो, सत्येन्द्र नायक का योगदान रहा।
हर एक अध्यक्ष के मजबूत इरादों से, रोसड़ा का स्वर्णिम मान बढ़ा।।

परिवर्तन का नया सवेरा आया, जब बदला स्वरूप और बदली काया।

नगर पंचायत से परिषद तक का सफर, विकास का नया परचम लहराया।।

रेणु देवी, श्याम बाबू और **मीरा सिंह**, नेतृत्व की कमान इन्होंने संभाली।
मुख्य पार्षद और सभापति बन, नगर की गलियों में फैलाई खुशहाली ।।

।। रोसड़ा के सारथीः एक गौरवगाथा ।।

प्रथम दिसंबर उन्नीस सौ छिहत्तर का वह शुभ दिन आया।
जब बिहार के मानचित्र पर **रोसड़ा अनुमंडल** मुस्काया।1।

बूढ़ी गंडक की लहरों ने तब एक नया राग सुनाया था।
प्रशासनिक गरिमा का सूरज, इस पावन धरती पर छाया था।2।

प्रथम सारथी बनकर आए **शांति सदन शर्मा** जी।
न्याय और व्यवस्था की नीवं भी डाली शर्मा जी।3।

फिर **सूर्य देव प्रसाद** ने अपनी प्रखर रश्मियाँ बिखेरीं।
ठाकुर श्यामानंद ने भी सुनी जन–मानस की टेरी।4।

बंशीधर लाल की कर्मठता ने इस माटी को सींचा था।
श्याम नंदन सिंह ने विकास का नया नक्शा खींचा था।5।

रमेश प्रसाद की लेखनी ने अनुशासन का पाठ पढ़ाया।
शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा ने निर्भय होकर मान बढ़ाया।6।

जगदीश शर्मा की कार्यशैली सबको आज भी याद है।
राम विराजी ठाकुर के न्याय पर जनता को नाज है।7।

प्रेम चन्द्र केसरवानी ने प्रेम भाव से काम किया।
श्यामशंकर प्रसाद ने भी रोसड़ा को ऊँचा नाम दिया।8।

इतिहास के पन्नों में **गौतम गोस्वामी** का भी नाम रहा।
बासुदेव दास की सेवा का भी ऊँचा यहाँ मुकाम रहा।9।

कृष्ण कुमार रजक ने भी बखूबी फर्ज निभाया था।
प्रमोद कुमार सिंह ने प्रशासन को नया जोश दिलाया था।10।

सैयद परवेज आलम की रही यहाँ एक अलग पहचान।
राधा मोहन प्रसाद ने बढ़ाया अनुमंडल का सम्मान।11।

असंगबा चूबा आओ की छवि आज भी यहाँ निराली है।
रविन्द्र प्रसाद की यादों में भी सेवा भाव की लाली है।12।

अजय कुमार श्रीवास्तव ने नियम का दीप जलाया था।
कुन्दन कुमार की ऊर्जा ने हर दिल को हर्षाया था। 13।

अमन कुमार सुमन की खुशबू से महकी यह गलियाँ।
ब्रजेश कुमार के दौर में खिली विकास की कलियाँ। 14।

आकाश कुमार ने छुए यहाँ प्रगति के नए आसमान।
और **संदीप कुमार** लिख रहे अब आधुनिकता का गान। 15।

पत्रकार संजीव की कलम आज इतिहास को दुहराती है।
रोसड़ा की यह माटी, हर **'एसडीओ'** की गाथा गाती है। 16।

।। रोसड़ा का जमीनी कुरुक्षेत्र ।।

दो लाख पंद्रह हजार, एक सौ चौबीस एकड़ का विस्तार।
रोसड़ा की पावन माटी, आज मांग रही अपना अधिकार। 1।

अनुमंडल की इस धरती पर, उलझा खतियानी खेल है।
सीएस और **आरएस** की जंग में, कानून भी बेमेल है। 2।

आठ हजार नौ सौ चौवालीस, 'आम' भूमि का लेखा है।
जिस पर टिका विकास का पहिया, सबने इसको देखा है। 3।

सड़क, पुल और सरकारी भवन, इसी जमीन की शान हैं।
मगर अफसोस! आधे हिस्से पर, भू–माफिया की कमान है। 4।

अवैध कब्जों की कालिख ने, चेहरे को इसके झुलसाया।
जनता की जो संपत्ति थी, उसे रसूखदारों ने खाया। 5।

चौदह हजार आठ सौ छियानवे, **'खास'** भूमि का आंकड़ा।
टाइटल सूट के चक्कर में, हर कोई यहाँ है जकड़ा। 6।

अदालत की तारीखों में, पीढ़ियां गुजरती जाती हैं।
खतियान की ये विसंगतियां, सबको बहुत रुलाती हैं। 7।

रोसड़ा का भूगोल आज, कागज के पन्नों में कैद है।
न्याय की बाट जोहता हर शख्स, यहाँ पर बेहद व्यथित है। 8।

।। अधूरा संकल्पः रोसड़ा की जिला वाली डगर ।।

वह 13 अगस्त की तारीख थी, वर्ष 1994 का दौर था।
गजेन्द्र सिंह की आँखों में, रोसड़ा का उज्ज्वल भोर था। 1।

सत्ता के शीर्ष पर लालू थे, घोषणा की पूरी तैयारी थी।
इतिहास के पन्नों में जुड़ने वाली, एक उपलब्धि भारी थी। 2।

मंच सजा था, उम्मीदें जगी थीं, कि अब तो सम्मान मिलेगा।
रोसड़ा की माटी को अब, जिला का नया विधान मिलेगा। 3।

पर राजनीति की बिसात पर, एक नया पेंच आ अड़ा था।
घनश्यामपुर की मांग का मुद्दा, रोसड़ा के आगे खड़ा था। 4।

लोकसभा रोसड़ा ही था, **घनश्यामपुर** उसका हिस्सा था।
वह भी जिला में रहने को आतुर, यही पुराना किस्सा था। 5।

दिग्गज नेता **महावीर प्रसाद**, अपनी जिद पर अड़े रहे।
अनुमंडल बने **घनश्यामपुर** पहले, इसी बात पर खड़े रहे। 6।

अड़चनों के उस भंवर में, वह घोषणा कहीं खो गई।
एक सुनहरी सुबह होने से पहले, फिर काली रात हो गई। 7।

न घनश्यामपुर अनुमंडल बना, न रोसड़ा ही जिला बन सका।
विकास का वह रथ दशकों से, सियासत की धूल में सना रहा। 8।

आज भी रोसड़ा पूछता है– वह वादा कब पूरा होगा?
क्या अपनों की ही खींचतान में, यह सपना अधूरा होगा?। 9।

पत्रकार संजीव की कलम लिखती है, जन–जन की यही पुकार है।
हक मिले रोसड़ा को अपना, अब जनता को इंतजार है। 10।

।। रोसड़ाः संघर्ष से शिखर की ओर ।।

केदार देव की सत्ता थी, जब मन में एक विचार जगा।
सत्तर के उस दशक बीच, रोसड़ा का सोया भाग्य जगा। 1।

रामाश्रय राय ने ठाना था, अनुमंडल इसे बनाएंगे।
विकास की उजली किरणों को, जन–जन तक पहुँचाएंगे। 2।

सत्ता बदली, चेहरा बदला, **गफूर** का वह दौर रहा।
उथल–पुथल के भंवर बीच, वह सपना थोड़ा और रहा। 3।

हुई घोषणा अंततः जब, **जगन्नाथ** का शासन था।
एक दिसंबर छिहत्तर (1976) को, हर्षित हर जन–मानस था। 4।

पास नहीं था भवन स्वयं का, समस्तीपुर में डेरा था।
ठाकुर जी के खपरैलों में, यादों का बसेरा था। 5।

शांति सदन शर्मा पहले, हाकिम बनकर आए थे।
प्रथम तिरंगा फहराकर, सब का मान बढ़ाए थे। 6।

नगरपालिका की चौखट पर, फिर कुछ दिन काज चला।
व्यापार मंडल के आंगन में, शासन का अंदाज चला। 7।

कदम–कदम पर संघर्षों की, नई कहानी लिखी गई।
धैर्य और पुरुषार्थ की मूरत, दुनिया को फिर दिखाई गई। 8।

आज खड़ा जो भव्य भवन है, श्रम का वह प्रतिफल प्यारा।
स्थायी ठिकाना मिला इसे, चमका है अब भाग्य सितारा। 9।

रोसड़ा की मिट्टी का गौरव, हर दिल में अब बसता है।
बीता कल अब यादों में, भविष्य नया अब हँसता है। 10।

उठती है आवाज प्रखर अब, **पत्रकार संजीव** की वाणी से।
लिखते हैं इतिहास नया वह, अपनी कलम की रवानी से। 11।

अनुमंडल से जिला बने अब, यही लक्ष्य हर आँखों में।
विकास की खुशबू महक रही है, रोसड़ा की अब शाखों में। 12।

संजीव सिंह की पैनी नजरें, जन–जन की पीड़ा पढ़ती हैं।
उनकी लेखनी शासन की, हर एक सीढ़ी चढ़ती है। 13।

हक की खातिर लड़ने का, संकल्प हृदय में ठाना है।
रोसड़ा को अब जिला बनाना, बस यही एक निशाना है। 14।

बदलेगा भूगोल यहाँ का, बदलेगी अब तकदीर यहाँ।
जनशक्ति के हुंकार से खिंचती, गौरव की लकीर यहाँ। 15।

कलमकार के शब्दों में अब, जन–आंदोलन की ज्वाला है।
जिला बनने की मंजिल का, खुलता अब हर ताला है। 16।

।। रोसड़ाः संसदीय इतिहास की महागाथा ।।

बावन के उस प्रथम भोर में, **मुजफ्फरपुर** का मान था।
रामेश्वर साहू के हाथों में, रोसड़ा का सम्मान था। 1।

सत्ता की वह अमर बेल थी, कांग्रेस का झंडा था।
लोकतंत्र की नई डगर पर, बढ़ा कदम सतरंगा था। 2।

सत्तावन की बदली धारा, दरभंगा संग नाता जुड़ा।
फिर **रामेश्वर साहू** जीते, जीत का ही रथ मुड़ा। 3।

बासठ में जो जन्म लिया, अनुसूचित का मान बना।
दशकों तक जन–गण की सेवा, लोकतंत्र की शान बना। 4।

बासठ आया, रूप बदला, आरक्षित वह क्षेत्र हुआ।
फिर **'साहू'** ही जीते यहाँ, कांग्रेस का ही वर्चस्व रहा। 5।

सरसठ में समाजवाद की, बही लहर पुरजोर यहाँ।
केदार पासवान की जीत ने, लिखा नया इतिहास यहाँ। 6।

इकहत्तर में **राम भगत** ने, कांग्रेस को फिर प्राण दिए।
पर सतहत्तर की आंधी में, सबने अपने रुख बदल लिए। 7।

राम सेवक हजारी आए, जनता पार्टी का नाम हुआ।
अस्सी में **बालेश्वर राम** से, कांग्रेस का फिर काम हुआ। 8।

चौरासी में **राम भगत** की, वापसी का वह साल रहा।
नवासी में **दशई चौधरी** का, जनता दल संग हाल रहा। 9।

इक्यानबे में **राम विलास** ने, रोसड़ा को पहचान दी।
छियानबे–अठानबे में, **पीतांबर** ने राजद को कमान दी। 10।

निन्यानबे और चार का सूरज, **रामचंद्र** के नाम रहा।
कभी **'जदयू'** कभी **'लोजपा'**, उनका ही बस काम रहा। 11।

दो हजार आठ के परिसीमन ने, अपनी ऐसी चाल चली।
विलोपित होकर तीन खंड में, रोसड़ा की पहचान ढली। 12।

नौ में तीन सांसदों के जिम्मे, रोसड़ा का क्षेत्र हुआ।
जदयू के परचम तले तब, राजनीति का मेल हुआ। 13।

महेश्वर हजारी समस्तीपुर, दिनेश खगड़िया की शान बने।
अश्वमेध देवी उजियारपुर से, जनता के सम्मान बने। 14।

चौदह, उन्नीस और चौबीस में, चली भाजपा की लहर प्रखर।
नित्यानंद राय उजियारपुर से, जीतते रहे हर एक डगर। 15।

खगड़िया में **केसर** का जलवा, चौदह और उन्नीस रहा।
चौबीस में **राजेश वर्मा** ने, जीत का नया मंत्र पढ़ा। 16।

चौदह और उन्नीस में फिर, **रामचंद्र** का दौर दिखा।
प्रिंस राज ने उपचुनाव में, जीत का नया लेख लिखा। 17।

चौबीस की बेला में आई, **शाम्भवी** की नई उड़ान।
समस्तीपुर की जनता ने, लोजपा को दिया सम्मान। 18।

हसनपुर, विभूतिपुर और रोसड़ा, अब तीन राहों में बँटे हैं।
पर विकास की एक आस में, जन–जन आज भी डटे हैं। 19।

इतिहास के पन्नों में दर्ज है, रोसड़ा की यह गौरव गाथा।
कलमकार **संजीव** की दृष्टि में, जन–जन का यह भाग्य विधाता। 20।

।। विरासत की टीसः रोसड़ा लोकसभा ।।

छह धागों से बुनी हुई, वह राजनीति की चादर थी।
रोसड़ा की चौपालों में, बसती सबकी आदर थी। 1।

सिंघिया, बहेड़ी, घनश्यामपुर, और हसनपुर का संगम।
वारिसनगर और रोसड़ा ने, साधा था विकास का क्रम। 2।

बावन से नौ तक गूँजी यहाँ, जन–गण की अपनी वाणी।
प्रतिनिधियों ने संकल्पों से, लिखी विजय की कहानी। 3।

एक ही नायक के हाथों में, था सबका भाग्य विधाता।
इन छह विधानसभा क्षेत्रों का, था एक ही अटूट नाता। 4।

संसद की उन ऊँचाइयों पर, जो भी स्वर यहाँ से गूँजा।
इन छह आँगन की मिट्टी को, उसने ही सबसे पहले पूजा। 5।

मजबूत स्तम्भ थे नेता वे सब, और अडिग यहाँ की जनता।
हर अंचल में समाहित थी, एक अटूट सी ममता। 6।

पर कालचक्र ने करवट ली, परिसीमन का वार हुआ।
अपनी ही उस विरासत का, निर्दयी बंटवारा हुआ। 7।

दो हजार आठ की स्याही ने, भूगोल बदल कर रख डाला।
बिखर गई वह मधुर एकता, टूट गई वह माला। 8।

कोई समस्तीपुर का हिस्सा, कोई दरभंगा में समाया।
बहेड़ी और घनश्यामपुर पर, अब दूजा अधिकार छाया। 9।

विगत वर्षों की यादें अब, आँखों में पानी लाती हैं।
विलोपित हुई वह सीट हमें, अपनी टीस सुनाती हैं। 10।

भले नक्शे बदल गए हों, पर दिल का रिश्ता कायम है।
रोसड़ा के उस स्वर्णिम युग का, आज भी यहाँ नजारा है। 11।

इतिहास लिखेगा स्वर्ण अक्षरों में, उस गौरव की गाथा को।
नमन है उस साझी विरासत को, और रोसड़ा की माटी को। 12।

।। इतिहास के पन्नों सेः जब रोसड़ा आए 'देशरत्न'।।

वह तारीख उन्नीस अक्टूबर, साल चौवन का था।
रोसड़ा की पावन मिट्टी पर, कदम **'राजेंद्र बाबू'** का था।।

पाँच घंटों तक ठहर गई थी, वक्त की हर एक रफ़्तार यहाँ।
जब प्रथम राष्ट्रपति के स्वागत में, उमड़ा था जन–संसार यहाँ।।

चले काफिला जब आगे, माटी की सौंधी खुशबू में।
एरौत की उन गलियों से, बल्लीपुर के जादू में।।

हथौड़ी रोड की धूलि ने भी, अपना भाग्य संवारा था।
जन–नायक की एक झलक, हर आंख का तारा था।।

महादेव मठ की दीवारों ने, वह अनूठा दृश्य देखा।
लिखते हुए दलित छात्रों की, उज्ज्वल कल की रेखा।।

मिले प्रेम से बच्चों से, आशीषों का दान दिया।
शिक्षा के उस मंदिर को, खुद अपना मान दिया।।

बागमती की लहरों पर, जब बांध का शिलान्यास हुआ।
रोसड़ा के खुशहाली का, तब नया एक इतिहास हुआ।।

वह दूरदृष्टि, वह सादगी, आज भी यहाँ की यादों में है।
प्रथम राष्ट्रपति का वह सफर, रग–रग की बुनियादी बातों में है।।

बागमती की उन लहरों ने, एक नया संकल्प जगाया था।
जब **'राजेंद्र बाबू'** ने हाथों से, विकास का दीप जलाया था।।

खेत–खलिहानों की प्यास बुझी, और बाढ़ का डर भी कम हुआ।
रोसड़ा की उस पावन धरती पर, प्रगति का शुभ आरंभ हुआ।।

वह सादगी का पुतला था, वह भारत का ही गौरव था।
छात्रों के बीच बैठे जब वह, हर चेहरा कितना प्रफुल्लित था।।

इतिहास गवाह है रोसड़ा का, वह पांच घंटे अनमोल रहे।
देशरत्न के चरणों से, गलियारे सब गुंजायमान रहे।।

।। रोसड़ा का गौरवः काष्ठ कमंडल ।।

गूंज रही है आज भी, रोसड़ा की वह शान।
लकड़ी में जो फूँकते थे, मिस्त्री अपनी जान। 1।

जंगल और गुलटेन की, छेनी ने जो गढ़ा।
उस कमंडल की कीर्ति का, कद था सबसे बड़ा। 2।

शीशम और सागवान की, खुशबू महकती थी।
कारीगरों के हाथों में, कला चहकती थी। 3।

साधु–संतों की टोली जब, नगर में आती थी।
रोसड़ा की वह काष्ठ–कला, सबको लुभाती थी। 4।

पचास का वह दशक था, और स्वर्ण काल का दौर।
रोसड़ा के कमंडल का, डंका था चारों ओर। 5।

मजबूती में बेजोड़ था, सुंदरता में था खास।
हर संत के कर–कमल में, होता इसका वास। 6।

आज वक्त की धूल में, वह यादें कुछ धुंधली हैं।
पर विरासत की वह जड़ें, आज भी तो सुदृढ़ हैं। 7।

संजीव अपनी कलम से आज, फिर वही याद जगाते हैं।
रोसड़ा की इस पावन कला को, मिलकर शीश नवाते हैं। 8।

।। हिन्दुस्तान के गौरव ।।

समस्तीपुर की उर्वर माटी, विद्यापति का प्यार है।
मैथिली भाषा के प्राणों में, बसता यहाँ संसार है। 1।

साहित्य अकादमी ने चूमा, जिन कवियों का भाल यहाँ।
मिथिला के शब्द–शिल्पियों का, गूँज रहा है गान यहाँ। 2।

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' ने, अद्‌भुत अलख जगाई थी।
प्रेमचन्द्र की कालजयी कथाएँ, मैथिली में सजाई थीं। 3।

2004 में 'अनुवाद' का, पाया पावन सम्मान उन्होंने।
मैथिली के शब्द–कोष में, भरा नया अभियान उन्होंने। 4।

बासुकीनाथ झा ने पटसा से, जो **'बोध संकेतन'** दिया।
2023 में निबंधों से, जग का मानस जीत लिया। 5।

हसनपुर की कोख से जन्मी, वह प्रखर प्रज्ञा की धारा।
मैथिली के चिंतन को मिला, एक नया और प्रबल सहारा। 6।

अमित मिश्रा 'करियन' का, युवा जोश जब मुस्काया।
2021 में **'अंशु बनि पसरि जायेब'** से मान बढ़ाया। 7।

नयी पीढ़ी के हाथों में, मैथिली का भविष्य सँवर रहा।
पुरस्कार की गरिमा से, समस्तीपुर का गौरव निखर रहा। 8।

आरसी प्रसाद सिंह का, एरौत (रोसड़ा) में था वास।
1984 में **'सूर्यमुखी'** ने, फैलाया साहित्य–प्रकाश। 9।

कवि–हृदय की कोमलता और, शब्दों का यह अनूठा संगम।
मैथिली की भाव–भूमि पर, छेड़ गया भक्ति का सरगम। 10।

मार्कण्डेय प्रवासी जी, गरुआरा के महान सपूत।
1981 की **'अगस्त्यायिनी'**, संस्कृति की पावन दूत। 11।

समस्तीपुर की धरती पर, महाकाव्य की जो रचना की।
मैथिली के महासागर में, अनमोल रत्न की गणना की। 12।

सुरेन्द्र झा 'सुमन' जी, बल्लीपुर (शिवाजी नगर) की शान।
1971 में **'पयस्विनी'** ने, बढ़ाया भाषा का सम्मान। 13।

समस्तीपुर के इन रत्नों ने, साहित्य का जो सृजन किया।
मैथिली की सेवा में अपना, सारा जीवन अर्पण किया। 14।

|| रोसड़ाः साहित्य का संगम स्थल ||

रोसड़ा की पावन धरा पर, शब्द–ब्रह्म मुस्काता है।
हर रविवार यहाँ कविता का, सुंदर पर्व मनाया जाता है। 1।

हिन्दी और मैथिली की, जहाँ बहती पावन अविरल धारा।
साहित्यिक संस्थाओं ने मिलकर, इस आँगन को सँवारा। 2।

'साहित्य संगम' की चौपाल सजे, या **'साहित्य परिषद'** का मान।
'साहित्य सर्जक मंच' यहाँ, मिलता रचनाकारों को सम्मान। 3।

'मिथिला मंडन मंच' जहाँ, मिथिला की शान बढ़ाता है।
हर संस्था के प्रयास से, नव–कवि मनचाहा मंच पाता है। 4।

कहीं छंद की पायल बाजे, कहीं गजल मुस्काती है।
मातृभाषा मैथिली की मिठास, रग–रग में बस जाती है। 5।

पुराने वटवृक्षों की छाया, नव–कोंपलों को पाल रही।
रोसड़ा की यह साहित्यिक ज्योति, जग में उजियारा डाल रही। 6।

प्रत्येक रविवार यहाँ, गोष्ठियों की गूँज सुनाई देती है।
कलमकारों की टोली, समाज को नई दिशा दे देती है। 7।

कोई शब्द लिखे राष्ट्रभक्ति के, कोई प्रेम का गान करे।
धन्य है रोसड़ा की माटी, जो साहित्य का मान करे। 8।

।। साहित्य की पावन धाराः साहित्य संगम ।।

रोसड़ा की पावन माटी में, उपजी एक सुंदर फुलवारी।
'साहित्य संगम' नाम से महकी, कविता की रसधार निराली। 1।

दो हजार उन्नीस का वह वर्ष, जो नई अलख जगा गया।
कलमकारों की टोली को, एक सूत्र में पिरो गया। 2।

शिव शंकर प्रसाद सिंह 'शिखर–संरक्षक' बन राह दिखाते।
उनके पावन मार्गदर्शन में, सब मिल साहित्य की ज्योत जलाते। 3।

'दिवाकर' की अध्यक्षता में, खिलती शब्दों की कलियां हैं।
संजीव, सुमन और सहनी जी से, सजती रचना की गलियां हैं। 4।

तृप्ति, मनोज, विजय और **दिनेश**, सब मिलकर कदम बढ़ाते हैं।
नकी, संतोष और मैथिली माधव, सुर से सुर मिलाते हैं। 5।

कृष्ण कुमार लाखोटिया और **गामी** का, आशीष सदा मिलता।
साहित्यिक इस बगिया में, हर फूल प्रेम का है खिलता। 6।

हर महीने के अंतिम रविवार, सजती काव्य गोष्ठी भारी।
शब्दों के मोती चुन–चुनकर, करते सब अपनी तैयारी। 7।

वार्षिक आयोजन हर वर्ष, उत्सव सा रंग जमाता है।
दूर–दराज के कवियों को, रोसड़ा खींच ले आता है। 8।

खगड़िया, दरभंगा, समस्तीपुर की, सजती यहाँ कहानी।
हिंदी–मैथिली की सेवा में, समर्पित हर एक प्राणी। 9।

लेखक और पत्रकारों का, यह मंच सदा महान रहे।
साहित्य संगम, रोसड़ा का, जग में ऊँचा नाम रहे। 10।

।। रोसड़ाः धरती है विद्वान की ।।

आओ साथी तुम्हें दिखाएं, झांकी रोसड़ा धाम की।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है विद्वान की।। **वंदे मातरम, वंदे मातरम!**

करियन का गौरव,

ये देखो करियन की माटी, जहाँ न्याय का सूर्य उगा।
उदयनाचार्य के तर्कों से, सारा नभ–मंडल था जगा।।

बौद्धों के संग शास्त्रार्थ की, गूँज रही दीवार यहाँ।
सत्य सनातन धर्म का लहरा, सदा–सदा से प्यार यहाँ।।

इसी धरा ने ताकत देखी, ईश्वर के अभिमान की...।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है विद्वान की।। **वंदे मातरम, वंदे मातरम!**

आधुनिक गौरव – अमित मिश्र,

उसी वंश की उसी ज्ञान की, नई ज्योति अब जागी है।
अमित मिश्र के शब्द–शिखर पर, दुनिया आज अनुरागी है।।

'अंशु बनि पसरि जाएब', कविता ने रंग जमाया है।
दिल्ली की अकादेमी ने, सम्मान का मुकुट पहनाया है।।

युवा शक्ति ने आन बढ़ा दी, मैथिली की मुस्कान की...।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है विद्वान की।। **वंदे मातरम, वंदे मातरम!**

साहित्य और संस्कृति,

दर्जन भर पुस्तकें लिख डालीं, शिक्षक का सम्मान मिला।
करियन पुत्र अमित मिश्र का, जग में अमर प्रमाण मिला।।

साहित्य–सुमन के उपवन में, नवीन पुष्प ये महका है।
करियन का हर घर, हर आँगन, गर्व भाव से चहका है।।

कण–कण बोल रहा है महिमा, अपनी दिव्य पहचान की...।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है विद्वान की।। **वंदे मातरम, वंदे मातरम!**

रोसड़ा का सौंदर्य,

उत्तर में आरसी बाबू की, कविताएं अब गूँज रही।
बुद्धिनाथ के सुमन हृदय की, कलियाँ अब भी महक रही।।

भीरहा की मस्ती देखो, देवधा पावन धाम यहाँ।
विद्या, शौर्य और त्याग का, होता सदा सम्मान यहाँ।।

ऋणी रहेगी दुनिया सदा, इस ऊँची ऊंची शान की...।
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है विद्वान की।। **वंदे मातरम, वंदे मातरम!**

।। कबीर मठ रोसड़ा:पीठाधीश्वरों की गौरव–गाथा ।।

कबीर की इस पावन धरा को, नमन करे जग सारा।
रोसड़ा के इस बाग में, बहा भक्ति का निर्मल धारा।।

संजीवनी के पृष्ठों पर, स्वर्णिम इतिहास सजाते हैं।
बारह गुरुओं के चरणों में, अपनी श्रद्धा झुकाते हैं।।

खेदी दास जी (संस्थापक)

अति कष्ट देख संसार में, 'खेदी' नाम धराया।
गुरु दया से रोसड़ा में, भक्ति का दीप जलाया।।

वैर त्याग कर प्रेम भाव का, अनुपम अलख जगाया।
पहली गद्दी पर बैठकर, मठ का मान बढ़ाया।।

प्रेमदास निर्बान जी

दया रूपी दूजे गुरु, प्रेमदास गुणवान।
प्राणी एक समान लखि, किया जगत कल्याण।।

खुशियाल दास जी

भ्रमण किया उपदेश दिया, जीवों का दुख टारा।
मुस्कान बाँटी अधरों पर, नाम 'खुशियाल' पुकारा।।

किसुन दास जी

चौथी गद्दी शोभित की, विद्वान किसुन दास।
सतनाम की महिमा गाई, पूर्ण हुआ विश्वास।।

इसरी दास जी

श्री युत इसरी दास आए, भक्ति का मार्ग दिखाया।
निज धाम सिधारे अंत में, भवसागर से पार लगाया।।

तुलसी श्री जी

परमहंस सम तुलसी बाबा, ज्ञान के कल्पवृक्ष समान।
गुणों की खान रहे गुरुवर, बढ़ा रोसड़ा का सम्मान।।

गोविंद दास जी

शिष्य शिरोमणि योगीराज, धीराज गोविंद कहलाये।
विशाल मति से समाज में, योग के दीप जलाये।।

काशी दास जी

आठवीं गद्दी पर विराजे, सुयोग्य काशी दास।
दृढ़ निश्चय और शांत सूरत, जन–जन में विश्वास।।

अवध दास जी

दशम महंत को राह दिखाई, अवध दास अवधूत।
सत्यनाम का दिया मंत्र, बने कबीर के दूत।।

गणेश दास जी

दशम महंत करुणामय, विद्या का दीप जलाया।
कबीर मठ के निकट ही, विद्यालय एक बनवाया।।

जन–कल्याण की राह पर, अपना जीवन वार दिया।
महाप्रयाण कर अमर हुए, जग का उद्धार किया।।

ठाकुर दास जी

गद्दी की गरिमा हेतु, 'ठाकुर' हुए सुयोग्य महान।
सीधा सरल स्वभाव था, विद्वान बने भगवान।।

अवध दास के शिष्य थे, सेवा में दिया जीवन दान।
जन–जन को ज्ञानी किया, दिया कबीर का ज्ञान।।

12 दीप नारायण दास जी (वर्तमान उत्तराधिकारी)

सकल संतों ने साथ मिलकर, 'दीप' को दी है ज्योत।
बारहवें पीठाधीश बने, मठ के योग्य कपोत।।

कबीर विचार की गूँज को, फैलाया दसों दिशाओं में।
सतत प्रयास है गुरु का, महक है सब फिजाओं में।।

रोसड़ा का यह बाग **'लक्ष्मीपुर',** गुरुधाम अति पावन।
भंडारा और सत्संग यहाँ, महक रहा जैसे सावन।।

संजीव कुमार सिंह की लेखनी, करती नमन बारम्बार,।
अमर रहे यह पंथ सदा, जय कबीर, जय गुरु दरबार।।

।। साहित्य की सुरभिः समय सुरभि अनंत ।।

समय के भाल पर अंकित, एक नई पहचान है।
'समय सुरभि अनंत' यह, साहित्य का सम्मान है।।

महथी की इस पावन धरा से, गूँज उठी जो तान है।
नरेंद्र कुमार सिंह के संकल्प का, यह जीवंत प्रमाण है।।

शोध की गहराई इसमें, चिंतन का विस्तार है।
साहित्यिक चेतना की वाहक, यह विचारों का संसार है।।

त्रैमासिक इस संगम में, ज्ञान की धारा बहती है।
हर शब्द में संस्कृति की, एक अनकही कहानी रहती है।।

विभूतिपुर के आँगन से, जो महक उठी यह 'सुरभि'।
दिखा रही है राह नई, जैसे भोर की पहली रवि।।

सत्य, शिव और सुंदर का, इसमें अनुपम मेल है।
लेखनी के माध्यम से, शोध का यह अनूठा खेल है।।

अनंत रहे यह यात्रा, अक्षरों की मशाल जलती रहे।
चेतना की यह संवाहिका, युगों–युगों तक चलती रहे।।

।। साहित्य का शंखनादः साहित्य संदेश ।।

रोसड़ा की पावन धरती पर, एक नया इतिहास लिखा है।
कलमकारों की टोली ने, उन्नति का विश्वास लिखा है।।

वर्ष 2021 की बेला में, जब गूँजा पावन स्वर।
'साहित्य संगम' ने रच डाला, यह अनुपम कीर्ति–शिखर।।

'साहित्य संदेश' का प्रथम अंक, भोर की पहली किरण बना।
साहित्यिक संस्था का हर संकल्प, अब जन–जन का मन बना।।

प्रभंजन, दिवाकर और सुनील के संग, जो पावन ज्योत जगी।
रोसड़ा की साहित्यिक अस्मिता, अब और भी प्रखर लगी।।

रामस्वरूप सहनी 'रोसड़ाई' का, मिला जहाँ आशीष अनूप।
तृप्ति नारायण झा की निष्ठा ने, निखारा इसका रूप।।

उप–संपादक की मेहनत से, यह अंक हुआ है तैयार।
शब्दों के इस उपवन में, आई है आज बहार।।

संजीव कुमार सिंह 'पत्रकार' का, कुशल प्रबंध जहाँ साथ है।
लेखनी की मर्यादा पर, जिनका अटूट विश्वास है।।

साहित्यिक संस्था की शक्ति, और निष्ठा का यह मेल है।
शब्दों के इस महायज्ञ में, निःस्वार्थ सेवा का ही खेल है।।

पहुँचे संदेश यह घर–घर, कि भाषा हमारी शान है।
साहित्य का यह संगम ही, मिथिला का सम्मान है।।

अंक प्रथम है, पर संकल्पों में, सागर सी गहराई है।
सच्चे पत्रकारिता के मूल्यों ने, यहाँ नई राह दिखाई है।।

।। युग दीपः एक आह्वान ।।

धुंधली सी एक याद पुरानी, कागज पर बिखरी है।
समय की धूल में लिपटी, एक मशाल सी निखरी है।।

शीर्षक कहता **'युग दीप'**, जो अंधियारों से लड़ता है।
ज्ञान की लौ के सहारे, जो आगे कदम बढ़ाता है।।

बीच पटल पर अंकित है, वह मंत्र बड़ा ही पावन।
तमसो मा ज्योतिर्गमय–कर दे जो शुद्ध अंतर्मन।।

अंधेरे से हमें ले चलो ज्योति की उस धारा में।
जहाँ सत्य का सूर्य चमके, जीवन के गलियारे में।।

संपादक मंडल की निष्ठा, पन्नों में आज भी जिंदा है।
शिवप्रसाद सिंह 'भारत' का, संकल्प यहाँ साकार है।।

उन बाधाओं से, जो रोकें राष्ट्र की उन्नति की राहों को।
चित्तरंजन और लक्ष्मीनारायण थामें ज्ञान की बाहों को।।

यह मात्र एक पन्ना नहीं, बीते कल की थाती है।
सोए हुए इस समाज को, आज भी ये जगाती है।।

बुझने न पाए **'युग दीप'**, यह हम सबका उत्तरदायित्व है।
साहित्य की इस साधना में ही, मनुष्यता का अस्तित्व है।।

।। संजीवनी बिहारः सच की आवाज ।।

रोसड़ा की पावन माटी से, एक नया दीप प्रज्वलित हुआ।
आरसी नगर एरौत का गौरव, जन–जन में संचरित हुआ।।

शिवशंकर के कुल का दीपक, **रंजना** का जो दुलारा है।
संजीव कुमार सिंह ने कलम थामी, पत्रकारिता को संवारा है।।

वर्ष चौदह की वह बेला, जब नया इतिहास लिखा गया।
आरएनआई का मिला नंबर, सपनों को आकाश दिखा गया।।

अनुमंडल का पहला प्रहरी, जो पंजीकृत कहलाया।
'संजीवनी बिहार' ने सच का, असली रूप दिखाया।।

पाक्षिक है पर वार प्रखर, निष्पक्ष खड़ा हर मोड़ पर।
कलम की ताकत दिखलाता, अन्यायों को छोड़कर।।

'मानव जीवन' की काव्य यात्रा, संग–संग चलती जाती है।
सच्ची खबरें, मीठी वाणी, सबको ही भाती है।।

शुभकामना है इस पथ पर, आप यूं ही बढ़ते जाएं।
बिहार के कोणे–कोणे में, **संजीवनी** का संदेश सुनाएं।।

।। आईना समस्तीपुरः समाज का दर्पण।।

कलम की धार पैनी है, इरादों में रवानी है।
ये **संजीव** के पौरुष की, एक नई कहानी है। 1।

आरसी नगर एरौत की, पावन धूलि माथे पर।
'आईना समस्तीपुर' चमक रहा, अब जन–जन के हाथ पर। 2।

पंद्रह की वह साल थी, जब पत्रिका ने जन्म लिया।
आर एन आई के ठप्पे ने, गौरव का वरदान दिया। 3।

रोसड़ा के इतिहास में, फिर स्वर्ण अक्षर जुड़ गए।
अनुमंडल की पहली पत्रिका, देख सब दंग रह गए। 4।

मासिक है पर हर पन्ने में, सच का अक्स दिखता है।
बेबाकी और साफगोई से, हर शब्द यहाँ लिखता है। 5।

नाम **'आईना'** रखा सार्थक, सच को सच दिखलाने को।
तैयार है ये लेखनी, हर सोये को जगाने को। 6।

संपादक की दूरदृष्टि, समस्तीपुर की शान बनी।
बौद्धिक विमर्श की दुनिया में, एक अमिट पहचान बनी। 7।

यूं ही बढ़ता रहे कारवां, आपकी इस महान कृति का।
सदा वंदन करता है जग, निःस्वार्थ भाव और नीति का। 8।

।। धरोहर की पुकारः कुमार संग्रहालय ।।

हसनपुर की पावन माटी में, इतिहास यहाँ मुस्काता है।
डॉ. मौन का वो पावन संकल्प, आज गौरव गाथा सुनाता है। 1।

मंगल गढ़ से चेचर तक, अवशेष यहाँ की शान हैं।
पाण्डुलिपि और मृण्मूर्तियां, समस्तीपुर की पहचान हैं। 2।

मंगलगढ़ के वो खंडहर, पांड–भरवाड़ी का विस्तार।
पुरानी कला के नमूनों में, बसा अतीत का सारा सार। 3।

मुगलकालीन वो पर्स–फरमान, मध्यकालीन अस्त्र–शस्त्र।
गवाही देते वक्त की, जैसे बदले हों धरती ने वस्त्र। 4।

सिक्के, मोहरें और मनके, मिथिला की लोक चित्रकारी।
सहेज रही है यह संग्रहालय, विरासत अपनी सबसे प्यारी। 5।

किन्तु समय की धूल न जम जाए, इस अनमोल खजाने पर।
अब नजर पड़े सरकार की भी, इस गौरवशाली ठिकाने पर। 6।

अधिग्रहण की दरकार है अब, ताकि बढ़े इसका मान।
जिला संग्रहालय बन जाए यह, तो जाग उठेगा स्वाभिमान। 7।

अतीत सुरक्षित रहेगा तभी, जब वर्तमान हाथ बढ़ाएगा।
हसनपुर का यह कोना, फिर से विश्व पटल पर छाएगा। 8।

।। आस्था का संगमः खैरा वाली दरगाह।।

खैरा की उस पावन धरती पर, सजदा शीश झुकाता है।
बाबा खास का दर ये प्यारा, गंगा–जमुनी तहजीब सिखाता है। 1।

छह सौ वर्षों का इतिहास यहाँ, कण–कण में है समाया।
हजरत खास दुल्लै रहमतुल्लाह ने, प्रेम का दीप जलाया। 2।

ख्वाजा के वो खास खादिम, समस्तीपुर की शान हैं।
हिन्दू–मुस्लिम की एकता के, जीवित ये प्रमाण हैं। 3।

न कोई छोटा, न कोई बड़ा, न मजहब की दीवार यहाँ।
चादरपोशी में मिल जाते, सब एक साथ एक बार यहाँ। 4।

15 रजब का वह मंजर, जब उर्स का मेला सजता है।
बिहार, झारखंड और नेपाल तक, बस एक ही शोर गूंजता है। 5।

कोई मन्नत लेकर आता है, कोई शुक्रिया अदा करने।
बाबा सबकी झोली भरते, आए जो भी अर्जी धरने। 6।

पत्रकार की कलम कहे, यह सिर्फ मजार नहीं एक धागा है।
जिसने नफरतों को पीछे छोड़, इंसानी प्रेम बलबूते जागा है। 7।

रोसड़ा अनुमंडल के खैरा में, जो रूहानी नूर बरसता है।
देख के ये भाईचारा, आज हर भारतीय दिल हरषता है। 8।

।। रोसड़ा अनुमंडलः प्रखंड स्थापना की यशगाथा।।

प्रथम अक्टूबर अट्ठावन को, रोसड़ा का उदय हुआ।
प्रशासनिक गलियारों में तब, नया सवेरा हृदय हुआ। 1।

उसी वर्ष अगस्त पहली को, सिंघिया ने आकार लिया।
विकास की इस नई डगर पर, अपना सब आधार लिया। 2।

तिथि पहली अप्रैल और साल उन्नीस सौ उनसठ (1959) था।
हसनपुर का जन्म हुआ, वह पल गौरव का उत्कर्ष था। 3।

विभूतिपुर की स्थापना का, अक्टूबर साठ (1960) है साल।
सांस्कृतिक थाती समेटे, यह प्रखंड है बेमिसाल। 4।

समय चक्र आगे बढ़ा और आया तेईस फरवरी तिरानवे (1993)।
बिथान बना प्रखंड नया, जन–जन के मन में हर्ष हुए। 5।

उसी वर्ष अगस्त सात को, शिवाजी नगर का हुआ सृजन।
छह रत्नों से सज गया देखो, रोसड़ा का यह पावन आँगन। 6।

छह प्रखंड यह शान हमारी, रोसड़ा अनुमंडल का मान है।
कलमकार **'संजीव'** की दृष्टि में, यह गौरवमयी पहचान है। 7।

लिखते हैं इतिहास क्षेत्र का, पत्रकारिता की धार से।
जुड़ा हुआ है जन–जन इनका, निष्पक्ष और सच्चे प्यार से। 8।

।। सती माँ: आस्था और विरासत ।।

हसनपुर रोड स्टेशन से सटा, शासन का वह कोना है।
आस्था की उस माटी में, आज भी भाव सलोना है। 1।

चार सदियों का इतिहास, यहाँ की पिंडी में सोता है।
रामपुर की उस सती के आगे, हर सर निष्कपट होता है। 2।

अग्नि की उस परीक्षा से, माँ ने कुल को तारा था।
पति–वियोग में सतीत्व का, वह शौर्य सबसे प्यारा था। 3।

आज भी बरगद की शाखों में, वह दुआएँ लटकी रहती हैं।
लोक–कथाएँ आज भी, उनकी गौरव–गाथा कहती हैं। 4।

चैत पूर्णिमा की धूप जब, उदयानी का पर्व लाती है।
सब्जी, दाल और चावल की, खुशबू मन महकाती है। 5।

'आरि' के उस चूल्हे पर, जब पीतल का टोकना चढ़ता है।
बिना स्त्री के स्पर्श के, यहाँ भोग का मान बढ़ता है। 6।

ब्राह्मणों के हाथों से, सती को सामग्री पहुँचती है।
ऊँचे टीले पर बैठी माँ, सबकी अर्जी सुनती है। 7।

चूड़ा–दही का वह प्रसाद, और सिंदूर–टिकुली का चढ़ावा।
न कोई आडम्बर यहाँ, न ही भक्ति का दिखावा। 8।

शकरपुरा–रामपुर के भूमिहार, जिन्हें अपनी कुलदेवी मानते।
विपदा आने से पहले ही, जो माँ की मर्जी जानते। 9।

कहते हैं उस पावन पेड़ की, दिशा ही बदल जाती है।
जब–जब गाँव की दहलीज पर, कोई आफत मंडराती है।10।

यह महज एक थान नहीं, शासन का स्वाभिमान है।
पीढ़ियों से चला आ रहा, अटूट यह विश्वास महान है।11।

पत्रकार की कलम कहे, यह धर्म–कर्म की खान है।
सती माँ के आशीर्वाद से, चमकता हर इंसान है। 12।

।। देवधाः वीरता और विश्वास की गाथा ।।

हसनपुर की उत्तर दिशा में, एक पावन धाम है।
जहाँ गूँजता भक्ति भाव के संग, **श्याम सिंह** का नाम है। 1।

देवधा की पावन धरती पर, मल्ल–युद्ध का शोर हुआ।
क्षत्रिय और बाभन के द्वंद्व में, संघर्ष बड़ा ही घोर हुआ। 2।

वंशीधर से हार गए जब, वीर शिरोमणि श्याम सिंह।
बदले की ज्वाला में जलने लगा, उनका कुल और वंश–सिंह। 3।

पुत्र वीर बालाजी आए, रण के बीच हुंकार भरी।
पिता की हार का बदला लेने, वंशीधर की जान हरी। 4।

खूनी संघर्ष की उस अग्नि में, दोनों पक्ष ही मौन हुए।
किन्तु श्रद्धा की उस धारा में, दोनों ही अब देव हुए। 5।

श्याम सिंह और बाभन (छागर) की, पूजा आज भी होती है।
भक्तों के मन के आँगन में, श्रद्धा की ज्योत पिरोती है। 6।

डोम जाति का तीर्थ बना यह, देश–देश से लोग आते।
शिशु के प्रथम मुंडन की खातिर, सुअर की बलि हैं चढ़ाते। 7।

श्रद्धा और विश्वास का यह, अद्‌भुत एक संगम प्यारा।
समस्तीपुर की धरती पर, बहती भक्ति की पावन धारा। 8।

महकार बाबा का बलिदान

वहीं पूजे जाते महकार, जो डोमों के हैं आराध्य।
गन्ने की खेती करने वालों के, रक्षक और वे साध्य। 1।

नहीं दिया जब गन्ने का रस, किसी अहंकारी जन ने।
तब त्याग की एक मिसाल बनी, बाबा के पावन मन में। 2।

खोलते गुड़ के कड़ाह में, बाबा ने दी अपनी जान।
त्याग और बलिदान का, वह कहलाए ऊँचा मान। 3।

आज भी उनकी गाथा सुनकर, शीश झुक जाता श्रद्धा से।
देवधा की माटी महक रही, इन वीरों की मर्यादा से। 4।

।। हसनपुर की मिठासः एक जीवंत गौरवगाथा ।।

सन् तैंतीस की वह भोर निराली, जब नींव यहाँ मुस्काई थी।
लोभलका परिवार ने रजवाड़े से, उन्नति की अलख जगाई थी। 1।

राजस्थान की माटी का संकल्प, **बिहार** की भूमि पर आया।
हसनपुर के आँगन में तब, **'चीनी मिल'** का सपना छाया। 2।

गूँज उठा जब पहला साइरन, चिमनियों ने धुआँ छोड़ा था।
पिछड़ेपन की जंजीरों को, पुरुषार्थ ने मिलकर तोड़ा था। 3।

बंजर खेतों में जान आ गई, गन्ने की हरियाली छाई।
एक नए औद्योगिक युग की, मंगल बेला पावन आई। 4।

समय का पहिया आगे घूमा, आया उन्नीस सौ सैंतीस का साल।
बिरला बंधुओं ने थामी बागडोर, बदला मिल का सारा हाल। 5।

उनके विजन की शक्ति ने, एक नया संचार किया।
इस कल–कारखाने को उन्नति का, सच्चा आधार दिया। 6।

बढ़ती गई क्षमता मिल की, बढ़ता गया भरोसा गहरा।
हसनपुर के भाग्य–पटल पर, खुशहाली का चमका चेहरा। 7।

तकनीक की नई मशीनों ने, रफ्तार को नया आयाम दिया।
बिरला के कुशल नेतृत्व ने, इसे जग में नाम दिया। 8।

खेतों में जब गन्ने झूमते, किसान का चेहरा खिलता है।
पसीने की हर एक बूँद को, यहाँ उचित मोल मिलता है। 9।

यह मात्र मशीनों का ढाँचा नहीं, यह दाता की उम्मीद है।
हसनपुर की इस मिल में ही, छिपी किसानों की **'ईद'** है। 10।

गन्ने की रसधार यहाँ, जब चीनी बनकर ढलती है।
हजारों चूल्हों की आग इसी, विश्वास की लौ से जलती है। 11।

सौ सालों की ओर बढ़ते कदम, विरासत पर हमें मान है।
हसनपुर चीनी मिल तो बस, किसानों की पहचान है। 12।

आज आधुनिक दौर खड़ा है, तकनीक ने ली अंगड़ाई है।
चीनी के संग इथेनॉल की, नई क्रांति भी आई है। 13।

पर्यावरण और प्रगति का, कैसा सुंदर मेल यहाँ।
श्रम और निष्ठा का बहता, अविरल गंगा–खेल यहाँ। 14।

विरासत को नमन हमारा, भविष्य का हमें इंतजार है।
हसनपुर की यह मिठास, पूरे बिहार का प्यार है। 15।

जब तक खेतों में गन्ना है, यह गौरव गान रहेगा।
हसनपुर मिल का नाम सदा, इतिहास के पन्नों में सजेगा। 16।

।।मंगलगढ़ः गौरव की गाथा ।।

रोसड़ा–सिंघिया पथ पर स्थित, एक गौरवशाली नाम है।
मंगलगढ़ की माटी में छिपा, इतिहास का अनुपम धाम है। 1।

अजमेर के किलों सा घेरा, ऊँचे टीलों की शान यहाँ।
राजा मंगल देव की राजधानी, कहती अपनी पहचान यहाँ। 2।

प्राचीर विशाल बताते हैं, यह वैभव की नगरी रही होगी।
किसी प्रतापी राजा की, यह भव्य डगर रही होगी। 3।

दक्षिण मुखी मुख्य द्वार इसका, भव्यता का द्वार था।
इस पावन भूमि के कण–कण में, सभ्यता का विस्तार था। 4।

हलवाहे जब खेत जोतते, तब स्वर्ण अशर्फियाँ पाते थे।
चाँदी के सिक्के, कौड़ी के घड़े, माटी से बाहर आते थे। 5।

मजदूरी में मिल जाता था, जो भूमि रत्न उगलती थी।
मंगलगढ़ की संपन्नता, दुनिया की आँखों में पलती थी। 6।

आज भी मौजूद हैं भीतर, राजभवन के अवशेष वहाँ।
इतिहास की परतें खोल रहे, बिखरे हुए विशेष वहाँ। 7।

यह केवल खंडहर नहीं सखे, यह पुरखों की अनमोल निशानी है।
मंगलगढ़ के आँगन में लिखी, बिहार की शौर्य कहानी है। 8।

।। रोसड़ा के कलमकार ।।

रोसड़ा की पावन धरती पर, जो ज्ञान की ज्योति जलाते हैं।
कलम हाथ में थामे राही, नित नया सवेरा लाते हैं। 1।

अनुमंडल के उत्थान हेतु, सब एक सूत्र में बंधे हुए।
सच्चाई की खातिर ये सब, कांटों पर चलते जाते हैं। 2।

संजीव कुमार सिंह की लेखनी में, काव्य–रस की धारा बहती।
संपादक की पैनी दृष्टि, हर सच को निर्भय होकर है कहती। 3।

मणिशंकर कुमार 'आज' के प्रहरी, सच की गूँज सुनाते हैं।
शंकर सिंह 'सुमन' 'हिंदुस्तान' के, गौरव को चमकाते हैं। 4।

मनोज ठाकुर 'प्रभात' बनकर, नई किरण बिखराते हैं।
हरेराम चौधरी उपसंपादक बन, शब्दों को नित सजाते हैं। 5।

शम्भू नाथ चौधरी 'जागरण' की लौ, घर–घर तक पहुँचाते हैं।
ये लोकतंत्र के सजग सिपाही, अपना फर्ज निभाते हैं। 6।

पत्रकारिता धर्म इनका, सेवा ही इनका है कर्म।
रोसड़ा की उन्नति ही, इनके जीवन का है मर्म। 7।

शब्दों के इन शिल्पियों को, शत–शत नमन हमारा है।
इन्हीं के साहस से खिलता, प्रगति का नया सितारा है। 8।

।। वारी गॉव की महिमा ।।

जहाँ बहती है जमुआ की पावन धारा।
मिट्टी में जिसके बसता है इतिहास सारा। 1।

समस्तीपुर का वह गौरव, वारी जिसका नाम है।
ऋषि–मुनियों की तपस्थली, यह पावन धाम है। 2।

रिखमन स्थान की महिमा भारी, गाते सब नर–नारी हैं।
पौराणिक गाथाओं में भी, इसकी छवि अति न्यारी है। 3।

सिंघिया और कुशेश्वर स्थान की, यह मध्य कड़ी कहलाती है।
मिथिलांचल के गौरव का, ऊँचा केतु लहराती है। 4।

धरती की कोख से निकले यहाँ, भक्ति के अनमोल रतन।
सहस्रमुखी शिवलिंग देख, धन्य हुआ जन–जन का मन। 5।

मकरमुखी जलढरी और, माँ तारा का रूप अनूप।
खंडित बुद्ध प्रतिमा कहती, समय के कितने बदले रूप। 6।

गुप्तकालीन ईंटें और, नक्काशीदार वे स्तंभ खड़े।
स्थापत्य कला के साक्ष्य यहाँ, सदियों से हैं जड़े हुए। 7।

शिव का प्राचीन मंदिर भी, भव्यता की एक निशानी है।
वारी के कण–कण में बिखरी, एक अमर कहानी है। 8।

।। महिमा गानः सोनूपुर की शारदे ।।

धन्य–धन्य **सोनूपुर** ग्राम, जहाँ विराजीं शारदे नाम।
श्वेत कमल पर आसन माँ का, पूर्ण हो रहे बिगड़े काम।।

वीणा की झंकार जहाँ है, विद्या का उपहार जहाँ है।
रोसड़ा के उस गौरव पथ का, इकलौता श्रृंगार यहाँ है।।

सरकारी वेबसाइट कहती, इस मंदिर की पावन गाथा।
श्रद्धा से झुक जाता सबका, यहाँ ज्ञान की देवी माथा।।

पूरे प्रखंड का मान बढ़ाया, पर्यटन का मान मिला है।
सोनूपुर के इस आँगन में, भक्ति–पुष्प महान खिला है।।

हंस–वाहिनी माँ सुखकारी, बुद्धि–विवेक प्रदात्री है।
अंधकार को दूर भगाती, ज्ञान–किरण की धात्री है।।

भक्त जहाँ जो कुछ भी माँगे, झोली उसकी भरती है।
सोनूपुर की वीणा–वादिनी, मंगल सबका करती है।।

सोनूपुर की पुण्य महि, रोसड़ा का अभिमान। बैठी माँ सरस्वती, करने को कल्याण।।
सरकारी गौरव मिला, महिमा अपरम्पार। शारदे के इस धाम को, नमन करे संसार।।

।। मिथिला की माटी का गौरव ।।

सदियों के इतिहास समेटे, ऊँचे टीलों की काया है।
छियानवे एकड़ के आँगन में, पूर्वजों की छाया है।1।

के. पी. जायसवाल की खोजों ने, दबे राज को खोला है।
मिथिला की इस पावन मिट्टी ने, हर युग में सच बोला है। 2।

प्रथम काल की उन ईंटों में, दो सौ ईसा पूर्व की बात है।
लाल और लोहित मृदभांडों के संग, उस युग की सौगात है। 3।

कहीं टेराकोटा की मूर्तियाँ, कहीं खिलौनों की मुस्कान है।
मिट्टी के पहिए बताते हैं, वह कितना उन्नत विज्ञान है। 4।

द्वितीय काल की छटा निराली, छह सौ से बारह सौ का दौर।
काँच की चूड़ियाँ खनक रही हैं, विकास का नया शोर। 5।

लोहित–श्याम मृदभांड सजे, पत्थर के औजार भी मिलते हैं।
सभ्यता के इन पन्नों में, गौरव के फूल खिलते हैं। 6।

तृतीय काल के सादे बर्तन, बारह सौ ईस्वी के बाद।
पशु–आकृतियाँ, लोहे के टुकड़े, सब दिलाते अतीत की याद। 7।

यह मिट्टी केवल धूल नहीं, यह तो ज्ञान की धारा है।
जहाँ उदयनाचार्य और गोवर्धनाचार्य का बसेरा प्यारा है। 8।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने चूम लिया, इस माटी के पावन कण को।
जाकिर हुसैन ने तिलक लगाया, नमन किया इस पावन मन को। 9।

'भुआ' और **'खल्ली'** के रूप में, जो बच्चों का भविष्य सजाती है।
यह मिथिला की पुण्य धरा, सदियों की कथा सुनाती है। 10।

।। मिथिलाः समय के पदचिह्न और ज्ञान का शिखर ।।

छियानवे एकड़ का वह टीला, मौन खड़ा इतिहास सुनाता है।
खुदाई की हर एक परत में, स्वर्णिम युग खुलता जाता है।।

के.पी. जायसवाल संस्थान ने, जब भूमि का सीना खोदा।
तब निकल पड़ा वह काल–खंड, जो था सभ्यता का योद्धा।।

दो सौ ईसा पूर्व की ईंटें, अब भी कितनी पक्की हैं।
लोहित मृदभांडों की आभा, समय की मार से न थकी है।।

वह मिट्टी के पहिए, वे गाड़ियाँ, प्राचीन प्रगति का रथ थे।
खिलौनों में हँसते बच्चे, जिनके सुंदर उज्ज्वल पथ थे।।

फिर मध्य काल की गूँज उठी, जब चूड़ियाँ काँच की खनक उठीं।
पत्थर के उन औजारों से, निर्माण की किरणें दमक उठीं।।

पशुओं की वे मृण–मूर्तियाँ, जीवंत कला का दर्पण हैं।
मिथिला की शिल्पी हाथों का, यह माटी को समर्पण है।।

यहीं उदयनाचार्य के तर्कों ने, ईश्वर को सिद्ध किया था।
न्याय–शास्त्र की प्रखर ज्योति से, जग को नव–बोध दिया था।।

गोवर्धनाचार्य की वाणी में, सरस्वती साक्षात बसी।
जिनके पांडित्य की कीर्ति–कथा, वेदों के संग–संग कसी।।

वही **'करियन'** की पावन माटी, वही ज्ञान का पावन धाम।
जहाँ दर्शन की सरिता बहती, भोर हो या हो सुखद शाम।।

यह वह भूमि है जिसे नमन, भारत के राष्ट्रपतियों ने किया।
राजेंद्र बाबू और जाकिर हुसैन ने, श्रद्धा का आशीष दिया।।

आज भी उस **'भुआ–खल्ली'** में, बच्चों का अक्षर ज्ञान छुपा।
मिट्टी के उन रंगों में ही, मिथिला का उत्थान छुपा।।

यह केवल पुरातात्विक टीला नहीं, यह चेतना का केंद्र है।
जहाँ हर कण–कण शंकर है, और हर मन एक राजेंद्र है।।

।। शिक्षा के दीपः रोसड़ा के गौरव ।।

जहाँ बहती है ज्ञान की अविरल धारा।
रोसड़ा का वह आँचल सबसे प्यारा। 1।

कलम की ताकत से जिन्होंने नया इतिहास रचा।
उन गुरुओं के चरणों में, सम्मान का दीप जगा। 2।

रामनंदन प्रसाद सिंह की पावन थाती।
समर्था विद्यालय जिसकी यश–गाथा गाती। 3।

विभूतिपुर के आंगन में शिक्षा का सूरज उगाया।
राष्ट्रपति का गौरव पाकर, बिहार का मान बढ़ाया। 4।

वहीं **बागीश झा** ने ज्ञान की अलख जगाई।
शिवाजीनगर के विद्यालय में विद्वता मुस्काई। 5।

त्याग और तपस्या की वे जीवित परिभाषा हैं।
शिष्यों के अंधियारे जीवन में, वे ही आशा हैं। 6।

राजेन्द्र प्रसाद चौधरी का अद्‌भुत है व्यक्तित्व।
समर्था विद्यालय को दिया अपना पूर्ण अपनत्व। 7।

राष्ट्रपति की मुहर लगी जिनके अटूट विश्वास पर।
चमक रहे हैं बन सितारा, वे शिक्षा के आकाश पर। 8।

कपिल देव साहु का संकल्प है बड़ा महान।
समर्था की धरती पर बढ़ाया स्कूल का मान। 9।

विभूतिपुर के इन रत्नों ने गढ़ा नया कीर्तिमान।
कोटि–कोटि नमन उन्हें, जिनसे बढ़ा हमारा सम्मान। 10।

ये शिक्षक नहीं, ये राष्ट्र–शिल्पी कहलाते हैं।
मिट्टी को सोना कर दें, ऐसे हुनर जगाते हैं। 11।

रोसड़ा की पावन माटी इन पर सदा इठलाएगी।
इनके सिखाए मार्ग पर, नई पीढ़ी बढ़ती जाएगी। 12।

।। भीरहा की होली: मिथिला में वृंदावन का स्वरूप ।।

मिथिला की पावन मिट्टी पर, परंपरा का चंदन है।
भीरहा गाँव की होली को, शत–शत मेरा वंदन है।।

दो सौ वर्षों की विरासत, आज भी यहाँ मचलती है।
बूढ़ी गंडक की लहरों में, खुशियों की नाव चलती है।।

वो **'फगुआ पोखर'** का तट, जहाँ जमती है भारी टोली।
पानी में भी रंग घुले हैं, ऐसी है यहाँ की होली।।

तट पर बजते बैंड–बाजे, गूँज रही है शहनाई।
जैसे भीरहा की गलियों में, गोकुल की रंगत आई।।

थिरक उठती हैं नृत्यांगनाएँ, पायल की रुनझुन पर।
लोक–गीतों की लय बहती, हर एक दिल के आँगन पर।।

अबीर के उड़ते बादलों में, दृश्य बड़ा मनभावन है।
लोग यही हैं कहते–'ये तो अपना वृंदावन है'।।

वो हाथी–घोड़ों की रैलियाँ, वो रथों का सजना न्यारा।
जैसे स्वर्ग उतर आया हो, भीरहा का वो गलियारा।।

पारंपरिक वाद्यों के सुर में, गूँज रही है लोक–कला।
यहाँ रंग नहीं बस प्रेम बरसता, जैसे बहती मधुर धारा।।

संस्कृति की इस बगिया को, हम मिलकर सदा सजाएँगे।
भीरहा की इस दिव्य होली को, जग को दिखाएँगे।।

रोसड़ा की इस पावन धरती का, ये अनुपम उपहार है।
जहाँ हर दिल में बसता, फागुन का ही प्यार है।।

।। रोसड़ा की धरोहरः श्री गोशाला ।।

सन् उन्नीस सौ तीन में, जन्मी एक पावन धारा।
भक्तों और समाजसेवियों ने, मिलकर इसे संवारा।।

रोसड़ा की इस पावन माटी में, गूंजी थी हुंकार।
देशी गौवंश के संरक्षण का, सज गया था दरबार।।

धीरे–धीरे बढ़ा कारवां, खुशहाली घर–घर छाई।
दूध की नदियां बहने लगीं, सुख की भोर दिखाई।।

बिहार की उन्नत गोशालाओं में, इसका नाम शुमार हुआ।
गौ–माता की सेवा से ही, सबका बेड़ा पार हुआ।।

पर समय का चक्र फिरा ऐसा, खुशियों को नजर लगी।
नब्बे के उस दौर में देखो, संकट की एक आग जगी।।

छूट गया वह गौरव पीछे, मिटने लगा था नाम–निशान।
दो हजार तक आते–आते, सूना हुआ गौ–धाम महान।।

फिर जागा संकल्प हृदय में, फिर उठी एक नई लहर।
दो हजार चार में जागे, प्रबुद्ध जन और सारा शहर।।

अनुमंडलाधिकारी के साथ मिले, भक्तों के अटूट प्रयास।
भगीरथ सी तपस्या जागी, मन में लौटा नया विश्वास।।

कोई बना गौ–ग्रास रथ, कोई बना सेवा का हाथ।
समिति और पीठ परिषद ने, दिया पूर्ण निष्ठा से साथ।।

आज साठ गौवंशों से, फिर आँगन यह महक उठा।
बछड़ों की उस किलकारी से, कोना–कोना चहक उठा।।

कल जो घाटे में डूबी थी, आज वह लाभ कमाती है।
अंकेक्षण की पारदर्शिता, इसकी साख बढ़ाती है।।

सरकार ने भी हाथ बढ़ाया, मिला जो आर्थिक दान।
वर्मी कंपोस्ट और गैस प्लांट से, बढ़ेगी इसकी शान।।

धन्य हैं वो सेवाभावी, धन्य है यह पावन स्थान।
देशी गायों के संरक्षण का, पूर्ण हो रहा है अभियान।।

रोसड़ा की यह **'श्री गोशाला',** फिर शिखर पर जाएगी।
गौरवशाली इतिहास को अपने, फिर से ये दोहराएगी।।

।। रोसड़ा की संजीवनीः अनुमंडल गौरव ।।

रोसड़ा अनुमंडल पावन, मिथिला का श्रृंगार है।
बागमती की लहरों में ही, बसता सुखद विचार है।।

व्यापारिक गरिमा इसकी, जग में गौरव पाती है।
पुरानी मंडी की रौनक, **'कानपुर'** कहलाती है।।

विभूतिपुर की उर्वर माटी, कर्मवीर की गाथा है।
राजनीति की चेतना से, ऊँचा इसका माथा है।।

श्रम और संघर्ष यहाँ के, जन–जन की ही थाती है।
क्रांति और बलिदानों की, यह पावन परिपाटी है।।

बिथान की कोसी का आंचल, जल की शक्ति संजोता।
मत्स्य संपदा का वैभव, यहाँ प्रगति के बीज है बोता।।

बाढ़–धार के संकट में भी, साहस कभी न सोता है।
मेहनत के ही बल पर यहाँ, नया सवेरा होता है।।

सिंघिया के पावन तट पर, शिव की महिमा भारी है।
फुलेश्वर महादेव की, भक्ति यहाँ सबको प्यारी है।।

बस्ता पोखर की पाटी पर, नया नाम अब शोभित है।
शिवाजीनगर के पौरुष से, सारा प्रान्त प्रमुदित है।।

हसनपुर की चीनी मिल में, घुली मधुर सी बोली है।
किसानों की कठिन तपस्या, खुशियों की हमजोली है।।

रेल मार्ग की धड़कन से, यह शहर सदा ही सजता है।
व्यापार और विकास का, डंका चहुँदिश बजता है।।

रोसड़ा की संजीवनी में, साक्ष्य सत्य का पाया है।
संजीव की पैनी लेखनी ने, इतिहास सजाया है।।

छंदों के हर स्वर में अपना, मान यहाँ का जीवित है।
माटी का हर एक कोना, काव्य–पुष्प से सिंचित है।।

||उदयनाचार्य का विद्या मंदिरः गौरवशाली पूर्ण गाथा ||

रोसड़ा की पावन धरा पर, विद्या का जो दीप जला।
उदयनाचार्य के आँगन में, ज्ञान का सुंदर पुष्प खिला।।

1960 के स्वर्णिम दशक में, रखी गई जब नींव महान।
प्रो कैलाश पति प्रथम सारथी, बनकर आए पथ–प्रधान।।

नामों की इस पावन सूची में, छिपी कर्म की लाली है।
प्रो श्याम नारायण ठाकुर ने, सींची इसकी हर डाली है।।

प्रो श्याम सुन्दर दास का, अल्प किंतु पावन काल रहा।
फिर ठाकुर जी के कुशल नेतृत्व में, यह उपवन खुशहाल रहा।।

तेज नारायण सिंह ने दी, अपनी सेवाओं की थाती।
डॉ. विपिन बिहारी ठाकुर की, विद्वत्ता जग को भाती।।

डॉ. के. पी. यादव ने भी, गौरव का ध्वज लहराया।
डॉ. भाग्य नारायण चौधरी ने, अपना पूर्ण सहयोग निभाया।।

प्रो फूलेंदु कुमार राय ने, मर्यादा को मान दिया।
प्रो शिव शंकर प्रसाद सिंह ने, अनुशासन का दान दिया।।

डॉ. शंभू नाथ झा के हाथों, शिक्षा की अखंड ज्योत जली।
प्रो रामजी महतो की सेवा से, कॉलेज की गरिमा और फली।।

डॉ. दिलीप कुमार ने बनकर, प्रधानाचार्य का मान बढ़ाया।
डॉ. जय रामदास ने भी, अपना अनूठा कौशल दिखलाया।।

डॉ. सुनीति कुमारी की ममता, और डॉ. आनंद मोहन झा का ज्ञान।
डॉ. मो. शमीम अहमद ने, बढ़ाया इस मंदिर का मान।।

प्रो प्रवीण कुमार प्रभंजन ने, सक्रियता का पाठ पढ़ाया।
डॉ. घनश्याम राय ने भी, अपना पूर्ण योगदान निभाया।।

डॉ. मीना प्रसाद ने पद की, शालीनता और गरिमा रखी।
प्रो. (डॉ.) अजय कुमार संग अब, उज्ज्वल भविष्य की आस जगी।।

यह केवल नाम नहीं मित्रों, ये संघर्षों की गाथा है।
ज्ञान के इस पावन मंदिर में, झुकता सबका माथा है।।

।। मुरादपुर–हरिपुरः दिलों का सेतु ।।

मुरादपुर और हरिपुर का, नाता बड़ा पुराना है।
बीच खड़ी जलधारा पर, पुल बना एक बहाना है।।

एक छोर पर मुरादपुर की, ऊँची धमक दिखाई दे।
दूजे छोर से हरिपुर की, मीठी गूँज सुनाई दे।।

यह पुल नहीं, यह संगम है दो गाँवों की खुशहाली का।
साक्षी है यह सती स्थान और खेतों की हरियाली का।।

रिश्ते–नाते, आना–जाना, इसी राह से होता है।
हरिपुर का हर सुख–दुख अब, मुरादपुर भी ढोता है।।

पुल के ऊपर बढ़ते कदम, मेल–जोल की बात करें।
साँझ ढले जब लोग मिलें, तो प्यार भरी मुलाकात करें।।

विकास की नई लहर चली, सिक्स–लेन भी अब पास है।
पर इस पुराने पुल से जुड़ा, हर ग्रामीण का अहसास है।।

।। बैद्यनाथपुर के छह खूँटः गुलाब चौधरी वंश–गाथा ।।

बैद्यनाथपुर की पावन धरती, गौरवमय इतिहास है।
गुलाब चौधरी के कुल का, यहाँ अनूठा प्रकाश है।।

एक जड़ से छह शाखाएँ, छह खूँटों का गाँव बना।
शौर्य, प्रेम और एकता से, यह सुंदर परिवार तना।।

प्रथम खूँट **राम सिंह चौधरी** का, मान बढ़ा कुल का।
खड़ग नारायण दूजे खूँट, संबल बने जो मूल का।।

तीजे **जुरी प्रसाद** हुए, जिनका स्नेह अपार रहा।
चौथे खूँट **वेदानाथ** से, महका यह संसार रहा।।

मधुरापति ने पाँचवें खूँट की, सुंदर रीत चलाई थी।
बलवंत छठे खूँट बनकर, कुल की कीर्ति बढ़ाई थी।।

छह भाइयों का यह संगम, जैसे छहों दिशाएँ हैं।
इनकी उज्ज्वल संतति को, कोटि–कोटि दुआएँ हैं।।

बैद्यनाथपुर के कण–कण में, इनका ही पुरुषार्थ बसा।
हर खूँट की अपनी गाथा, अपनी ही एक दिव्य दसा।।

गुलाब की पंखुड़ी सम ये, मिलकर गाम सजाते हैं।
पूर्वज की उस थाती को, सब मिलकर आज निभाते हैं।।

।। छोटा–सा एक गॉव मोहम्मदपुर ।।

रहुआ और ढरहा बाईपास की, गोद में जो मुस्काता है।
सोनूपुर उत्तर पंचायत का, **मोहम्मदपुर** वह कहलाता है।।

छोटा सा शिव मंदिर प्यारा, श्रद्धा का दीप जलाता है।
जहाँ हर कौम और हर जाति का, अटूट रिश्ता नजर आता है।।

ततमा, पासवान, तेली, कानू, और धोबी की पहचान यहाँ।
दलित और मुस्लिम भाइयों का, बसता है अरमान यहाँ।।

सब मिलजुल कर रहते ऐसे, जैसे फूलों की एक माला हो।
हर आँगन में भाईचारा, हर दिल में उजियाला हो।।

प्राथमिक विद्यालय की चौखट पर, नौनिहाल सब पढ़ते हैं।
संजय, संजीव और लक्ष्मी जी, बच्चों के भविष्य गढ़ते हैं।।

शिक्षा की अलख जगाकर ये, अज्ञान का अंधेरा हरते हैं।
सच्चे गुरु बनकर ये तो, सबका जीवन सँवरते हैं।।

श्रवण साहु और अजय रजक, पुलिस की वर्दी शान है।
बिहार की सेवा करने का, उनमें एक जुनून महान है।।

सरपंच बनी पूजा कुमारी, न्याय की नई मिसाल है।
मोहम्मदपुर का बच्चा–बच्चा, आज बड़ा खुशहाल है।।

।। करियनः ज्ञान की शाश्वत धरोहर ।।

मिथिला की पावन मिट्टी पर, एक दीप प्रज्वलित हुआ जहाँ।
शिवाजीनगर के करियन में, गूँजा था न्याय का स्वर वहाँ।।

उदयनाचार्य की जन्मधरा, यह दर्शन का आधार बनी।
तर्क–शास्त्र की चिंगारी से, मानवता की ढाल बनी।।

वह वर्ष अठारह (2018) यादों में, उत्सव का उल्लास लिए।
श्रद्धा के फूलों की खुशबू, पावन सा विश्वास लिए।।

मना **'उदयनाचार्य पर्व'** प्रखर, विद्वानों का समागम था।
करियन की गलियों में जैसे, उतरा कोई संगम था।।

निकली **'धरोहर'** स्मारिका, पन्नों में इतिहास सजा।
पूर्वजों की गौरव–गाथा का, फिर से शंखनाद बजा।।

शब्दों में अंकित शौर्य हुआ, स्याही में बहती ज्ञान–धारा।
जिसने जन–जन को याद दिलाया, अपना वह गौरव प्यारा।।

बागमती की लहरों ने भी, वंदन उन चरणों का किया।
जहाँ तर्क ने ईश्वर की सत्ता को, सुंदर प्रमाण दिया।।

करियन केवल ग्राम नहीं, यह भारत का अभिमान है।
उदयन की सूक्ष्म प्रज्ञा का, जीवित सा संज्ञान है।।

आओ हम सब मिलकर फिर से, उस विरासत को नमन करें।
अपनी पावन इस धरोहर का, जन–जन में संचरण करें।।

शिवाजीनगर के आँगन में, वह ज्ञान दीप फिर जले सदा।
करियन की पावन माटी का, मस्तक ऊँचा रहे सदा।।

।। रण–बांकुरेः जयदेव और सूर्यदेव ।।

मथ्या पोखर का वह तट था, और न्याय की प्यास थी।
दो वीरों के कंधों पर ही, अब तो धर्म की आस थी।।

एक ओर मदमत्त खड़ा था, सात सौ का लाव–लश्कर।
दूसरी ओर थे खड़े अकेले, दो वीर अभय निडर होकर।।

जयदेव की तलवार खिंची जब, बिजली सी कड़काई थी।
सूर्यदेव की भृकुटि चढ़ी तो, शाम आफत बन आई थी।।

भौर के उस पापी राजा को, ललकार उन्होंने दी ऐसी।
जैसे काल ने स्वयं डकारी, सिंहों की गर्जना जैसी।।

छप–छप गिरते मुंड वहाँ पर, रक्त की धारा बह निकली।
अन्याय के उस सिंहासन की, जड़–बुनियादें ढ़ह निकली।।

धार नगर के उन वंशज ने, मिट्टी का कर्ज उतारा था।
सात सौ को धूल चटाकर, अधर्म को पछाड़ा था।

छू न सका कोई डोली को, मर्यादा अभिजित खड़ी रही।
वीर भाइयों के पौरुष से, जीत वहाँ पर अड़ी रही।।

राजा का वह मस्तक काटा, पातक का अंत किया भारी।
सिंधिया की पावन माटी ने, गाई उनकी बलिहारी।।

आज भी पोखर की लहरों में, शौर्य की गूँज सुनाई है।
जयदेव–सूर्यदेव की जोड़ी, इस धरती की परछाई है।।

उन परमारों के पौरुष को, शत–शत बार नमन मेरा।
जिनके कारण आज हुआ है, न्याय का यहाँ नया सवेरा।।

।। शिवाजीनगरः विकास और विरासत की गाथा।।

बस्ता पोखर की पावन मिट्टी, पुरानी एक कहानी है।
जहाँ लहरों के तट पर बसी, छोटी सी आबादी है।।

पोखर के उस शांत किनारे, जीवन का आधार मिला।
नाम मिला था **'बस्ता पोखर',** खुशियों का संसार मिला।।

पर हृदय में गूँजी गूँज वही, जो वीरों की ललकार थी।
छत्रपति के प्रति श्रद्धा की, मन में उठी पुकार थी।।

बदला नाम, मिली पहचान, **शिवाजीनगर** कहलाया।
महान राष्ट्रनायक के चरणों में, अपना शीश झुकाया।।

वह लालू यादव का दौर रहा, जब सत्ता जन–जन तक पहुँची।
पिछड़ों और वंचित की आवाज, अम्बर तक थी उठी ऊँची।।

उनके शासन की छाया में, विकास ने ली अँगड़ाई थी।
'बस्ता पोखर' की किस्मत ने, अपनी राह बनाई थी।।

मंत्री गजेन्द्र सिंह सारथी बने, रोसड़ा की उस पावन धरती के।
सूचना–जनसंपर्क की शक्ति से, द्वार खुले थे उन्नति के।।

दस अगस्त तिरानवे (1993) को, एक नया इतिहास बना।
शिवाजीनगर तब प्रखंड बना, जन–जन का विश्वास बना।।

डीएम फैज अकरम साक्षी थे, उस गौरवशाली पल के।
रखी गई थी नींव तभी, खुशहाल और सुनहरे कल के।।

आज सत्रह पंचायतों का, यह शान से नेतृत्व करता है।
समस्तीपुर की गोदी में, प्रगति के रंग भरता है।।

।। शिक्षा का पावन मंदिरः शिवाजीनगर।।

वर्ष उन्नीस सौ अड़तालीस की, वह सुबह बड़ी कल्याणी थी।
जनवरी की पावन बेला में, लिखी एक नई कहानी थी।।

दो तारीख का वह दिन, जब शिक्षा की ज्योत जगी।
शिवाजीनगर की माटी में, ज्ञान की अविरल धार बही।।

सचिव बिहार के पत्र ने, जब दी इसे पहचान नई।
अंधियारे को चीरकर देखो, उजली एक मुस्कान गई।।

उच्च विद्यालय के रूप में, खड़ा हुआ यह स्वाभिमान।
हर बच्चे के सपनों को, यहाँ मिला था नया उड़ान।।

ईश्वरी प्रसाद मंडल जी का, पावन तप और त्याग रहा।
भागलपुर की धरती का, वो अनमोल अनुराग रहा।।

प्रथम प्रधानाध्यापक बनकर, सींचा जिसने इस उपवन को।
कोटि–कोटि नमन है उस, विद्या के सच्चे तपस्वी को।।

कलम यहाँ तलवार बनी, और अक्षर बने हैं ढाल यहाँ।
इतिहास के पन्नों पर अंकित, विद्यालय का भाल यहाँ।।

ज्ञान की ये अविरल धारा, युग–युग तक यूँ ही बहती रहे।
शिवाजीनगर की ये गाथा, दुनिया हमसे कहती रहे।।

।। अड़रिये ब्राह्मणः शौर्य और संस्कार।।

शांडिल्य वंश की ज्योति जली, मर्यादा का विस्तार हुआ।
अड़रिये विप्रों की गाथा से, मिथिला का गौरव द्वार हुआ।।

ऋषि शांडिल्य के वंशज हम, वेदों की ऋचाएं गाते हैं।
नौ गांवों की इस पावन माटी में, हम अपना शीश नवाते हैं।।

रोसड़ा की धरती पावन, जहाँ **भीरहा** का मान बसा।
ढ़रहा की अनुपम आभा है, महरौर में स्वाभिमान जगा।।

प्रखंड की सीमाओं में देखो, संस्कृति की धारा बहती है।
इन गांवों की चौपाल यहाँ, पुरखों की गाथा कहती है।।

शिवाजीनगर की गोद सजी, **बंदा** के ऊँचे भालों से।
दसौत गांव की रौनक है, उत्सव और मंगल गानों से।।

त्याग और तप की खुशबू से, यह सारा आँगन महका है।
अड़रिये कुल के दीपों से, हर घर–आँगन यहाँ चहका है।।

देकुली की धरती चंदन है, **जगन्नाथ पुरी** सा धाम यहाँ।
हांसी की मुस्कान निराली, **बैरमपुर** को प्रणाम यहाँ।।

नौ गांवों की यह माला, एक सूत्र में पिरोई है।
शांडिल्य गोत्र की साख यहाँ, पुरखों ने कभी न खोई है।।

ज्ञान, शील और धर्म कर्म, यही हमारी थाती है।
अड़रिये ब्राह्मण की संताने, अपनी राह बनाती हैं।।

इन नौ रत्नों सा सजा रहे, अपना यह प्यारा संसार।
बना रहे सदा अटूट यहाँ, ब्राह्मण कुल का सदाचार।।

।। गौरवगाथाः भीरहा गांव।।

रोसड़ा की पावन धरती पर, जो सबसे बड़ा कहलाता है।
अपनी लंबी राजनीतिक विरासत का, गौरव–गान सुनाता है।।

बूढ़ी गंडक की लहरों–सा, जहाँ जन–चेतना का विस्तार है।
भीरहा वह गांव है, जहाँ राजनीति का ऊँचा दरबार है।।

कदम–कदम पर यहाँ छिपी है, संघर्षों की अमर कहानी।
दिग्गज नेताओं ने सींची है, इस मिट्टी से अपनी जवानी।।

वृंदा प्रसाद राय के नाम से, जिसकी साख और पहचान रही।
जनसेवा की राह दिखाने में, जिनकी एक अलग ही शान रही।।

सदन की उन ऊँची कुर्सियों तक, जब भीरहा की गूंज गई।
राम बहादुर राय के रूप में, नेतृत्व की नई राह नई।।

विधान परिषद सदस्य बन, उन्होंने गांव का मान बढ़ाया।
अनुशासन और राजनीति का, सबको सच्चा पाठ पढ़ाया।।

फिर **रामाश्रय राय** आए, जिन्हें सब 'बच्चा बाबू' कहते।
जनता के सुख–दुख की धारा में, जो बनकर सेवक बहते।।

विधायक बन कर सदन में, जब उठाई उन्होंने अपनी आवाज।
भीरहा के माथे पर सज गया, नेतृत्व का वह गौरव–ताज।।

खेती, खलिहान और राजनीति, इसकी रग–रग में बसती है।
पुरखों की दी हुई विरासत, आज भी यहाँ हँसती है।।

विशाल क्षेत्र, ऊँचे आदर्श और बड़ा है यहाँ का मान।
रोसड़ा की शान **'भीरहा'**, लोकतंत्र की अमिट पहचान।।

।।युवक संघ भीरहाः सेवा का एक शतक।।

रोसड़ा प्रखंड की पावन माटी, **भीरहा** का अभिमान है।
युवक संघ की गौरव गाथा, हम सबकी पहचान है।।

सन् उन्नीस सौ छत्तीस में, जो एक बीज बोया था।
आज खड़ा है वटवृक्ष बन, जिसने खुशियों को संजोया था।।

आर्थिक रीढ़ है इस गाँव की, उन्नति का आधार यही।
संकट में जो हाथ बढ़ाए, वह सच्चा मददगार यही।।

जन–सहयोग के दीप जलाकर, बदली जिसने तस्वीर यहाँ।
सेवा और समर्पण की जो, लिखता नई तहरीर यहाँ।।

अस्सी–नब्बे पार हुए अब, शतक लगाने की बारी है।
युवक संघ के कर्मठ वीरों, अब तुम्हारी तैयारी है।।

पुरखों का संकल्प संजोए, बढ़ते जाना है हरदम।
भीरहा के इस स्वर्ण शिखर पर, गूँजे खुशियों के सरगम।।

नमन है उन हाथों को, जिसने इस नींव को डाला था।
नमन है उनको, जिन्होंने इस मशाल को पाला था।।

सौ साल की ये साख हमारी, युगों–युगों तक चमकती रहे।
युवक संघ की सेवा की खुशबू, कण–कण में महकती रहे।।

।। सावर्ण वंश की यश–गाथा।।

यह पावन सा गाँव हमारा, सबसे बड़ा ही न्यारा है।
अद्भुत और अद्वितीय इसकी, गौरवमयी हर धारा है।।

पंचोभ से चलकर आए थे, **भंभरनाथ** वीर मतिमान।
हरगंगा से भानपुर पहुँचे, रचने को एक नया विधान।।

बारह गाँवों का उदय

एक पुरुष की तपस्या से, बारह गाँवों का बीज पड़ा।
इतिहास के हर पन्ने पर, जिनका मान सदा ही बड़ा।।

भानपुर और **बारहगामा, बल्लीपुर, गाहर** महान।
परवाना, बन्धार बसे फिर, **करियन, गायघाट** सुजान।।

ठाहर, बैद्यनाथपुर सोहे, **टेंग्राहा** का मान बढ़ा।
हसनपुर, नवटोल, गुदारघाट पर, खुशहाली का रंग चढ़ा।।

महादेव का पावन धाम

बारह गाँवों के बुजुर्गों ने, मिलकर एक विचार किया।
भानपुर की पावन भूमि पर, शिव मंदिर का द्वार किया।।

लाल संगमरमर का वह मंदिर, श्रद्धा की एक मूरत है।
'भंभरनाथ महादेव' की, उसमें सुंदर सूरत है।।

कुल और गोत्र की पहचान

पंचोभ मूल, भानपुर डेरा, **सावर्ण** ऋषि की संतान हैं।
हम उन्हीं पूर्वजों के वंशज, हम उनकी ही पहचान हैं।।

'सावर्ण गोत्र' रगों में बहता, मर्यादा की खान है।
अपने पूर्वजों की यह विरासत, करते सबका सम्मान है।।

।।रोसड़ा का गौरवः उदयनाचार्य कॉलेज।।

मिथिला की पावन धरती पर, ज्ञान का एक उजाला है।
बूढ़ी गंडक के आँचल में, यह शिक्षा का रखवाला है।।

रोसड़ा की इस माटी का, जो मस्तक और गौरव है।
उदयनाचार्य कॉलेज में, बसता विद्या का सौरभ है।।

महान न्यायविद के नाम पर, जिसकी नींव रखी गई।
सपनों को सच करने की, जहाँ रीत नई लिखी गई।।

मिथिला विश्वविद्यालय से, इसकी संबद्धता अटूट है।
प्रगति की इस राह में, मिलती सबको यहाँ छूट है।।

इसी प्रांगण की माटी से, निखरकर व्यक्तित्व आए हैं।
यहीं से **संजीव कुमार सिंह** ने, शिक्षा के दीप जलाए हैं।।

इंटर और बी.ए. की डिग्री, इसी पावन द्वार से पाई।
ज्ञान की उस तपस्या ने, जीवन में नई चमक दिलाई।।

कला, विज्ञान और संस्कृति की, यहाँ बहती निर्मल धारा है।
रोसड़ा के हर युवा का, यह सबसे प्रिय सहारा है।।

खेत–खलिहानों के बच्चे, यहाँ भविष्य अपना गढ़ते हैं।
कठिन डगर पर चलकर भी, वह ऊँचे शिखर चढ़ते हैं।।

डिग्री का यह केवल घर नहीं, संस्कारों की खान है।
समस्तीपुर के आँगन में, यह कॉलेज एक वरदान है।।

शहर की धड़कन, ज्ञान का केंद्र, यह गौरव गान निराला है।
उदयनाचार्य की धरती का, यह सबसे सुंदर शिवाला है।।

।। हमारा गौरवः सिंघिया ।।

बागमती की धार सजाती, जिसका पावन आँचल है।
कमला की लहरों में बहता, सुखद यहाँ का पल–पल है।।

मिथिला की इस पावन भू का, हृदय–हार यह कहलाता।
सिंघिया की माटी का गौरव, जन–जन मिलकर है गाता।।

बाबा फुलेश्वर का मंदिर, श्रद्धा का विश्वास यहाँ।
शिव–शंभू के जयकारों से, गूँज रहा आकाश यहाँ।।

देकुली की चौखट पर आकर, शीश नवाता जग सारा।
भक्ति–भाव की बहती रहती, पावन अमृत सी धारा।।

खेतों में है सोना उगता, मक्का मन को हरती है।
कृषक पुत्र की मेहनत ही तो, सबका पेट यहाँ भरती है।।

हाट–बाजारों की रौनक में, आपसी प्रेम झलकता है।
हर घर के पावन आँगन में, भाईचारा पलता है।।

बाढ़–धार की कठिन डगर भी, डिगा न पाई धीर यहाँ।
संकट में भी लड़ना जानते, ऐसे हैं सब वीर यहाँ।।

निरसू बाबू की यह स्थली, ज्ञान–दीप को जला रही।
सिंघिया की वीर प्रसूता, अपनी कथा सुना रही।।

माछ–भात की सोंधी खुशबू, मिथिला का यह सार है।
अरपन की पावन कला का, मिलता यहाँ विचार है।।

प्राणों से भी प्यारा हमको, अपना यह प्रखंड है।
गौरवमयी इतिहास यहाँ का, अद्‌भुत और अखंड है।।

।। मेरा गौरवः प्यारा बिथान।।

जहाँ कोशी, कमला, बागमती का पावन संगम होता है।
जहाँ रेतीली मिट्टी में भी सोना अनुपम उगता है।।

जहाँ चार जिलों की सरहदें, आकर गले मिलती हैं।
जहाँ करेह की लहरों में, सुनहरी यादें पलती हैं।।

तेरह पंचायतों का कुनबा, गौरव की ये गाथा है।
सखवा, बेलसंडी, नरपा का ऊँचा रहता माथा है।।

सलहा, सोहमा और पुसहो, जगमोहरा की पावन धार।
करांची, सिहमा, उजान में बसता सबका सच्चा प्यार।।

छप्पन राजस्व ग्रामों की, अपनी एक कहानी है।
कहीं खेत लहलहाते, कहीं नदियों की रवानी है।।

बाणेश्वर की घंटियों से, जहाँ भोर जगाई जाती है।
मंदिर की उन चौखटों पर, हर मुराद पाई जाती है।।

जगमोहरा की संगम स्थली पर, जब मेला सजता है।
श्रद्धा के पावन स्वर से, कोना–कोना गूंजता है।।

बागमती और करेह की, यहाँ कल–कल बहती धार है।
मछली और मखानों से सजी, यह धरती सुखसार है।।

मेहनतकश हाथों ने यहाँ, सोना सदा उगाया है।
मक्का और मिर्ची की लाली ने, आँचल को सजाया है।।

सामा–चकेवा की परंपरा, और झिझिया का वह ताल।
मिठास यहाँ की बोली में, और भाईचारा बेमिसाल।।

सरल हृदय हैं लोग यहाँ के, अतिथि देवो भवः मान है।
विकास की राह पर बढ़ता, मेरा सुंदर बिथान है।।

चाहे जाऊं दूर कहीं मैं, मन तो यहीं रमता है।
इस मिट्टी की सौंधी खुशबू में, सारा जग थमता है।।

सलाम है इस पावन धरा को, जहाँ सुकून का वास है।
बिथान केवल जगह नहीं, मेरा अटूट विश्वास है।।

समस्तीपुर की शान है जो, मिथिला का अभिमान है।
हृदय में जो बस जाए, वही मेरा बिथान है।।

।।रोसड़ा का गौरवः मुक्केबाज बेटियाँ।।

मिथिला की पावन मिट्टी से, एक नया इतिहास निकलता है।
जहाँ चूड़ियों की खनक नहीं, अब मुक्कों का दम पलता है।।

रोसड़ा के उस आँगन में, **डॉ. श्यामा दत्त** का मान बढ़ा।
जब सेवा और समर्पण का, हर ओर यहाँ पर गान बढ़ा।।

श्वसुर बने वटवृक्ष जहाँ, श्यामा दत्त की छाया है।
जन–सेवा ही धर्म बना, बस प्रेम सभी से पाया है।।

उनके घर की बहुओं ने, अद्भुत साहस का रूप लिया।
विश्व पटल पर भारत का, मस्तक सबसे ऊँचा किया।।

अरुणा की वह स्वर्ण चमक, नॉर्वे की धरती डोल गई।
जब **'गोल्ड'** जीत भारत की, वह ताकत जग में बोल गई।।

बड़ी बहू ने रिंग के अंदर, पंचों से तूफान लिखा।
झारखंड की खाकी पहन, फिर वर्दी का सम्मान लिखा।।

संग खड़ी करुणा भी है, जो सगी बहन और देवरानी।
दोनों ने मिल मुक्केबाजी में, लिख दी नई कहानी।।

तीसरी बहन भाग्यश्री ने, भी वह रीत निभाई है।
मिश्रा जी की इन बेटियों ने, दुनिया में धाक जमाई है।।

बड़ों का वह अनुशासन, और बड़ों का मिला जो आशीष।
आज झुकाती है दुनिया, इन बेटियों के आगे शीश।।

एक तरफ है डॉक्टरी सेवा, दूजी ओर मुक्केबाजी।
रोसड़ा के इस आँगन पर, आज विधाता भी है राजी।।

।। सिसोदिया शौर्यः थतिया से एरौत तक।।

जयपुर–जोधपुर की माटी से, शौर्य साथ लेकर आए।
वीर सिसोदिया क्षत्रिय वे, **'काकन'** वंशज कहलाए।।

भार्गव गोत्र का तेज लिए, बारह गाँवों का मान बढ़ा।
इतिहास के हर एक पन्ने पर, इस वंश का नाम चढ़ा।।

सुरजन सिंह और **चैन सिंह** से, **एरौत** की है शान बढ़ी।
महाराजा भवानी सिंह से, **थतिया** की पहचान बनी।।

थतिया, गोविंदपुर, दामोदरपुर, रोसड़ा का विस्तार हुआ।
बलाही, सारी, हांसा, केशोर, केसोपट्टी का आधार हुआ।।

मणिपुर और शेखोपुर तक, यह कुल–दीप सदा ही जला।
राम प्रसाद, राम कृपाल की, यह वीर गाथाओं संग चला।।

राम कृपाल जैसे वीर लड़े, अंग्रेज हुकूमत से जाकर।
खौफ खाती थी गोरी सत्ता, उनका साहस पहचान कर।।

दौलतपुर की कोठी में, उस वक्त बैंक का काम चला।
नुनु प्रसाद के शासन में, राजनगर का नाम फला।।

दरभंगा महाराज के स्टेट को, कुशलता से उन्होंने सम्भाला।
पर हृदय में था वैराग्य भरा, और त्याग का बहता नाला।।

रक्सौल और सीतामढ़ी की, संपत्ति प्रभु को वार दी।
बेगूसराय की जागीरें भी, मंदिर हित में उतार दी।।

निःसंतान नुनु बाबू ने, हरिवंश नारायण को अपनाया।
ठाकुर राधे गोपाल का, उन्हें 'सेवैत' बनाया।।

हरिवंश बाबू के नाम से, रोसड़ा में विद्या का धाम बना।
दत्तक पुत्र विदुशेखर ने, सेना में मेजर का सम्मान चुना।।

बासठ 1962 की रणभूमि में, मेजर ने शौर्य दिखाया था।
तिरसठ 1963 में एमआईटी को, अनुशासन सिखलाया था।।

आध्यात्मिक सेवा की रीत, मेजर ने भी खूब निभाई।
राधे गोपाल, भगवती, बिषहरी की मूरत सजवाई।।

थतिया में माँ दुर्गा का, अद्भुत दरबार रचाया।
चकथात के कण–कण को, भक्ति के रस में नहलाया।।

उनके सुपुत्रों ने फिर से, इस वंश का मान बढ़ाया।
देवेन्द्र जी और भानू बाबू ने, कुल का दीप जलाया।।

देवेन्द्र जी के चार रत्न, अब नई राह गढ़ रहे हैं।
प्रकाश, सुभाष, ईशान कृपाल, और अनामिका बढ़ रहे हैं।।

महाराष्ट्र में बेटी का, है डायरेक्टर का बड़ा पद।
काकन वंश का नाम आज, छूता अम्बर की हर सरहद।।

राजस्थान की तलवार और, बिहार की विद्या संग–संग।
अमर रहे यह काकन वंश, विजय के पावन हर रंग।।

ध्यानार्थः काकनवंशीय बारह गांवों का सम्पूर्ण इतिहास की मेरी पुस्तक ।। सिसोदिया शौर्यः काकनवंशीय क्षत्रिय।। नाम की पुस्तक में पढें, इसमें जगह अभाव के कारण छोटी सी एक रचना शामिल है ।

।। महादेव मठ का कबीर गुरूद्वारा।।

महादेव की पावन नगरी, भक्ति का आधार यहाँ।
सत्य कबीर की वाणी का है, बहता पारावार यहाँ।।

कबीर पंथ की ज्योति जगाता, यह दूजा दरबार निराला।
ज्ञान–पुंज से मिटा रहा है, जन–मन का हर एक अँधियारा।।

रामजीवन विद्यानंद की, श्रद्धा की यह पावन भूमि।
जहाँ प्रेम की अविरल धारा, कण–कण को है हरपल चूमी।।

स्थापना का ध्येय रहा है, जन–जन का कल्याण यहाँ।
मानवता ही धर्म श्रेष्ठ है, मिलता यह वरदान यहाँ।।

आडंबर से दूर सदा यह, सेवा का संदेश सुनाता।
शांति की इस शीतल छाँव में, हर कोई सुख पा जाता।।

कबीर शोध और विद्या का, यह अनुपम पावन धाम है।
रोसड़ा की गौरव–गाथा में, जुड़ा हुआ यह नाम है।।

दूर–दूर से आते हैं जन, लेकर मन में अटूट विश्वास।
सद्‌गुरु की इस दिव्य धरा पर, पूर्ण होती सबकी आस।।

जाति–पाति के भेद मिटाकर, सबको गले लगाता है।
महादेव मठ का कबीर द्वार हमेशा, सद्‌भाव ही सिखलाता है।।

।। गौरव-ग्रामः हमारा एरौत।।

नमन करूँ उस पावन रज को, जो विद्वानों की खान है।
रोसड़ा के मस्तक की बिंदी, **एरौत** जिसका नाम है।।

इस माटी के कण–कण में, महानता का वास यहाँ।
लिखा गया है पुरखों द्वारा, गौरवमयी इतिहास यहाँ।।

महाकवि आरसी के गीतों की, यहाँ आज भी गूँज रही।
'जीवन और जवानी' की बातें, दुनिया हमसे पूछ रही।।

उसी वंश की विरासत को, **संजीव** कलम से संजो रहे।
अपने शब्द–शिल्प से वो, स्मृतियों के बीज हैं बो रहे।।

कलक्टर हरिवंश ने अपनी, सेवा से कीर्ति फैलाई।
प्रशासन की उस उच्च शिखर पर, **एरौत** की ध्वजा फहराई।।

जीवछ बाबू के चिंतन में, समाजवाद की धार रही।
जिनके प्रखर विचारों से, दीन–दुखी को प्यार रही।।

प्रोफेसर बैधनाथ ने, अर्थशास्त्र का ज्ञान दिया।
शिक्षा के उस पावन मंदिर को, अपना जीवन दान दिया।।

धर्मात्मा राम शरण सिंह का, त्याग सदा याद आएगा।
जिनका **महादेव मंदिर**, भक्ति की अलख जगाएगा।।

राजनीति, शिक्षा, साहित्य या सेवा का हो काम यहाँ।
एरौत के इन रत्नों ने, रोशन किया है नाम यहाँ।।

संजीवनी है इस मिट्टी में, जो वीरों को जनती है।
एरौत की यह पुण्य धरा, अब विश्व–पटल पर छनती है।।

।। पुरखों की थातीः नरौल मलीछाम की गूंज।।

परासर की थाती लेकर, चले पूर्वजों के संस्कार।
हरिलाल झा की तंत्र शक्ति का, गूंज रहा है आज जयकार। 1।

सिद्धि की उन पगडंडियों पर, चमका एक नाम अनमोल।
उन्हीं के प्रताप से आबाद हुआ, यह **हाही झा** का टोल। 2।

वही टोल जिसे दुनिया आज, **टोलापर एरौत** कहती है।
पुरखों की अनमिट गाथा, रग–रग में जिनके बहती है। 3।

हरिलाल की लाडली सुता, **जगतारिणी** जिनका नाम।
बनीं कुलवधू बलाट की, जहां बसते थे अभिराम। 4।

राजनगर की माटी साक्षी, साक्षी है राघोपुर का द्वार।
नरौल मलीछाम का मूल बढ़ाता, ब्राह्मण कुल का मान अपार। 5।

अभिराम और **जगतारिणी** के, तप का यह फल महान है।
बलाट की इस पावन भूमि पर, खिला आज **'भगिनमान'** है। 6।

भोला झा, तृप्ति नारायण सम, वंशज जहाँ विराजमान।
पुरखों की दीप्त मशाल लिए, बढ़ा रहे कुल का सम्मान। 7।

इतिहास के पन्नों में दर्ज है, रिश्तों की यह पावन डोर।
अतीत की गौरव गाथाएं, खींच रही उज्ज्वल भविष्य की ओर। 8।

।। भीरहाः शौर्य और संस्कृति का संगम।।

रोसड़ा की सीमा पर खड़ा, **भीरहा** गाँव महान है।
जहाँ की मिट्टी में बसा, पौरुष और सम्मान है।।

इस पावन भूखंड का, अपना एक अलग ही रुतबा है।
प्रगति की इस दौड़ में, भीरहा का अपना ही जज्बा है।।

बागमती की लहरें यहाँ, खेतों को हरियाली देती हैं।
किसानों की कठिन मेहनत, नई फसलें लेती हैं।।

भीरहा रोड की चहल–पहल, व्यापार का वह द्वार है।
जहाँ हर चेहरे पर दिखता, आतिथ्य और प्यार है।।

मंदिरों की घंटियाँ यहाँ, भक्ति का रस घोलतीं।
गाँव की हर चौपाल यहाँ, सच की भाषा बोलती।।

पुराने संस्कारों को थामे, नया सवेरा आता है।
भीरहा का हर नौजवान, नई इबारत लिखता जाता है।।

संजीवनी की कलम चले, तो **भीरहा** का नाम सजे।
इस माटी के यश की गूँज, चारों ओर सदा बजे।।

संजीव कहते यह गाँव, हमारी शान का प्रतीक है।
बौद्धिक और सामाजिक पथ पर, इसकी चाल सटीक है।।

।। आस्था का कवचः एरौत के देव–स्थान।।

वंदन है उस पावन रज को, जहाँ देवों का पहरा है।
एरौत की भक्ति का सागर, सबसे पावन गहरा है।।

दिशि–दिशि में प्रभु वास करें, और द्वारों पर भगवान खड़े।
इस मिट्टी की रक्षा खातिर, शक्ति के कई पुंज अड़े।।

दक्षिण में **बौरहवा बाबा**, रक्षक बनकर विराजे हैं।
जिनके सुमिरन मात्र से ही, कष्ट सभी यहाँ भागे हैं।।

मध्य भाग में **मैया काली**, ममतामयी दरबार सजा।
भक्तों के कल्याण हेतु, जहाँ फहराती है धर्म–ध्वजा।।

श्री राम जानकी का मंदिर, **एरौत** की मर्यादा है।
एक विराजे **आरसी डीह** पर, श्रद्धा जहाँ अगाध है।।

ठाकुर बाड़ी की सेवा में, **रामनंदन सिंह** का है त्याग झलकता।
प्रभु चरणों की धूलि पाकर, भक्त का भाग्य यहाँ चमकता।।

बागमती के पावन तट पर, **हनुमान** की गूँज उठी।
मुसहरी घाट के **महावीर** ने, संकट की हर गाँठ तोड़ी।।

दक्षिण में **बाबा सलहेस**, वीरों का गौरव गान यहाँ।
पश्चिम में **महादेव** विराजे, **शिव–भक्ति** का प्राण यहाँ।।

पूरब में **हाही झा टोल** की, **माँ दुर्गा** का दिव्य रूप।
जैसे अंधियारे जीवन में, खिली ज्ञान की पावन धूप।।

गेहूंमाना का **विषहर मंदिर**, **नाग देव** की शक्ति है।
संजीव कहे इस माटी में, रग–रग बसी ये भक्ति है।।

संजीवनी है इन देवों में, जो एरौत को थामे हैं।
हम सबके विश्वासों के, ये ही पावन नाम हैं।।

।। रहुआः दो अंचलों का मिलन द्वार।।

बूढ़ी गंडक की लहरों पर, जिसका बसता प्राण है।
एसएच–55 की गोद में, रहुआ की अपनी शान है।।

नदी किनारे बसा यह गाँव, हरियाली की चादर है।
श्रम और संतों की भूमि, यहाँ प्रेम का आदर है।।

गंडक की धार पर खड़ा वह पुल, सेतु बड़ा अनमोल है।
रोसड़ा और विभूतिपुर के बीच, बढ़ाता मेल–झोल है।।

दो प्रखंडों की धड़कन को, जो पल भर में जोड़ देता।
दूरी को मिटाकर रिश्तों को, विकास की ओर मोड़ देता।।

पथिकों का है पड़ाव यहाँ, व्यापार की चढ़ती गाड़ी है।
रहुआ की इस पावन मिट्टी की, महिमा सबसे न्यारी है।।

एक ओर रोसड़ा की रौनक, दूजी ओर विभूतिपुर का साथ।
रहुआ खड़ा है बीच में, थामे दोनों का ही हाथ।।

गंडक का पावन पानी, खेतों में सोना उगाता है।
रहुआ का हर कर्मठ राही, अपनी मंजिल पाता है।।

विकास की नई रेखाएं, अब एसएच से गुजरती हैं।
खुशहाली की नई कहानियाँ, इसी पुल पर उतरती हैं।।

।। रोसड़ाः सियासत के शिखर और विकास की गाथा।।

बूढ़ी गंडक की लहरों में, इतिहास यहाँ का बहता है।
रोसड़ा–समस्तीपुर का जर्रा–जर्रा, अपनी कहानी कहता है। 1।

कभी रोसड़ा की पहचान बनी, कभी समस्तीपुर का मान बढ़ा।
परचम यहाँ की अस्मिता का, दिल्ली के गलियारों में चढ़ा। 2।

रामेश्वर साहु ने तीन दफे, इस पावन धरा को सींचा था।
विकास की उजली रेखाओं को, जन–मन के हृदय पर खींचा था। 3।

केदार पासवान और रामसेवक हजारी, जन–जन की आवाज बने।
बालेश्वर राम की विद्वत्ता से, यहाँ प्रगति के साज सजे। 4।

रामभगत पासवान ने दो बार, संघर्षों का बिगुल बजाया था।
दशई चौधरी की निष्ठा ने, जन–विश्वास कमाया था। 5।

और वह नाम... जो युगपुरुष था, समस्तीपुर की शान बना।
रामविलास पासवान के रूप में, दलितों का भगवान बना। 6।

पीताम्बर पासवान के दो कार्यकाल, सेवा की एक मिसाल रहे।
रामचन्द्र पासवान के चार सफर, बेमिसाल और खुशहाल रहे। 7।

संसद की उन दहलीज पर, जब **रामचन्द्र** की गूंज उठी।
रोसड़ा की चौपालों में भी, तब खुशियों की एक गूँज उठी। 8।

महेश्वर हजारी ने थामी बागडोर, विरासत को सम्मान दिया।
प्रिंस राज के जोश ने फिर, सपनों को नया आसमान दिया। 9।

अब **शांभवी चौधरी** की बारी है, नई उम्मीद, नया सवेरा है।
युवा सोच और प्रखर मेधा का, इस पावन भूमि पर डेरा है। 10।

संजीव की लेखनी कहती है, ये महज नाम नहीं, इतिहास हैं।
रोसड़ा की तरक्की के, ये पक्के और बुलंद विश्वास हैं। 11।

बदला स्वरूप, बदली राहें, पर सेवा का संकल्प वही।
इस मिट्टी की खुशबू में बसा, हर नेता का पुरुषार्थ यहीं। 12।

।। रोसड़ा के विकास सारथी।।

रोसड़ा की पावन माटी पर, लिख दी नई कहानी है।
विकास की बहती पावन धारा, जन–जन की जुबानी है।।

पंचायती राज की शक्ति से, जो बने विधान पार्षद यहाँ।
उन कर्मठ जन–प्रतिनिधियों ने, रोशन किया है नाम जहाँ।।

हरि नारायण चौधरी ने, सींचा था जो सपना कल।
तरुण कुमार और रोमा भारती, दे रहे उसे आयाम प्रबल।।

नीलाम्बर और दिलीप चौधरी, **विनोद चौधरी** का साथ मिला।
सर्वेश कुमार के पुरुषार्थ से, अनुमंडल का हर फूल खिला।।

शिक्षक और स्नातक चुनकर, दरभंगा से जो आए थे।
शिक्षा की अलख जगाने को, वे दृढ़ संकल्प लाए थे।।

मदनमोहन झा और वासुदेव, शिक्षा के जो आधार रहे।
वृंदा प्रसाद, राम बहादुर राय, उन्नति के सूत्रधार रहे।।

राज्य सभा की दहलीज पर, जब गूँजी इनकी नेक सदा।
बंधु महतो, रामनाथ ठाकुर ने, अपना हर फर्ज किया अदा।।

रोसड़ा के हर पथ–चौराहे, इनकी सेवा के साक्षी हैं।
विकास मार्ग के ये राही, जन–सेवा के अभिलाषी हैं।।

।। जहांगीरपुर उत्तर का गौरव।।

जहांगीर पुर उत्तर की माटी, संस्कारों की खान है।
जहां **एरौत** जैसा पावन गाँव, रोसड़ा की पहचान है।।

विद्वानों की इस धरती पर, ज्ञान की गंगा बहती है।
यहाँ की हवाएँ पुरखों की, गौरव–गाथा कहती हैं।।

मुरादपुर की हरियाली में, भाईचारे का वास यहाँ।
गेहूंमाना के खेतों में, श्रम का मीठा इतिहास यहाँ।।

हाही झा टोल की पावनता, मन को शांति दिलाती है।
जहाँ परंपराएँ आज भी, अपना धर्म निभाती हैं।।

बिरखौली के आँगन में, श्रम का सुंदर गान खिले।
भुतहा की इस मिट्टी में, अपनों का सम्मान मिले।।

भले अलग हों नाम यहाँ, पर सबका एक ही लक्ष्य यहाँ।
अपनी इस पंचायत को, रखना सबसे स्वच्छ यहाँ।।

संजीवनी है उस एकता में, जो इन गाँवों को जोड़ती।
वही प्रेरणा इस अंचल की, सोई किस्मत मोड़ती।।

संजीव की कलम लिख रही, इस धरती का मान–मनुहार।
जहांगीरपुर उत्तर ही तो है, प्रगति का असली आधार।।

।। पंचायतः मोतीपुर की समरसता।।

मोतीपुर की मिट्टी में, सद्भाव का मोती पलता है।
जहाँ हर जाति और धर्म का, प्रेम साथ–साथ चलता है।।

रोसड़ा के इस अंचल का, यह गौरवशाली ताना है।
पंचायत मोतीपुर को, हम सबको मिल चमकाना है।।

मोतीपुर की गलियों में, मल्लाहों की पतवार सजी।
ततमा और मुसलमान भाईयों की, यहाँ मेहनत की गूँज जगी।।

श्रम और निष्ठा का संगम, यहाँ की असली पहचान है।
मिट्टी से जो सोना उपजाए, वह यहाँ का किसान है।।

फत्तेपुर के खेतों में, कुर्मी समाज की शान दिखी।
मेहनत और लगन की उन्होंने, नई इबारत यहाँ लिखी।।

पीट्ठाडोभी के आँगन में, ब्राह्मणों का सत्कार मिला।
ज्ञान और संस्कारों का, जहाँ सदा ही उपहार मिला।।

मुरली और महेशपुर की, अपनी ही एक छटा यहाँ।
चंडहिया की हरियाली में, बसती सुख की घटा यहाँ।।

भले हों जाति–पंथ अलग, पर सबका एक ही नारा है।
मोतीपुर पंचायत हमारा, प्राणों से भी प्यारा है।।

संजीवनी है इस एकता में, **संजीव** यही समझाते हैं।
विविधता के इस गुलशन को, वे शब्दों में सजाते हैं।।

।। ठाहर बसढ़िया का गौरव ।।

नमन करूँ उस माटी को, जो **बैद्यनाथपुर** की शान है।
ठाहर बसढ़िया पंचायत का, जहाँ बसता **हिंदुस्तान** है।।

रोसड़ा की इस कोख में, कई रत्न यहाँ पलते हैं।
गाँव की सीधी पगडंडी पर, स्वप्न सुनहरे चलते हैं।।

बागमती की निर्मल धारा, तट पर अमृत बोती है।
जिसकी कल–कल ध्वनि में, हर पीड़ा ओझल होती है।।

रोसड़ा–हथौड़ी पथ चले, या **शिवाजीनगर** की राह।
जो भी गुजरे यहाँ से, पा जाए वह सुख की चाह।।

ठाहर और मुसहरी का, अपना ही एक मान यहाँ।
कमलपुर और बरैठा में, बसता है सम्मान यहाँ।।

बलुआहा की शांति और, **गायघाट** की पावनता।
लक्ष्मीपुर की मिट्टी में, झलकी अपनी सहजता।।

खेत–खलिहानों की हरियाली, श्रम का गीत सुनाती है।
गाँव की हर एक चौखट, प्रेम का पाठ पढ़ाती है।।

संजीवनी है इस अंचल में, यह **संजीव** का कहना है।
रोसड़ा के इस गौरव को, युग–युग तक अब रहना है।।

।। मुरादपुर की महिमा ।।

मुरादपुर की पुण्य भूमि पर, श्रद्धा का सैलाब है।
भक्तों की हर मनोकामना, यहाँ होती लाजवाब है।।

सती स्थान की महिमा न्यारी, मन्नत लेकर आते हैं।
झुकता शीश जहाँ श्रद्धा से, मनवांछित फल पाते हैं।।

मैया दुर्गा का द्वार सजा है, शक्ति का संचार यहाँ।
भोले बाबा के डमरू से, गूँज रहा जयकार यहाँ।।

राम–जानकी की छवि मनमोहक, मर्यादा की मूरत है।
बजरंगी के बल–बुद्धि से, संवरती हर सूरत है।।

नाग पंचमी का मेला सजता, बिहार स्थान की बारी है।
परंपरा की खुशबू महके, श्रद्धा सब पर भारी है।।

हरिपुर पुल की ठंडी छाँव, यादों का एक बसेरा है।
मिट्टी की इस सौंधी खुशबू में, अपनों का ही घेरा है।।

सिक्स लेन की रफ्तार लिए, दक्षिण में विकास की धारा है।
पटना का गलियारा अब तो, प्रगति का उजियारा है।।

पूरब में **लालपुर स्थान** का, आशीर्वाद सदा बना रहे।
मुरादपुर का गौरव वैभव, दुनिया में यूँ ही तना रहे।।

|| संकल्प का प्रतीकः एरौत की संजीवनी ||

जहाँ पुरखों की पदचाप गूँजती, उस घर–आँगन की बात करो।
एरौत के गौरवशाली कल की, वर्तमान से मुलाकात करो।।

केवल नाम नहीं है **'संजीवनी'** यह एक पवित्र अनुष्ठान है।
शिक्षा की लौ जलाकर करना, बच्चों का निर्माण है।।

आरसी बाबू के सपनों को, स्कूल की दीवारों में उतारा है।
संजीव की इस साधना ने, नई पीढ़ी को सँवारा है।।

जहाँ **कलक्टर, कवि** और **चिंतक**, मिट्टी से ही उपजे थे।
उसी ज्ञान की परंपरा के, स्वर फिर से यहाँ गूँजे थे।।

शिक्षा, संस्कार और सेवा का, यह पावन संगम स्थल है।
पूर्वजों के त्याग–तपस्या का, खिलता हुआ यह फल है।।

बैधनाथ बाबू की मेधा, और **जीवछ बाबू** का वह विचार।
स्कूल की इन कक्षाओं में, पाता है नया आकार।।

धर्मात्मा राम शरण जी ने, जहाँ भक्ति का दीप जलाया था।
शिक्षा के इस मंदिर ने, उसी मार्ग को अपनाया था।।

प्रो सीताराम सिंह 'सरोज' का, ज्ञान यहॉ आलोकित है।
मूर्धन्य विद्वान की लेखनी से, यह ऑगन गौरवान्वित है।।

एरौत की यह पुण्य धरा, अब ज्ञान की नई कहानी है।
संजीवनी मेमोरियल ही तो, इस माटी की असली निशानी है।।

कलम और संकल्प जहाँ मिल जाएँ, वहाँ भाग्य बदलता है।
संजीव के इस नेतृत्व में, **एरौत** का गौरव पलता है।।

।। अगस्त क्रांति के अमर पुरोधाः रोसड़ा की हुंकार ।।

वह अगस्त का महीना था, इंकलाब की ज्वाला थी।
हर भारतवासी के मन में, बस आजादी की माला थी।।

रोसड़ा की माटी पुकार उठी, जब छिड़ा जंग का महानाद।
अंग्रेजी सत्ता कांप उठी, सुनकर वीरों का शंखनाद।।

यदुनंदन सिंह चले आगे, हाथों में लेकर मशाल।
शिवनंदन, रामाकांत झा का, शौर्य बना था ढाल।।

बालेश्वर सिंह की टोली ने, जब भरी हुंकार समर में।
गोरी सरकार बौखला गई, दहशत के उस मंजर में।।

तेरह अगस्त का वह सूरज, इतिहास नया लिख गया था।
रूसेड़ा घाट स्टेशन पर, फिरंगी शासन झुक गया था।।

बैट्री तोड़ी, तार काटे, संचार व्यवस्था छिन्न हुई।
आजाद परिंदों की टोली, अब रण में अति प्रदीप्त हुई।।

रजिस्ट्री दफ्तर, डाकघर में, ताले जड़ दिए वीरों ने।
बेड़ियाँ गुलामी की काटीं, उन रणबांकुरे धीरों ने।।

सरकारी उस दहलीज पे, तिरंगा शान से लहराया।
मस्तक ऊँचा था भारत का, जब नया सवेरा आया।।

अफसर सब लाचार हुए, और वंदे मातरम् बोल उठे।
क्रांति की उस पावन अग्नि में, सब भेद–भाव भी डोल उठे।।

'अगस्त क्रांति' की पुस्तक में, स्वर्ण अक्षरों सा नाम है।
रोसड़ा के हर बलिदानी को, मेरा शत–शत प्रणाम है।।

|| 15 जनवरी 2001 ई0: रोसड़ा का वह काला सूर्यास्त ||

(एक श्रद्धांजलि काव्य)

पंद्रह जनवरी की वह संध्या, सूरज भी कुछ फीका था।
मकर संक्रांति के उत्सव का, रंग अभी तक तीखा था। 1।

बाजारों में रौनक थी और, खुशियों का था शोर वहाँ।
पर काल छिपा बैठा था चुपके, जाने किस ओर वहाँ। 2।

सिनेमा चौक का वह कार्यालय, जन–सेवा का जो धाम था।
क्षेत्रीय विकास की योजनाओं का, होता वहाँ काम था। 3।

मुरारी सिंह संग बैठे थे, सेनानी **हरिशंकर** महान।
समाज सेवा के पथ पर जो, देते थे अपनी पहचान। 4।

हत्यारे तब अपनी नफरत, सरेआम थे घोंट रहे।
मानवता के पावन रिश्ते, पल भर में ही खोट रहे। 5।

लक्ष्य **मुरारी सिंह** ही थे, पर बीच में आए **हरिशंकर**।
भतीजे की रक्षा में अड़ गए, बनकर वह वीर अभय निडर। 6।

सीने पर गोलियां खाईं, पर डिगा न उनका पाँव वहाँ।
लहू से भीग गया था उस दिन, रोसड़ा का हर गाँव वहाँ। 7।

अंधाधुंध उन बंदूकों ने, सात घर उजाड़ दिए।
मानवता के माथे पर, नफरत के खंजर गाड़ दिए। 8।

एक–एक कर सात सितारे, माटी में ही सोते गए।
अपनों के हाथों से अपनों के, दामन झटके में खोते गए। 9।

हरिशंकर बाबू के संग, हीरा की भी चमक बुझी।
बबलू नायक और **अनिल** की, जीवन–लीला वहीं रुकी। 10।

सुनील महतो की आस टूटी, **कुलदीप साह** भी गिरे वहाँ।
लहू का सागर बह निकला, काँप उठा था सारा जहाँ। 11।

वह सात देह, वह अनगिन गोलियाँ, छलनी हर एक सीना था।
उस दिन रोसड़ा ने सीखा, बस आँसू पीकर जीना था। 12।

जब खबर फैली ये आग सी, जन–जन का खून खौल उठा।
शांति का वह टापू जैसे, ज्वाला बनकर डोल उठा। 13।

'न्याय करो, इंसाफ करो' के नारों से अम्बर गूँज गया।
निर्दोषों का वह पावन लहू, सत्ता के सिंहासन को छू गया। 14।

वह शाम नहीं थी साधारण, वह रोसड़ा का रुदन था।
अपराध के उस नंगे नाच से, सहमा जन–जन का मन था। 15।

आज भी जब शाम ढलती है, उस चौक की वीरानी में।
वह गोलियाँ गूँजती हैं अब भी, रोसड़ा की कहानी में। 16।

बरसों बीते, दशक ढले, पर आग अभी भी बाकी है।
रोसड़ा की उस माटी में, वह टीस अभी भी बाकी है। 17।

काला दिन सिर्फ तारीख नहीं, एक शपथ है उन वीरों की।
जिन्होंने लिखी थी गाथा वहाँ, लोहे की जंजीरों की। 18।

नमन है उन बलिदानों को, नमन है उस शहादत को।
इतिहास कभी न भूलेगा, उस खूनी इबादत को। 19।

रक्त रंजित वह चौक रहेगा, गवाह उस भीषण प्रहार का।
आज भी दिल रो पड़ता है, याद कर मंजर उस **नरसंहार** का। 20।

।। बैद्यनाथपुरः शिक्षा, शौर्य और शक्ति का संगम ।।

बैद्यनाथपुर की माटी में, संस्कार और सम्मान बसा।
गुलाब चौधरी के वंशज में, गुरु–शिष्य का मान बसा।।

जहाँ **बुलचन चौधरी** और **शिवा रजक** से वीर हुए।
आजादी के समर हेतु, जो सीना ताने तीर हुए।।

ज्ञान की ज्योति जलाने में, शिक्षकों का अम्बार यहाँ।
प्रमोद, रामोदार, रामविलास, विद्या का श्रृंगार यहाँ।।

वीरेंद्र, मनीष, रामोउदगार, शिक्षा की अलख जगाते हैं।
रामचंद्र ही राजन, भुवनेश्वर, रूपन, ज्ञान मार्ग दिखलाते हैं।।

युगेश्वर, पवन, महेन्द्र, हरेन्द्र, संस्कार की सतरंगी धार।
मनोज, रमेश, माधव, विजय, और **सुरेश** का सदाचार।।

जीवछ, रामपुकार, नंदन, मनटुन, गुरु–परंपरा के तारे।
नंदन, नारायण, जगमोहन, ज्ञान–दान के हितवारे।।

कामेश्वर, रामाश्रय, बैद्यनाथ, और **नरेंद्र** का शुभ नाम।
प्रेम, गगन, और **रामबाबू** शिक्षक को सादर प्रणाम।।

चिरंजीवी, महेश्वर, दिलीप, सेवा में सदा तत्पर रहे।
राम बालक, कैलाश, रंजीत दास शिक्षक बनकर उभर रहे।।

शिक्षा की पावन ज्योति में, नारी शक्ति का मान बढ़ा।
निर्मला, ममता और सरिता ने, गौरव का सोपान गढ़ा।।

घर और विद्यालय के बीच, एक सुंदर सेतु बनाया है।
अपनी मेधा और तपस्या से, **बैद्यनाथपुर** चमकाया है।।

सुरक्षा की कमान थामे, **संजय चौधरी** दारोगा हैं।
विज्ञान जगत के शिखर पर, **विमलेन्द्र** अनोखा हैं।।

शिक्षक, वैज्ञानिक और सेनानी, इस गाँव का आभूषण हैं।
बैद्यनाथपुर के गौरव से, सारा अवतंस विभूषण है।।

छह खूँटों का यह पावन गाम, अमर रहे इसका नाम यहाँ।
मानवता की सेवा ही, सबसे बड़ा है धर्म–काम यहाँ।।

संजीव की लेखनी वंदन करती, इस माटी के हर लाल को।
जो गढ़ रहे हैं मिलकर आज, सुखद सुनहरे काल को।।

।। वारिसनगर की विकास गाथा ।।

समाजवाद की कोख से जन्मा, यह पावन सा क्षेत्र है।
वारिसनगर की माटी का, अपना ही एक विशेष चरित्र है।।

बशिष्ठ नारायण और **धनपति** ने, बावन में ज्योति जलाई थी।
समाजवादी विचारधारा की, पहली नींव बिछाई थी।।

राजकुमारी देवी और **सुन्दर सिंह** का, आया फिर वह दौर।
कांग्रेस के हाथों में थी, तब विकास की सारी डोर।।

राम सेवक हजारी जी ने, बार–बार परचम लहराया।
कभी निर्दलीय तो कभी दल से, जन–जन का स्नेह पाया।।

चुल्हाई राम के सेवा–पथ पर, जनता साथ चलती रही।
पीताम्बर पासवान की निष्ठा, बरसों तक फलती रही।।

जनता दल और जनता पार्टी, सबका यहाँ आधार रहा।
विधायकों की इस टोली पर, सदा ही ऐतबार रहा।।

भीखर बैठा ने संघर्षों से, अपनी एक पहचान बनाई।
महेश्वर हजारी ने फिर, लोजपा की ज्योति जलाई।।

विश्वनाथ पासवान भी आए, सेवा का संकल्प लिए।
वारिसनगर की उन्नति के, मन में ढेरों स्वप्न लिए।।

अशोक मुन्ना ने दशकों तक, इस क्षेत्र को संवारा है।
जेडीयू के झंडे तले, विकास का नारा पुकारा है।।

और अब दो हजार पच्चीस में, नया सवेरा आया है।
मांजरिक मृणाल ने फिर से, **'तीर'** का मान बढ़ाया है।।

जनता दल यूनाइटेड की, जीत का परचम फिर लहराया।
मृणाल की युवा शक्ति ने, जन–जन का विश्वास पाया।।

इतिहास के पन्नों में अब, एक नया अध्याय जुड़ा।
वारिसनगर के विकास का रथ, नई ऊँचाइयों की ओर मुड़ा।।

।। बहेड़ी का राजनैतिक सफर (1977–2005) ।।

मिथिलांचल की गोद में बसा, बहेड़ी का वह द्वार।
सत्ता के कई रंग देखे, देखे कई किरदार।।

उन्नीस सौ सतहत्तर (1977) में, जब नया सवेरा आया।
तेज नारायण यादव ने यहाँ, पहला परचम लहराया।।

जनता पार्टी के साथ खड़ा, वह पहला जन–प्रतिनिधि।
बहेड़ी की मिट्टी को मिली, विकास की नई निधि।।

अस्सी (1980) के चुनाव में फिर, **रामा कांत झा** आए।
कांग्रेस के हाथ से उन्होंने, सेवा के दीप जलाए।।

पच्चासी (1985) की लहर में, **प्रेमानंद ठाकुर** का नाम।
विकास की राहों पर बढ़ते, करते जनता के काम।।

फिर नब्बे (1990) के दशक में, नया नेतृत्व उभरा था।
मोहन चौधरी के हाथों में, बहेड़ी का हर सिरा था।।

पंचानवे (1995) में **राम लखन यादव**, जनता दल से आए।
विकास और सुशासन के, नए सपने भी क्षेत्र में सजाए।।

दो हजार (2000) की बारी में, **रामानंद सिंह** का साथ।
जेडीयू की मशाल लिए, थामे जनता का हाथ।।

अंत आया दो हजार पाँच (2005) का, चुनावी वह हुंकार।
हरे कृष्ण यादव बने, अंतिम बार यहाँ के खेवनहार।।

आरजेडी का झंडा लेकर, जनता के दिल जीते।
विकास की अमृत धारा, इस मिट्टी ने फिर पीते।।

परिसीमन के चक्र ने फिर, सीमाएँ बदल डालीं।
बहेड़ी की वह खास सीट, इतिहास का हिस्सा हो डाली।।

आज बहादुरपुर में समाया, बहेड़ी का वह गौरव मान।
पर राजनीति के पन्नों में, अमर रहेगा ये आख्यान।।

ध्यानार्थः वारिसनगर एवं बहेड़ी विधानसभा क्षेत्र रोसड़ा लोकसभा क्षेत्र में ही आता था। रोसड़ा संसदीय क्षेत्र अब विलोपित हो गया है। इसलिए दोनों विधानसभा क्षेत्र से संबंध जानकारी संग्रहित है।

।। विभूतिपुर का जनादेश ।।

विभूतिपुर की पावन मिट्टी, अपना इतिहास बताती है।
किसने कब तक सेवा की, यह सूची हमें दिखाती है।।

सन् सड़सठ (1967) से शुरू हुई, जो जन–सेवा की धारा है।
परमानन्द और **गंगा प्रसाद** का, नाम यहाँ बड़ा प्यारा है।।

बंधु महतो ने दो बार, यहाँ कांग्रेस का हाथ थामा था।
फिर **रामदेव वर्मा** का दौर आया, जो बन बैठा एक बड़ा नाम था।।

अस्सी (1980) से लेकर दो हजार पाँच तक, उनका ही परचम लहराया।
लाल झंडे की ताकत को, उन्होंने घर–घर तक पहुँचाया।।

चन्द्रबली ठाकुर ने भी, अपना कुछ वक्त यहाँ पाया।
फिर जनता दल (यूनाइटेड) का, **रामबालक सिंह** ने मान बढ़ाया।।

दो बार खिले नीतीश के फूल, विकास की राहें और सजायीं।
जनता ने फिर बदली करवट, नई उम्मीदें पास बुलायीं।।

अब **अजय कुमार** के हाथों में, जनता ने सौंपी पतवार है।
लाल किले की उस विचारधारा पर, फिर से बढ़ा ऐतबार है।।

बीते कल की यादें सारी, इस पन्ने पर अंकित हैं।
विभूतिपुर के कण–कण में, जन–सेवक ही पूजित हैं।।

।। सिंधिया: एक गौरवशाली अतीत की याद ।।

सिंधिया की माटी का वह, गौरव गान पुराना है।
जनप्रतिनिधियों की सेवा का, अमिट यहाँ अफसाना है।।

बावन (1952) से जो शुरू हुआ, वह विजय–रथ का सफर था।
लोकतंत्र की खुशबू से, महका यहाँ का डगर था।।

गजेन्द्र नारायण और **बृज नन्दन**, प्रथम दीप बन आए थे।
कांग्रेस की विचारधारा का, परचम यहाँ लहराए थे।।

श्यामा कुमारी, बाबू लाल ने, जन–जन का मान बढ़ाया था।
रामेश्वर साहू के संग मिलकर, विकास का पथ सजाया था।।

फिर **रामजतन** की कर्मठता ने, अपना नाम उकेरा था।
सीपीआई के लाल रंग से, चमका नया सवेरा था।।

हैट्रिक लगा जन–सेवा की, वे बने क्षेत्र की शान थे।
गरीबों की हर मुश्किल में, वे बनते समाधान थे।।

अशोक कुमार के हाथों में, फिर बागडोर जब आई थी।
शिक्षा और स्वास्थ्य की चर्चा, हर चौखट पर छाई थी।।

बीच में **जगदीश** ने भी, जनता का प्यार पाया था।
पर **अशोक** की निष्ठा ने, फिर कांग्रेस को जिताया था।।

दो हजार आठ का वह साल, जब समय की धारा बदल गई।
परिसीमन की रेखाओं में, यह पहचान कहीं संभल गई।।

विलोपित हुआ यह नाम मगर, यादों में सदा ये जिंदा है।
सिंधिया का हर वह काम, इतिहास का एक परिंदा है।।

|| हसनपुर की विकास यात्राः 1967 से 2025 तक ||

वर्ष 1967 में हुआ उदय, **हसनपुर** विधानसभा महान।
गजेंद्र प्रसाद हिमांशु ने दी इसे पहली पहचान।।

सोशलिस्ट पार्टी का परचम, दशकों तक यहाँ लहराया।
69, 72, 77 और 80 तक, उन्होंने ही मान बढ़ाया।।

1985 में **राजेंद्र यादव** ने, कांग्रेस का हाथ थामा था।
फिर 90 में हिमांशु जी का, जनता दल ही नामा था।।

1995 में **सुनील पुष्पम** ने, अपनी नई अलख जगाई।
2000 में **हिमांशु जी** ने, फिर जेडीयू से जीत पाई।।

2005 के दोनों चुनावों में, **सुनील पुष्पम** का राज रहा।
पर 2010 से **हसनपुर** के, बदला हुआ मिजाज रहा।।

राजकुमार राय आए बनकर, विकास की नई उम्मीद।
2010 और 2015 में, जीत की दी सबको मुरीद।।

फिर आया वर्ष 2020, सियासत ने ली एक नई करवट।
तेज प्रताप यादव जीते यहाँ, बढ़ा राजद का फिर पनघट।।

पर **हसनपुर** की जनता ने, मन में एक आस बचा रखी थी।
राजकुमार राय के सेवा की, प्यास जगा रखी थी।।

अब 2025 की बेला में, फिर **'तीर'** ने कमाल किया।
राजकुमार राय की मेहनत ने, विरोधियों को निढाल किया।।

तेज प्रताप की विरासत को, विकास के दम पर पीछे छोड़ा।
जनता ने फिर **राजकुमार** से, अपना पुराना नाता जोड़ा।।

1967 से चला यह कारवां, अब नए शिखर पर आया है।
राजकुमार राय ने फिर से, हसनपुर में परचम लहराया है।।

बधाई हो इस विजय की, बढ़े कदम अब प्रगति की ओर।
हसनपुर का नाम गूँजेगा, अब दुनिया के हर एक छोर।।

।। रुसेरा घाट स्टेशन ।।

पुरानी यादें बसी यहाँ हैं, नावों का वह दौर गया।
अब पटरी की रफ्तार यहाँ है, वक्त सुहाना लौट गया। 1।

आर–ओ–ए का बोर्ड दिखाता, स्टेशन की ऊँची शान।
समस्तीपुर–खगड़िया लाइन, मिथिला की है ये जान। 2।

जानकी और मिथिला जैसी, गाड़ियाँ यहाँ रुकती हैं।
यात्री की सेवा में जो, हर रोज यहाँ झुकती हैं। 3।

भले गुजरतीं तेज यहाँ से, कुछ गाड़ियाँ बिना रुके।
पर शहर हमारा खड़ा गर्व से, बिना थमे और बिना झुके। 4।

इंजन की वह गूँज और, गार्ड की वह हरी झंडी।
खुल जाती किस्मत नगर की, सजती जब ये मंडी। 5।

कोई दिल्ली को जाता है, कोई जाता कोलकाता।
हर मुसाफिर इस स्टेशन से, गहरा रिश्ता पाता। 6।

दोहा

गंडक तट की गोद में, रोसड़ा नगर महान।
रेल डगर से जुड़ गया, पाकर नई पहचान। 7।

रूसेरा का घाट यह, बढ़ा रहा है मान।
यात्री को मंजिल मिले, यही यहाँ की शान। 8।

।। राम लखन सिंह उद्यानः रोसड़ा की पहचान ।।

रोसड़ा के दिल में बसा, यह सुखद विश्राम है।
नाम इसका गौरवशाली, **राम लखन सिंह** उद्यान है।1।

अनुमंडल कार्यालय के दक्षिण में,यह शान से खड़ा है।
शहर की सुंदरता में, एक अनमोल रत्न सा जड़ा है। 2।

विधायक **गजेंद्र प्रसाद सिंह** ने, इसे दिल से बनवाया था।
एक सुंदर बगीचे का सपना, धरातल पर सजाया था। 3।

उनकी लगन और मेहनत का, यह उद्यान प्रमाण है।
हर रोसड़ा वासी करता, इसका हृदय से सम्मान है। 4।

एक ओर सरकारी दफ्तर की, वह सरगर्मी और काम है।
तो दक्षिण में सटा यह पार्क, देता सबको आराम है। 5।

भीड़–भाड़ से दूर यहाँ, ठंडी हवाएं चलती हैं।
फूलों की खुशबू में यहाँ, शामें सुंदर ढलती हैं। 6।

बच्चे झूलें, युवा टहलें, बुजुर्ग करें सत्संग।
यहाँ बिखरते हर दिन देखो, खुशियों के सौ रंग। 7।

साफ–स्वच्छ रहे यह आँगन, बस यही हम सबका काम है।
रोसड़ा की धड़कन है यह, **राम लखन सिंह उद्यान** है। 8।

।। न्याय का मंदिर :रोसड़ा व्यवहार न्यायालय ।।

गूँज रहा जयघोष आज, रोसड़ा की पावन धरती पर।
न्याय की गंगा उतर आई, जन–जन के अपने आँगन पर।।

सबको सुलभ न्याय मिलेगा, टूटेगी अब हर बाधा।
व्यवहार न्यायालय बन गया, जन–जन की **'संजीवनी'** का वादा।।

सोलह मई छियासी को, पहला बीज पड़ा था।
समस्तीपुर की छाती पर, यह संकल्प खड़ा था।।

दो वर्षों की कठिन प्रतीक्षा, रंगत लेकर आई।
बीस अगस्त अठासी को, रोसड़ा ने खुशियाँ पायीं।।

आर. एन. लाल के हाथों से, वह द्वार खुला सुखदाई।
सत्य की विजय सुनिश्चित करने, न्यायालय की नींव जमाई।।

दूरी मिट गई जिला मुख्यालय की, अब घर के पास न्याय है।
वंचित और शोषित वर्गों का, इसमें ही अभ्युदय है।।

काले कोट के सम्मान में, कानून की कलम चलती है।
यहाँ अन्याय की आँधी भी, इंसाफ के आगे ढलती है।।

एडीजे कोर्ट की गरिमा ने, मान बढ़ाया भारी है।
रोसड़ा अनुमंडल की अब, चहुँओर जय–जयकारी है।।

इतिहास के पन्नों में **संजीव**, यह नाम दर्ज हो जाएगा।
न्याय का यह मंदिर, सबकी पीड़ा हरता जाएगा।।

संजीव की लेखनी भी, सच का साथ निभाएगी।
व्यवहार न्यायालय की गाथा, पीढ़ियों को हरसाएगी।।

गूँज रहा जयघोष आज, रोसड़ा की पावन धरती पर।
न्याय की गंगा उतर आई, जन–जन के अपने आँगन पर।।

|| रोसड़ा का सुरक्षा कवच ||

गूँज रही है आज धरा पर, गौरवमयी कहानी||
खाकी की मर्यादा ने जहाँ, लिखी नई जिन्दगानी||

एक दिसम्बर सन् छिहत्तर को, नया सवेरा आया||
रोसड़ा ने अनुमंडल बन, अपना मान बढ़ाया||

आई. के. मिंज की नीली वर्दी, पहला मान बनी||
ब्रजनन्दन और शत्रुघ्न की, सेवा की तान बनी||

राजीव लोचन, सुधीर झा का, अनुशासन था भारी||
भगवान प्रसाद, अखिलेश्वर, जगदीश ने, निभाई जिम्मेदारी||

खाकी की मर्यादा ने जहाँ, लिखी नई जिन्दगानी...||
छोटे लाल, उपेन्द्र सिन्हा ने, जन का साथ निभाया||

हरदेव, मधुसूदन, विनय ने, साहस को चमकाया||
असगर इमाम और **नीरज** ने, न्याय की मशाल जलाई||

चन्द्रिका प्रसाद और **विजय वर्मा** ने, शांति की अलख जगाई||
खाकी की मर्यादा ने जहाँ, लिखी नई जिन्दगानी...||

सैफुर रहमान, मिथिलेश और **संतोष** का रहा बसेरा||
जी. एम. कुमार, अनवर जावेद ने, दूर किया अँधेरा||

मृत्युंजय, अजित, अरुण ने, फर्ज की राह चुनी||
शहरियार और शिवम ने, खुशहाली की चादर बुनी||

खाकी की मर्यादा ने जहाँ, लिखी नई जिन्दगानी...||
सोनल कुमारी की शक्ति, और **संजय सिन्हा** का साथ है||

रोसड़ा की सुरक्षा अब, इन कर्मठ हाथों के हाथ है||
संजो रहे **संजीव** यहाँ, इन यादों के अनमोल मोती||

अमर रहे इन खाकी वीरों की, पावन सेवा वाली ज्योति।।
गूँज रही है आज धरा पर, गौरवमयी कहानी।।

खाकी की मर्यादा ने जहाँ, लिखी नई जिन्दगानी।।
रोसड़ा का सुरक्षा कवच... अमर रहे, अमर रहे।।

।। मेरे श्याम, मेरा शक्ति धाम ।।

रोसड़ा की पावन गलियों में, गूँज रहा बस तेरा नाम।
संकट सारे हर लेते हो, ओ मेरे शक्ति धाम।।

कलयुग के तुम ही अवतारी, हारे के तुम ही आधार।
शक्ति धाम की चौखट चमके, जैसे स्वर्ग उतरा हो द्वार।।

दुनिया की ठोकर जब खाई, मन में छाई घोर निराशा।
तब रोसड़ा के मंदिर ने ही, जगाई फिर से मन में आशा।।

व्याधि हो या मन की बाधा, या हो जग की कोई पीर।
मोरछड़ी की छाया में ही, बँधता भक्त का धीर।।

कोई अर्जी लेकर आए, कोई लेकर नयन सजल।
पर जो भी आए शक्ति धाम, उसका जीवन हो निर्मल।।

न वैभव की चाहत बाबा, न ही सोने का श्रृंगार।
बस हर जन्म में मिलता रहे, तेरे दर का यह प्यार।।

जब तक तन में प्राण रहें, तेरी महिमा गाता जाऊँ।
रोसड़ा के इस मंदिर में, अपना शीश नवाता जाऊँ।।

समस्याओं का हो अंत जहाँ, और मिटे सारा अज्ञान।
धन्य है वह रोसड़ा की माटी, धन्य है **शक्ति धाम।।**

बोलो रोसड़ा के खाटू नरेश की... जय ! शक्ति धाम के बाबा की... जय !

|| एरौत का गौरवगान ||

रोसड़ा की पावन धरा पर, शौर्य का पावन धाम है।
एरौत की माटी को, हृदय से कोटि प्रणाम है। 1।

इस गौरवशाली भूमि पर, इतिहास गाथा गाती है।
महाराणा के वंशजों की, याद यहाँ मुस्काती है। 2।

सिसोदिया के रक्त से सींचा, काकन का अभिमान यहाँ।
भार्गव गोत्र की शुचिता का, गूंज रहा जयगान यहाँ। 3।

सुरजन – चैन सिंह दो भ्राता, शौर्य के दो स्तंभ बने।
उन्हीं की पावन शाखाओं से, कितने कुल–अवतंस बने। 4।

सुरजन सिंह के पाँच पुत्र, शाखाएँ पाँच महान हुई।
रीतन, धरम, हरिनारायण से, कुल की एक पहचान हुई। 5।

आसमान और काला सिंह ने, शौर्य का दीप जलाया है।
इन पाँचों के पुरुषार्थ ने, **एरौत** को चमकाया है। 6।

पंचखुट्टी, सतघरवा चमके, चौधरी गछ का मान बढ़ा।
तीन खूंट की इस गरिमा से, एरौत का सम्मान बढ़ा। 7।

चैन सिंह की संतानों ने, वैभव नया संजोया है।
पुत्रों की उस चतुष्टयी ने, बीज प्रगति का बोया है। 8।

बारहघरवा, चौठेया घराना, गूंज रहा चहुं ओर यहाँ।
दरबार और शहरू घरवाहा, वीर प्रसूता भोर यहाँ। 9।

पूर्वजों का तप, वंश का गौरव, रग–रग में संचार करे।
इतिहास के हर एक पन्ने पर, **एरौत** ही हुंकार करे। 10।

सजग सचेत हैं पत्रकार, जो पुरखों की लौ जलाते हैं।
संजीव कुमार की लेखनी से, हम गौरव गाथा पाते हैं। 11।

।। रोसड़ा के आंगन में सोहर ।।

टेक

जुग–जुग जियसु ई रोसड़ा के ललना, भवनवा के भाग जागल हो।
थतिया, गोविंदपुर गूँजे सोहर, खुशियाँ अपार लागल हो।।

अंतरा 1

दामोदरपुर, उदयपुर सजले, सहियार के दुआर हो।
बटहा, चकथात में बाजे बधैया, मची है जय–जयकार हो।।

मब्बी–महुली में सनेहिया बरसे, हिरमिया निहाल भेल हो।
पांचोपुर, भीरहा के सखी सब गावे, मंगल के ई खेल भेल हो।।

अंतरा–2

रहुआ के बूढ़ी गंडक उछले, सोनूपुर के मान हो।
आरसी के एरौत में बाजे, विद्या के मधुर तान हो।।

बैद्यनाथपुर, ठाहर से अइली, बलुआहा के नारि हो।
गायघाट, बरैठा के दिदिया, लूटावेली रतन–क्यारि हो।।

अंतरा –3

मुसहरी, कैलूटोल सोहावन, हाही झा टोल मगन हो।
मोतीपुर, फत्तेपुर के आँगन, लागल सुखद लगन हो।।

लालपुर, मुरादपुर के सती माई, देली आशीष अपार हो।
कलवारा, बाला, गोथरा के डगरिया, भेल है उजियार हो।।

अंतरा– 4

हरिपुर, पंचगामा के लोगवा, भटोतर के भाई हो।
महरौर, पसरा, ढरहा में मिलिके, सब देवेला बधाई हो।।

गेहूंमाना, भुतहा, मिर्जापुर, हनुमान नगर के शान हो।
भरवारी, मालिकाना मुसहरी, सबके बढ़ल सम्मान हो।।

अंतरा –5

संजीव के कलम से लिखल ई सोहर, सुनिहें सारा संसार हो।
रोसड़ा के सब गाँव खिलल रहे, बरसे सदा यहाँ प्यार हो।।

जुग–जुग जियसु ई माटी के ललना, गाँव के भाग जागल हो।
सबके कल्यान होवे एहि धरती पर, मंगल के बेला लागल हो।।

खंड– 2

।। करियन का सूर्यः गोवर्धनाचार्य ।।

समस्तीपुर के हृदय क्षेत्र में, **करियन** एक तीर्थ महान।
जहाँ गूँजता आज भी है, **गोवर्धन** का कीर्ति–गान।।

नीलाम्बर के सुत बन आए, मेधा के वे पुंज प्रखर।
मिथिला की विद्वत्ता का, ऊँचा किया सदा शिखर।।

लक्ष्मणसेन की राजसभा में, जो **'पंचरत्न'** कहलाते थे।
जिनके तर्कों के आगे, दिग्गज भी शीश झुकाते थे।।

जयदेव की कोमल वाणी ने, जिनको **'अद्वितीय'** माना।
श्रृंगार और पांडित्य का, संगम जग ने उन्हें जाना।।

रच दी **'आर्या सप्तशती'**, जो संस्कृत का अनमोल रत्न।
शब्द–शिल्प में ढाल दिया, जैसे हो कोई ईश्वरीय यत्न।।

अनुज **बलभद्राचार्य** भी, थे जिनके ज्ञान के अनुगामी।
परंपरा को सींच गए, वे **करियन** के अन्तरयामी।।

शिष्य मिले **'उदयन'** जैसे, जो तर्क–शास्त्र के भानु बने।
जिनके कारण न्याय–दर्शन के, नए–नए सोपान बुने।।

गौतम की उस ज्ञान–परंपरा को, जिसने नया आयाम दिया।
करियन की उस माटी को, जग में अमिट एक नाम दिया।।

इतिहास की धूल में जो दबा, उस गौरव को आज जगाना है।
करियन के गोवर्धन को, फिर से घर–घर में पहुंचाना है।।

वह गॉव नहीं, वह मंदिर है, जहॉ ज्ञान का दीप जला।
उसी महाकवि के तप से, मिथिला का ये भाग्य फला।।

।। शास्त्र–शिखरः पंडित चित्रधर मिश्र ।।

मिथिला की पावन मिट्टी से, एक दिव्य रश्मि मुस्काई थी।
विभूतिपुर के **टभका** में, सुरसरि–धारा उतर आई थी।।

संवत उन्नीस सौ एक बना, जब सुख की शुभ शैली थी।
बुधाई मिश्र के आँगन में, वह ज्ञान–ज्योति फिर खेली थी।।

व्याकरण, धर्म और शास्त्र रचा, पिता ने ही नींव सजाई थी।
मिथिलांचल के ब्राह्मण कुल की, साख यहाँ पर आई थी।।

जहाँ **'पंडित–टोल'** महकता था, विद्वत्ता की परिपाटी से।
वहाँ **चित्रधर** ने नाम लिखा, इस विद्या वाली माटी से।।

बचपन में चंचल मन भटका, आखेट और मछली की ओर।
पर नियति ने फिर मोड़ दिया, ज्ञान की खिंची अनूप डोर।।

अठारह की उस आयु में, जब दैवीय आशीष मिला।
गुरु–कुल की पाठशाला में, मेधा का नव कमल खिला।।

नीलदेव गुरु के चरणों में, **मीमांसा** का रस पान किया।
काशी नरेश भी चकित हुए, जब प्रतिभा का सम्मान किया।।

दरभंगा के **लक्ष्मीश्वर** ने, सादर **'राज–पंडित'** माना।
'महामहोपाध्याय' कह, सारा जग लगा उन्हें पहचाना।।

विलुप्त हुई जो पांडुलिपि, उनका संचय आधार रहे।
शास्त्रों के गहरे मर्मज्ञ, वे विद्या के अवतार रहे।।

|| महामहोपाध्याय रामेश्वर झाः एक वंदन ||

हसनपुर की माटी से जो, बन मार्तण्ड प्रखर निकला।
मिथिला के उस प्रज्ञा–पुंज का, जग में अमर अक्स ढला।।

पटसा गाँव धन्य हुआ, जब जन्मे **रामेश्वर झा** विद्वान।
न्यायशास्त्र की देहरी पर, जिसने पाया उच्च स्थान।।

विपुल प्रतिभा के धनी थे वे, ज्ञान का अथाह सागर।
लेखनी में धार ऐसी, जैसे शब्द रहे हों गागर।।

कठिन ग्रंथ और गूढ़ टीकाएँ, बन गई सरल सुबोध यहाँ।
पांडित्य की उस पराकाष्ठा का, मिलता अब और जोड़ कहाँ?

'स्यन्दकारिका' के रचयिता, व्याख्या में जिनका नाम हुआ।
संस्कृत की सेवा ही जिनका, पावन चारों धाम हुआ।।

नमन है उस तपस्वी को, जो ज्ञान की अविरल धारा थे।
न्याय और विद्वता के नभ में, वे चमकते ध्रुव तारा थे।।

।। ज्ञान के शिखरः पंडित विद्यानाथ झा ।।

शिवाजीनगर की पावन माटी, परबन्ना का मान बढ़ा।
बहुभाषाओं के ज्ञाता बन, जो नभ से ऊँचा आन खड़ा।।

संवत अठारह सौ सत्तर में, जन्मा वह ज्ञान का पुंज प्रखर।
संस्कृत की सेवा में अर्पित, जिसका हर पल, हर एक डगर।।

काशी की पावन गलियों में, **'व्याकरणाचार्य'** की शिक्षा पाई।
कानपुर से गया तलक, जिसने अपनी विद्वत्ता फैलाई।।

विश्वविद्यालय के आंगन में, बन शिक्षक ज्ञान का दीप धरा।
उन्नाव के कुलपति पद पर भी, वह व्यक्तित्व सदा ही रहा खरा।।

'भक्तानंद तरंगिणी' रचकर, भक्ति की अविरल धार बहाई।
अंग्रेजी में गीता अनुवादित कर, जग को नई राह दिखाई।।

ज्ञान, कर्म और विद्या का, वह अद्भुत अनुपम संगम था।
पंडित विद्यानाथ झा के आगे, नतमस्तक हर एक भ्रम था।।

|| सुदर्शन अवतारः श्री सनकनंदन पाठक ||

सुदर्शन चक्र के अंशावतार, भक्ति की पावन गंगा थे।
करियन की पावन माटी में, जन्मे वह एक उमंग थे।।

1913 की वह वेला, जब ओजस्वी मुखड़ा चमका था।
पंडित हरिवंश और **कमलमुखी** के आंगन का तारा दमका था।।

रामायण का जब स्वर गूंजे, राहगीर वहीं रुक जाते थे।
त्याग और वैराग्य देख, सब उनके आगे झुक जाते थे।।

बचपन में माँ का साया छूटा, पर मन में करुणा भारी थी।
जीवों की रक्षा करने की, उनकी निष्ठा सबसे न्यारी थी।।

जब बलि चढ़ती देखी उन्होंने, तो खुद की गर्दन वार दी।
उस दिन से उस पावन पथ की, कुप्रथा उन्होंने मार दी।।

काशी जाकर विद्या पाई, शास्त्रार्थ में वह महान हुए।
'विद्याभूषण' और 'व्यास' पद से, जग में वे श्रीमान हुए।।

ज्येष्ठ भ्राता यदुवंश पाठक, और बलराम की कीर्तन–कला।
भक्ति मार्ग के पथिक बने सब, मिटा हृदय का मोह–जला।।

'व्यास भजनामृत' ग्रन्थ रचा, जो भक्ति का रस घोलता है।
रामबालक जी के मंदिर में, नाम उन्हीं का बोलता है।।

1969 में त्याग दिया ये तन, पर अमर हुई उनकी वाणी।
परहारा के **रामानुजाश्रम** में, पूजे जाते वह कल्याणी।।

कार्तिक और गुरुपूर्णिमा पर, आज भी भीड़ उमड़ती है।
उनकी कृपा की अविरल धारा, सबके कष्टों को हरती है।।

।। पांडित्य का जीवंत प्रतीकः पंडित चंद्र शेखर मिश्र ।।

रोसड़ा की माटी का गौरव, वह ज्ञान का एक शिखर था।
साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद–तीनों पर जिनका अधिकार था। 1।

प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य **पंडित चंद्र शेखर मिश्र** जिनका नाम।
सादगी और विद्वत्ता को पहुँचाया जिन्होंने नया मुकाम। 2।

महाकवि आरसी प्रसाद सिंह ने जहाँ विश्राम पाया।
राष्ट्रकवि दिनकर को भी जिनके सान्निध्य ने हर्षाया। 3।

चंद्रभानु सिंह ने कलम चलाई, जिनके पावन आँगन में।
जैसे स्वयं **चंद्र शेखर** उतर आए हों **'तनय सदन'** में। 4।

इलाके की रवायत थी, जो नया अधिकारी आता था।
कार्यभार संभालने के बाद, पहले उनके द्वार जाता था। 5।

राजनेताओं की भीड़ लगी थी, दवा और दुआ पाने को।
असाध्य रोग भी भाग खड़े थे, उनके स्पर्श मात्र से जाने को। 6।

विद्वान भी आते थे करने, कविताओं का संशोधन।
मुहल्ले के हर बच्चे का, उनके श्रीमुख से होता था नामकरण। 7।

समाज के हर वर्ग ने उन्हें, देवता की तरह पूजा है।
उनके जैसा व्यक्तित्व भला, कहाँ कोई दूसरा दूजा है?। 8।

जैसा पिता, वैसा पुत्र–कहावत आज भी सच हुई है।
विद्वान सुपुत्र **डॉ. परमानंद** ने, वह मशाल थामे रखी है। 9।

आज भी जीवित है वह परंपरा, वही सेवा और वही विश्वास।
पंडित चंद्र शेखर मिश्र की विरासत, रच रही है नया इतिहास। 10।

।। रोसड़ा के ऋषिः पंडित जीवनाथ मिश्र ।।

रोसड़ा की माटी के चंदन, सेवा के जो प्रतिमान थे।
पंडित जीवनाथ मिश्र जी, मानवता की शान थे।।

वैद्यराज की पदवी पाकर, अद्‌भुत खेल दिखाया था।
विषधर के ही विष से उन्होंने, अमृत–तुल्य बनाया था।।

कफ, ज्वर और वायु दोष का, जड़ से अंत मिटाते थे।
औषधि ऐसी गढ़ते थे कि, मुर्दे भी जी जाते थे।।

'मृत संजीवनी सुरा' बनाया, **'वासावलेह'** का ज्ञान दिया।
रोगों से लड़ती काया को, जीवन का वरदान दिया।।

सादा जीवन, उच्च विचार ही, उनकी असली पूँजी थी।
प्रेम भाव से लोग पुकारें, **'मालिक'** उनकी गूँजी थी।।

मृदु व्यवहार की खुशबू जिनसे, कण–कण में बिखरी रहती।
दीन–दुखी की सेवा वाली, धारा उनमें थी बहती।।

सिर्फ वैद्य ही नहीं, वतन के सच्चे वे रखवाले थे।
वार्ड पार्षद बन सेवा के, दीप जलाने वाले थे।।

तीस वर्ष तक अनवरत रूप से, जन–सेवा का धर्म जिया।
रोसड़ा के हर आँगन में, अपना पावन प्रेम दिया।।

धन्य हुए वे हाथ जिन्होंने, दुखियों के आँसू पोंछे।
अमर रहेगा नाम आपका, जब तक सूरज–चाँद रहें।।

।। आयुर्वेद के अमर साधकः भुवनी बाबू ।।

बल्लीपुर का वह पावन आंगन, धन्य हुई थी वहाँ की माटी।
जहाँ खिले थे **भुवनेश्वर झा**, ज्ञान की महकी जहाँ परिपाटी।।

सुरेंद्र झा के पिता यशस्वी, आयुर्वेद के थे वह ज्ञाता।
रोगों के उस घोर तिमिर में, बनकर आए थे वह त्राता।।

दुनिया जिन्हें पुकारती थी, कह कर **'भुवनी बाबू'** प्यारा।
जिनके हाथों की छुअन से, बहती थी स्वास्थ्य की धारा।।

कैसा भी हो रोग असाध्य, जड़ से उसे मिटाते थे।
जड़ी–बूटियों के बल पर वह, मुर्दों को भी जिलाते थे।।

चुटकी में जो कष्ट हरें, ऐसी उनकी माया थी।
दीन–दुखियों के ऊपर फैली, उनकी शीतल छाया थी।।

क्या राजा और क्या रंक, सब उनके दर पर झुकते थे।
मानवता के उस सेवक को, देख सभी वहॉ रुकते थे।।

अर्पण कर दी अपनी सांसे, लोक–हित के काज में।
नाम स्वर्ण अक्षरों में है, आज वैद्यक समाज में।।

भुवनी बाबू का वह जीवन, सेवा का एक पैगाम है।
ऐसे ऋषि और महामानव को, कोटि–कोटि प्रणाम है।।

।। जन–सेवा का संबलः डॉ. सी.एम. झा ।।

लंदन से पा डिग्री आए, माटी का मोह न छूटा था।
रोसड़ा के **सोनूपुर** में, सेवा का झरना फूटा था।।

सी.एम. झा नाम नहीं, वे दीन–दुखी की आशा थे।
निःशुल्क दवा और मरहम की, वे जीवित परिभाषा थे।।

वह दौर कठिन था विपदा का, जब बाढ़ हसनपुर आई थी।
चारों ओर तबाही थी और छाई घोर विदाई थी।।

तब देशरत्न राजेंद्र बाबू ने, उन पर ही विश्वास किया।
हाथों में उनके जनता का, स्वास्थ्य और उल्लास दिया।।

अध्यात्म की पावन धारा से, उनका नाता गहरा था।
पंडित रामनंदन मिश्र का, उन पर स्नेह–सुनहरा था।।

रोगों से मुक्ति मिल जाती, जब भी वे हाथ लगाते थे।
बिना स्वस्थ हुए द्वार से, कोई लौट न पाते थे।।

आज भले ही औषधालय, जीर्ण–शीर्ण लाचार खड़ा।
लहेरियासराय के टावर पर, इतिहास का पन्ना मौन पड़ा।।

पर उनकी कीर्ति गूँजती है, उन गलियों और चौबारों में।
अमर रहेगा नाम सदा, जन–सेवा के गलियारों में।।

।। शब्द–साधना का महाप्राणः डॉ. विपिन विहारी ठाकुर ।।

मिथिला की गौरव–गाथा, रोसड़ा का वह पुण्य धाम।
जहाँ जन्म लिया उस धीर ने, **विपिन विहारी** जिनका नाम।।

चार मई उनतालीस की, वह मंगलमयी पावन घड़ी।
साहित्य गगन में चमक उठी, विद्वत्ता की एक स्वर्ण लड़ी।।

बी.ए., एम.ए. और पी.एच.डी., शिक्षा का ऊँचा शिखर छुआ।
हिंदी के उस महावृक्ष का, ज्ञान जगत में नाम हुआ।।

प्राचार्य रहे, विभागाध्यक्ष रहे, संकायाध्यक्ष की गरिमा थी।
ललित नारायण विश्वविद्यालय में, छाई जिनकी महिमा थी।।

साहित्य वाचस्पति, विद्यासागर, मानद उपाधियाँ गौरव थीं।
अलंकारों से सुसज्जित उनकी, प्रखर बुद्धि की सौरभ थी।।

पाँच सौ से अधिक रचनाएँ, लेखनी ने जिनकी अनवरत रचीं।
कहानी और आलोचना की, कोई विधा न रही बची।।

आकाशवाणी की लहरों पर, जिसकी प्रज्ञा की गूँज रही।
सत्य, चेतना और उदयन की, मन में जिनके खोज रही।।

साहित्य सम्मेलन के सम्मुख, पद की शोभा बढ़ जाती थी।
हिंदी की सेवा में जिनकी, हर एक साँस समाती थी।।

पर काल–चक्र की विडंबना, कैसा अद्भुत संयोग हुआ।
जब हिंदी की बिंदी बिखरी, वह भारी हृदय वियोग हुआ।।

चौदह सितम्बर दो हजार दस, जब हिंदी दिवस का पर्व रहा।
माँ भारती के चरणों में, तब प्राणों का अर्पण हुआ।।

हिंदी के उस साधक का, हिंदी के दिन ही निर्वाण हुआ।
साहित्य जगत के सूरज का, साँझ ढले अवसान हुआ।।

संजीव कुमार सिंह जैसे शिष्यों ने, गुरु का आशीष पाया है।
गुरु–परंपरा की अमर ज्योति को, आज भी हृदय में सजाया है।।

नमन है ऐसे मनीषी को, नमन है उस महान व्यक्तित्व को।
जो शब्दों में जीवित रहेंगे, अर्पित कर निज कृतित्व को।।

।। क्रांति के अमर पुरोधाः राजेश्वर प्रसाद सिंह ।।

दामोदरपुर की माटी का, वह लाल बड़ा अभिमानी था।
राजेश्वर प्रसाद सिंह जैसा, न कोई दूजा बलिदानी था।।

पिता **राम प्रसाद सिंह** के, वे कुल के उजियारे थे।
माता **रेशमावती** की आँखों के, वे राजदुलारे थे।।

रोसड़ा स्टेशन के दक्षिण से, उठी जो एक हुंकार थी।
अंग्रेजी शासन की नींव में,पड़ती वह गहरी दरार थी।।

सत्याग्रह की अग्नि जली थी, सन् उन्नीस सौ तीस में।
आजादी का जज्बा भरा था, उनके रोम–रोम की रीत में।।

जेल की काल–कोठरी भी, उनके आगे बस एक ख्वाब था।
सीने में था वतन बसा, और होंठों पर इंकलाब था।।

महथी की उन गलियों में, वे छिप–छिपकर जब रहते थे।
अत्याचारी गोरे शासक, उनके नाम से थर–थर कॉपते थे।।

शूट वारंट भी जारी हुआ, पर वीर कहाँ वह झुकने वाला।
भारत माँ की सेवा में, वह हरदम था डटने वाला।।

देशभक्ति के गीतों से, वे सोए भाग्य जगाते थे।
अपनी ओजस्वी वाणी से, क्रांति का बिगुल बजाते थे।।

नमन है ऐसे योद्धा को, जिसने अपना सर्वस्व दिया।
आजादी की पावन बेदी पर, हँसकर अपना लहू दिया।।

दामोदरपुर का मान बढ़ाया, रोसड़ा की वह शान हुए।
भारत माँ की आजादी के, वे अमर एक अरमान हुए।।

।। दामोदरपुर का शेरः अमर सेनानी विश्वनाथ सिंह ।।

दामोदरपुर की माटी का, वह अनुपम लाल निराला था।
जिसके रग–रग में बहता, बस देशभक्ति का प्याला था।।

अभिलाख सिंह के आंगन में, जब जन्म लिया उस वीरे ने।
काकन वंश का मान बढ़ा, उस तेजपुंज बल धीरे से।।

तेरह मार्च उन्नीस सौ बारह, मंगलकारी वह घड़ी आई।
जब भारत माता की रक्षा को, एक दिव्य ज्योति मुस्काई।।

भार्गव गोत्र का तेज लिए, पौरुष का नया विधान लिखा।
विश्वनाथ ने मस्तक पर, इंकलाब का गान लिखा।।

अंग्रेज हुकूमत थर्राई, देख उनकी बागी तेवर को।
छिन्न–भिन्न करने निकले थे, वह गोरी सत्ता के घेवर को।।

'शूट वारंट' जारी था, फिर भी कदम न उनके रुके कभी।
मौत सामने खड़ी रही, पर शीश न उनका झुके कभी।।

पकड़ न पाया गोरा शासन, वह हवा सरीखा बागी था।
मातृभूमि की वेदी पर, वह सर्वस्व लुटाने का त्यागी था।।

अंततः जेल की काल–कोठरी, उनका नया ठिकाना बनी।
पर बेड़ियाँ भी उन हाथों में, आजादी का गहना बनी।।

सींखचों के पीछे झुक न सका, वह स्वाभिमान का पर्वत था।
फिरंगियों की चालों पर, भारी जिसका एक हुंकार था।।

आजाद हवा में सांसें हों, बस यही एक अरमान रहा।
तिंरगा ऊँचा रहे सदा, यही हृदय का गान रहा।।

दशकों तक जो दीप जला, बुझने न दिया उस ज्योति को।
सत्य और न्याय की राह दिखाई, इस दुनिया की रीति को।।

पच्चीस दिसंबर दो हजार नौ, जब देवलोक को प्रस्थान किया।
अश्रुपूरित नयनों ने उनको, सादर अंतिम प्रणाम किया।।

दामोदरपुर की गलियां आज भी, उनकी गाथा गाती हैं।
विश्वनाथ सिंह के चरणों में, अपनी श्रद्धा झुकाती हैं।।

संजीव सिंह की कलम नमन करती, उस क्रांति के अवतारी को।
कोटि–कोटि वंदन है, उस **'शूट वारंट'** वाले निर्भय धारी को।।

।। इंकलाब का पर्यायः यदुनंदन सिंह ।।

खबर नहीं, ये गाथा है उस माटी के लाल की।
जिसने चूड़ियाँ ढीली कर दीं अंग्रेज के इकबाल की।।

केशव सिंह का वह बेटा, **दामोदरपुर** की शान था।
रोसड़ा की गलियों में गूंजता, आजादी का गान था।।

जब **'करो या मरो'** का नारा, हवाओं में लहराया था।
यदुनंदन ने तब पटरियों पर, अपना जोर दिखाया था।।

वह लोहे की जंजीरें उखाड़, फिरंगी को ललकार दिया।
भारत माता की जय बोल, सत्ता को झकझोर दिया।।

जेल की वह कालकोठरी, और गोरों की यातनाएं।
झुका न सकीं उस मस्तक को, चाहे कितनी भी आफत आए।।

सीने पर कोड़े खाकर भी, वह वीर नहीं घबराया था।
भारत की पूर्ण आजादी का, सपना मन में सजाया था।।

कवि नहीं, वह तो क्रांति की जलती एक मशाल थे।
अंधियारों को चीरते, वह युग का नया उजास थे।।

कलम नहीं, उनके हाथों में बस इंकलाब की बोली थी।
आजादी के परवानों की, वह सबसे आगे वाली टोली थी।।

।। स्वतंत्रता के पुरोधाः रामनिरीक्षण सिंह ।।

समस्तीपुर की पावन माटी, समर्था जिनका धाम था।
जमींदार कुल में जन्मे वह, 'पंडित जी' शुभ नाम था।।

सन् अठारह सौ बानवे में, चमका एक सितारा था।
ज्ञान–पुंज से आलोकित, वह व्यक्तित्व प्यारा था।।

मधुबनी से शिक्षा पाई, कलकत्ता में मान किया।
छठा स्थान पा मैट्रिक में, अपना गौरव गान किया।।

पटना कॉलेज की दहलीज पर, मेधा का परचम लहराया।
विश्वविद्यालय के प्रथम बैच में, **'सर्वश्रेष्ठ स्नातक'** कहलाया।।

काशी की उस पुण्य भूमि पर, एम.ए. की डिग्री पाई थी।
मालवीय जी के आदर्शों की, मन में अलख जगाई थी।।

पर जब गांधी, आजाद और मालवीय, पटना की धरती आए।
आजादी के बिगुल फूंकने, राष्ट्र–प्रेम के स्वर लाए।।

त्याग दी पदवी, छोड़ दी शिक्षा, छोड़ दिया सुख सारा था।
'विदेशी का बहिष्कार करो', बस यही एक नारा था।।

सदाकत आश्रम के साये में, जीवन का नया विधान बना।
पाँच विभूतियों के संग मिलकर, भारत का अभिमान बना।।

राजेंद्र बाबू के संग चले, विद्यापीठ की नींव धरी।
त्याग, तपस्या और निष्ठा से, अपनी झोली खूब भरी।।

ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मों से, वह कभी नहीं घबराए थे।
आजादी के महाकुंभ में, वह अपनी आहुति लाए थे।।

नमन है ऐसे वीर पुरुष को, इतिहास जिसे न भुलाएगा।
रामनिरीक्षण सिंह का नाम, सदा गर्व से गाया जाएगा।।

।। नयानगर का अमर सपूतः रामफल शर्मा ।।

हसनपुर की माटी में जन्मा, वह अनुपम वरदान था।
मोहद्दीपुर की गलियों का, वह ही तो सम्मान था।।

रामचरण का बेटा वह, **गोसाईं मठ** का वासी था।
हृदय में जिसके गूँजती, बस आजादी का अहसास था।।

सन बयालीस की ज्वाला में, यौवन अपना झोंक दिया।
ब्रिटिश हुकूमत के बढ़ते, कदमों को उसने रोक दिया।।

तीस वर्ष की अल्प आयु में, **'करो या मरो'** का नारा था।
देश की रक्षा की खातिर, उसने सब कुछ वारा था।।

पटरी उखाड़ी, तार काटे, और गोरों को ललकार दिया।
बढ़ई जाति के उस बेटे ने, सोता देश जगा दिया।।

गोरे पलटन का खौफ जहाँ, लोगों के मन में रहता था।
वहाँ **रामफल** सीना ताने, इंकलाब ही कहता था।।

लोहे की उन बेड़ियों को, उसने गहना मान लिया।
सीखचों के पीछे भी उसने, अपना धर्म पहचान लिया।।

आजादी के पच्चीस वर्षों पर, मिला उसे सम्मान था।
इंदिरा जी के हाथों मिला, वो ताम्रपत्र महान था।।

शिलापट्ट पर दर्ज नाम, आज भी गौरव गाता है।
नवें क्रम का वह योद्धा, वीर कथा सुनाता है।।

सन पचानवे में शांत हुई, वह देशभक्ति की ज्वाला।
पोते **रामबाबू** ने थामी, फिर यादों की यह माला।।

फाउंडेशन की नींव रखी, और स्मारक का संकल्प लिया।
नयानगर के सूरज ने, फिर से नया विकल्प दिया।।

युग–युग तक ये देश तुम्हें, श्रद्धा से शीश झुकाएगा।
रामफल शर्मा का जीवन, वीरों को राह दिखाएगा।।

|| नयानगर का वह वीर सेनानीः राम कल्याण सिंह ||

नयानगर की माटी का, वह अनुपम लाल निराला था।
आजादी की वेदी पर, जिसने जीवन वार डाला था।।

हसनपुर के उस आँगन में, देशभक्ति की ज्योत जली।
जब **'करो या मरो'** के नारों से, गूँज उठी थी गली–गली।।

राज टेक्निकल कॉलेज का, वह चौबीस वर्ष का तरुण वीर।
हृदय में ज्वाला धधक रही, नयनों में था साहस गंभीर।।

अगस्त बयालीस की वह घटना, इतिहासों में अमर हुई।
जब रेल पटरियाँ उखड़ गईं, और फिरंगी सत्ता सिहर उठी।।

काट दिए सब तार फोन के, संचार व्यवस्था भंग करी।
रोसड़ा और नयानगर के, वीरों ने हुंकार भरी।।

पकड़ा गया वह वीर सिपाही, **'गोरा पलटन'** के घेरे में।
पर झुका नहीं वह देश–भक्त, जेलों के घोर अंधेरे में।।

भागलपुर से पटना तक, सहता रहा वह क्रूर सितम।
अर्थदंड और कैद मिली, पर डिगा नहीं उसका संयम।।

जुलाई बयालीस में छूटा, वह पाकर एक नया जीवन।
भारत माँ की सेवा में ही, अर्पित था जिसका तन–मन।।

रजत जयंती के अवसर पर, 'ताम्रपत्र' सम्मान मिला,
श्रीमती इंदिरा के हाथों, गौरव का वरदान मिला।।

समाज में जाग्रति फैलाकर, अन्त समय तक कर्म किया।
दो हजार एक की उस बेला में, उसने अंतिम सांस लिया।।

नमन है उस बलिदानी को, जिसकी प्रतिमा अब द्वार खड़ी।
नयानगर के गौरव की, वह अमर याद है बड़ी–बड़ी।।

जब तक सूरज चाँद रहेगा, गूँजेगा उनका पावन नाम।
स्वतंत्रता के उस साधक को, कोटि–कोटि सादर प्रणाम।।

।। स्वतंत्रता सेनानीः जगत मंडल ।।

डूमरा की पावन माटी का, वह अनुपम लाल निराला था।
जीवलाल और **रूनिया देवी** के, घर जन्मा उजियारा था।।

सन् अट्ठारह सौ चौरासी में, वीर ने जन्म लिया।
भारत माता की रक्षा का, मन में दृढ़ संकल्प किया।।

जब **'भारत छोड़ो'** का नारा, देश के कोने–कोने गूँजा।
जगत मंडल ने स्वाधीनता को, सबसे पहले पूजा।।

अंग्रेजी सत्ता को ललकारा, बागी तेवर दिखलाए।
हजारीबाग की जेल गए, पर कभी नहीं वे घबराए।।

वही जेल की दीवारों में, मिला साथ **राजेन्द्र बाबू** का।
बढ़ा हौसला देशप्रेम का, और साथ मिला अपनों का।।

शिवाजीनगर की धरती पर, शिक्षा की अलख जगाई।
अज्ञानता के अंधकार से, लड़ने की कसम उठाई।।

उन्नीस सौ अट्ठावन में, वह अमर ज्योति शांत हुई।
देशभक्ति की एक गाथा, इतिहासों में जीवंत हुई।।

डूमरा का वह सपूत आज भी, यादों में मुस्काता है।
जगत मंडल का त्याग हमें, जीना सदा सिखाता है।।

।। युगपुरुषः राम लखन सिंह ।।

शिवाजी नगर की पुण्य भूमि का, वह अनुपम वरदान था।
परसा ग्राम का गौरव वह, जन–मानस का सम्मान था।।

1920 की पावन बेला, **मनोहर** के घर लाल बढ़ा।
माता **सकली** के आशीषों से, इतिहास का नया पृष्ठ चढ़ा।।

विरासत में मिली थी क्रांति, पिता ने गोरों को ललकारा।
वही लहू रगों में इनके, बना वीरता की अविरल धारा ।।

अशिक्षा के उस अंधियारे को, मिटाने का प्रण ठाना था।
शिक्षा की अलख जगाकर,, हर मन को उजियारा था।।

परसा की माटी से उठकर, मुखिया का पद भार लिया।
प्रखंड प्रमुख बन रोसड़ा का, जन–जन का उद्धार किया।।

सत्ता नहीं सेवा का लक्ष्य, उनके मन में वास रहा।
पंचायती राज के नायक पर, सबको पूर्ण विश्वास रहा। ।

राजनीति की डगर कठिन थी, रोसरा का वह रणक्षेत्र बड़ा।
हारे भले चुनाव कई पर, जन–सेवा में अडिग खड़ा।।

वर्चस्व रहा ऐसा उनका, कि हर दिल ने सम्मान दिया।
शिवाजीनगर के कण–कण ने, उन्हें नायक का स्थान दिया।।

पितृ–संकल्प की अधूरी गाथा, पुत्र गजेंद्र ने पूर्ण किया।
विधायक बन रोसरा का, वंश का मस्तक ऊँचा किया।।

करेह नदी की चंचल लहरें, आज भी उनका यश गाती हैं।
राम लखन सिंह सेतु बनकर, यादें संवर जाती हैं।।

रोसड़ा अनुमंडल के पास, जो **उपवन (पार्क)** मुस्काता है।
राम लखन सिंह का नाम वहां, हरियाली बनकर छाता है।।

शिवाजीनगर के विद्यालय सम्मुख, उनकी प्रतिमा शान खड़ी।
जैसे नई पीढ़ी को देती, साहस की वह सीख बड़ी।।

09 सितंबर 1986 को, वह दीपक भले शांत हुआ।
पर कर्मों की उस खुशबू से, यह सारा प्रांत जीवंत हुआ।।

जब तक गंगा–यमुना बहती, जब तक यह संसार रहेगा।
राम लखन सिंह का नाम, दिलों में सदा अमर रहेगा।।

।। अजातशत्रुः भोला मांडर ।।

छोड़ चले जब शिक्षा का आंगन, एम.एस.सी. की पढ़ाई थी।
टाटा की उस माटी में, पहली **'मजिस्ट्रेट'** की पदवी पाई थी।।

हुरा ब्लॉक के गलियारों में, जब सेवा का दीप जलाया था।
जन–जन के उन मानस पटल पर, अपना नाम सजाया था।।

राँची के विकास की खातिर, दिन–रात एक कर डाला था।
सैकड़ों घरों के चूल्हों में, रोजगार का नूर उजाला था।।

शिवाजीनगर का कोना–कोना, आज भी साक्षी देता है।
'जिला विकास अधिकारी' बन, सबका आशीष वह लेता है।।

पटना के बिजली बोर्ड में, प्रशासनिक कौशल दिखाया था।
डेयरी और वेयरहाउस को, उन्नति की राह चलाया था।।

वैशाली की पावन धरती पर, जब **'डीएम'** की कमान संभाली।
लिखा गया स्वर्णिम इतिहास, छाई हर तरफ खुशहाली।।

उद्योगों को दी नई दिशा, सचिवालय के गलियारे में।
चमके जैसे कोई ध्रुवतारा, शासन के नभ तारे में।।

प्रशासन की ऊँची दहलीज छोड़, जन–गण का मन अपनाया था।
उतर पड़े जब राजनीति में, सेवा का संकल्प जगाया था।।

उन्नीस सौ पचासी (1985) का, वो दौर बड़ा ही भारी था।
जनता के हक की खातिर, अब लड़ने की तैयारी थी।।

रोसड़ा की माटी ने तब, अपना लाल पहचाना था।
विधानसभा की चौखट तक, वीरों ने कदम बढ़ाया था।।

बने विधायक जन–जन के, जीत का परचम लहराया।
संसद की उन दीवारों ने, उनका ओजस्वी स्वर पाया।।

पर नियति को कुछ और मंजूर, मन में गहरी टीस हुई।
सेवा पथ पर चलते–चलते, साँसों की कुछ कमी हुई।।

तीन सितम्बर छियासी (1986) को, सूरज जल्दी ढल गया।
जनता का वह सच्चा सेवक, महाप्रयाण पर निकल गया।।

अधिकारी से जननायक तक, जो कर्मों की सुगंध फैलाई।
रोसड़ा की गलियाँ आज भी, देती हैं उनको भावुक विदाई।।

।। त्याग की प्रतिमूर्ति प्रयाग बाबू ।।

छोड़ चले जो शिक्षक की नौकरी, मन में देश का प्यार था।
आजादी की जंग में कूदे, साहस ही हथियार था।।

सन् बयालीस की वह ज्वाला, बिहार के कण–कण में जगी।
प्रयाग बाबू की टोली भी, बापू की राह पर निकल पड़ी।।

बहेड़ी थाने को घेरा था, गोरे शासक घबराए थे।
छीन लिए हथियार फिरंगी के, बाजी पलट वे आए थे।।

हुकूमत ने दी सजा उन्हें, जेल की काल–कोठरी मिली।
दस महीने पच्चीस दिन तक, भागलपुर की बेड़ी खिंची।।

शिक्षा की भी अलख जगाई, जन–मानस को सींचा था।
शिवाजीनगर की माटी पर, स्वर्ण–भविष्य खींचा था।।

सिर्फ क्रन्तिकारी ही नहीं, वे सच्चे समाज सुधारक थे।
हर गरीब की आँखों के, वे ही तो मार्ग–धारक थे।।

राजनीति का सफर चला, समस्तीपुर से शुरुआत हुई।
कांग्रेस के मंच तले, जन–सेवा की बात हुई।।

रोसड़ा की धरती से, फिर विधायक बन वे आए थे।
सत्य और निष्ठा के उन्होंने, गहरे पाठ पढ़ाए थे।।

पर जे.पी. के आह्वान पर, सत्ता के खिलाफ खड़े हुए।
आपातकाल की रातों में, संघर्षों से वे बड़े हुए।।

प्रयाग मंडल नाम नहीं, यह शौर्य की एक कहानी है।
आने वाली पीढ़ी को, यह गौरव गाथा सुनानी है।।

।। अमर विभूतिः दामोदर नारायण चौधरी ।।

रामनवमी का पावन अवसर, गूँजी सुखद शहनाई थी।
भरत सहाय के आँगन में, ममता की मूरत आई थी।।

'भरत सहाय' के कुल–दीपक ने, नया इतिहास रचाया था।
बल्लीपुर की माटी का गौरव, कण–कण में मुस्काया था।।

चौवन (54) मौजों के मालिक वे, वैभव की कोई कमी न थी।

दामोदर बाबू की आँखों में, जन–सेवा की छाई रहती नमी थी।।

जमींदारी के ऊँचे आसन पर, रहकर भी वे सरल रहे।
पीड़ित और असहाय जनों के, हृदय–पटल पर अटल रहे।।

विद्वत्ता ऐसी कि जिसकी, चर्चा सात समंदर पार हुई।
शिक्षा और सुसंस्कारों से, जीवन की पतवार हुई।।

मैथिली–हिंदी के सेवक वे, ज्ञान के थे वे पुंज महान।
राधाकांत और दामोदर विद्यालय, उनकी कीर्ति के अमर निशान।।

दरभंगा महाराज का सादर, मान सदा ही रखा उन्होंने।
पर सादगी के उच्च शिखर को, खुद ही गढ़ा–परखा उन्होंने।।

मृत्यु पूर्व ही श्राद्ध–कर्म का, पावन बजट बनाया था।
चांदी के पात्रों के दान को, **'मिथ्या'** कह ठुकराया था।।

महाराज दरभंगा का प्रेम, और दान की वह विमल धारा।
पर **दामोदर बाबू** ने **'त्याग'** को, सबसे ऊँचा धर्म पुकारा।।

सादगी, विद्वत्ता और दया का, वे बहता अविरल झरना थे।
इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में, वे एक अद्वितीय पन्ना थे।।

।। अमर पुरोधा और कलम का सिपाही ।।

रोसड़ा की पावन माटी में, एक दिव्य ज्योति मुस्काई थी।
बटहा के उस आँगन में, शिक्षा की अलख जगाई थी।।

रामकिशुन के कुल–दीपक, सुन्दरी देवी के वह लाल बने।
मानवता की सेवा करने, जीवन का प्रतिफल ढाल बने।।

दरभंगा से इंग्लैंड तक, जिसने अपना नाम किया।
चिकित्सा और सेवा को ही, अपना पावन काम किया।।

'सुन्दरी देवी विद्या मंदिर' की, सुंदर आधारशिला रखी।
शिक्षा से रोशन हो जीवन, पावन ऐसी अभिलाषा रखी।।

बाथ की ठंडी फिजाओं में, जब अंत समय ने दी दस्तक।
बटहा का कण–कण रोया था, झुक गया गौरव का मस्तक।।

तन भले गया पर मन उनका, आज भी यहीं महकता है।
विद्या के हर एक मंदिर में, उनका नाम चहकता है।।

संजीव की लेखनी में, अमर है यह **राम स्वरूप**।
शब्दों के दर्पण में सजा, **महतो जी** का जीवंत रूप।।

बटहा के उस पुण्य को, कविता का उपहार दिया।
पत्रकार की निष्ठा ने, इतिहास को विस्तार दिया।।

हे अमर मनीषी! नमन तुम्हें, तुमने यह उपकार किया।
पिछड़े हुए उस अंचल को, शिक्षा का उपहार दिया।।

जब तक सूरज–चाँद रहेंगे, नाम तुम्हारा गूँजेगा।
बटहा का हर एक बालक, तुमको ही तो पूजेगा।।

।। लोक–नायकः डिप्टी साहब ।।

करेह नदी के तट पर जन्मा, मिथिला का वह लाल था।
पुरनदाही की माटी जिसका, गौरवमय प्रतिपाल था।।

शिवाजीनगर प्रखंड की खुशबू, उसके कण–कण में समाई।
हंसलाल के सुत ने जग में, अपनी ऊँची साख बनाई।।

09 दिसम्बर, 1924 को, जीवन का एक फूल खिला।
शारदा माँ के आँचल में, ममता का आशीष मिला।।

'डिप्टी साहब' नाम से जग में, पाई अपनी खास पहचान।
बिहार शिक्षा सेवा को अर्पित, कर दिया अपना तन–मन–प्राण।।

चितरपुर से सफर शुरू कर, बेनीपुर तक धाक जमाई।
बाइस वर्षों की सेवा में, शिक्षा की अलख जगाई।।

31 दिसम्बर 1982 को, जब पद से हुए सेवानिवृत्त।
शुरू हुआ फिर नया सफर, समाज–सेवा का महाव्रत।।

मिथिलांचल की राजनीति में, **'सोशल इंजीनियरिंग'** का प्रणेता।
समता पार्टी की नींव रखी, बना गरीबों का वह नेता।।

नीतीश कुमार भी मानते थे, जिन्हें अपना अभिभावक महान।
सादगी और त्याग की मूरत, मंडल जी थे ऊँची शान।।

2012 की 25 अप्रैल को, वो चिराग गया बुझ मौन।
पर उन जैसा जन–सेवक अब, होगा यहाँ भला कौन?।।

इतिहास के पन्नों में दर्ज है, उनकी कर्मठता की कहानी।
युगों–युगों तक याद रहेगी, उनकी ये अमर निशानी।।

।। शिवाजी नगर के स्वप्नद्रष्टाः गजेन्द्र प्रसाद सिंह ।।

समस्तीपुर की माटी का, वह एक अनमोल सितारा था।
शिवाजीनगर की खुशहाली का, वह ही एक सहारा था।।

परसा गाँव की गलियों से, जो जनसेवा का संकल्प उठा।
गजेन्द्र प्रसाद के पौरुष से, पिछड़ों का हर भाग्य जगा।।

राम लखन सिंह के आँगन, जब बालक ने जन्म लिया।
सिया देवी के संस्कारों ने, सेवा का पावन मन्त्र दिया।।

भाइयों में जो छोटा था, पर कद में सबसे बड़ा हुआ।
समस्तीपुर की गौरव गाथा, बन अडिग आज खड़ा हुआ।।

चला जो संघर्षों की राहों पर, फिर कभी न पीछे मुड़ा।
शिवाजीनगर को प्रखंड बना, जन–जन के हर दुख से जुड़ा।।

रोसड़ा से अलग किया उसे, दी अपनी एक पहचान नई।
कर्मवीर की मेहनत से ही, वहाँ विकास की गंगा बही।।

बरियाहीघाट की पुकार सुनी, जब पुल का स्वप्न अधूरा था।
'आमरण अनशन' कर डाला, संकल्प सदा ही पूरा था।।

लालू जी ने नींव रखी, नीतीश जी ने उद्घाटन किया।
'राम लखन सिंह सेतु' ने, इस क्षेत्र को नया जीवन दिया।।

इंटर कॉलेज, छात्रावास, शिक्षा की जगाई पावन ज्योत।
डिग्री कॉलेज के सचिव बन, बने प्रगति का अमर स्रोत।।

रोसड़ा के उप–कारा से लेकर, सिविल कोर्ट के भवन तक।
हर विकास की ईंट पर, उनके श्रम की अमिट चमक।।

कर्पूरी स्टेडियम हो, या हो **'राम लखन उपवन'** महान।
रोसड़ा और शिवाजीनगर को, दी उन्होंने एक नई शान।।

पावर ग्रिड, चिकित्सा केंद्र, पंचायत भवन का निर्माण किया।
अपने क्षेत्र के विकास हेतु, जीवन का हर क्षण दान किया।।

पर वक्त बड़ा निर्मम निकला, विधि का विधान भी भारी था।
2010 के चुनाव के बाद, अस्वस्थता का दौर जारी था।।

पटना से दिल्ली तक चलकर, उपचारों का क्रम चला बहुत।
पर रोक न सकी कोई दुआ, वह असमय आती हुई मौत।।

सितम्बर इक्कीस, पन्द्रह को, वह कर्मठ दीप बुझ गया।
इकसठ वर्ष की आयु में, सबको विरह का दुःख दे गया।।

शिवाजीनगर की आँखों का, वह बहता हुआ किनारा था।
खो दिया हमने वह हीरा, जो सबका प्राण–प्यारा था।।

।। बल्लीपुर का एक अमर सेनानी गंगेश नारायण ।।

बल्लीपुर की पावन माटी, जहाँ जन्म लिया उस लाल ने।
मुनीन्द्र नारायण के आँगन, खुशियाँ दी उस काल ने।।

चौदह जुलाई बाइस का वह, दिन बड़ा ही न्यारा था।
गंगेश नारायण चौधरी ने, सेवा का संकल्प संवारा था।।

जब गूँजी गांधी की वाणी, अंग्रेजों! भारत छोड़ो तुम।
'करो या मरो' के मंत्र के संग, सोई शक्ति जोड़ो तुम।।

पढ़ाई छोड़ दी स्कूल की, वे आजादी को पाने को।
कूद पड़ा संघर्षों में वह, दुश्मन को धूल चटाने को।।

बावन से छियालीस तक, रहा वह भूमिगत राही।
क्रांति की मशाल जलाए, बना देश का सिपाही।।

सूर्यनारायण, देव नारायण, साथियों का संग पाया।
मंडल, झा और महतो ने भी, मिल आजादी को गाया।।

क्रांति पथ के बाद चुनी, जनसेवा की पावन राह।
जिले के पेंशनर समाज की, रखी उन्होंने नींव अथाह।।

गांधी स्मारक समिति में, संरक्षक बन मान बढ़ाया।
भोलेनाथ के मंदिर में भी, अपना भक्ति भाव सजाया।।

त्याग, तपस्या और समर्पण, जीवन की यही कहानी है।
वंदन है उस वीर को, जिसकी अमर ये निशानी है।।

।। बैद्यनाथपुर के सत्येन्द्र नारायण चौधरी ।।

रोसड़ा की माटी का चंदन, जन–सेवा का संकल्प महान।
प्रखंड प्रमुख बन जिन्होंने बढ़ाया, गाँव–नगर का सदा मान।।

सहकारिता की राह चुनी और बैंक के बने उपाध्यक्ष आप।
निष्ठा की वह ज्योत जलाई, मिटा दिया जन–जन का संताप।।

विचारों में कांग्रेस की धारा, जीवन भर जो रहे अडिग।
पार्टी के प्रति समर्पण ऐसा, डगमगाए न कभी कदम।।

याद रहेगी 1962 की वह गाथा, जब चीन से छिड़ा था रण।
हरिनाथ मिश्र के साथ मिलकर, देशहित में किया था धन–अर्पण।।

बैद्यनाथपुर की पावन धरती, घर–आँगन और प्यारा धाम।
पनचौभ ब्राह्मण कुल की मर्यादा, ऊँचा किया जगत में नाम।।

मुखिया से लेकर प्रमुख तक, जन–जन का विश्वास मिला।
सेवा के उन अमर पुष्पों से, जनमत का हर बाग खिला।।

रोसड़ा के उस रणक्षेत्र में, दो बार लड़े विधान सभा।
जीत–हार से परे रही, उनके व्यक्तित्व की दिव्य आभा।।

भले विजय का तिलक न चमका, पर सेवा में कमी न थी।
क्षेत्र के जन–जन की आँखों में, उनके प्रति बस नमी ही थी।।

।। रोसड़ा में सत्यपाल सिंह ।।

ढ़ाव मुहल्ले की मिट्टी से, उठा एक व्यक्तित्व महान।
बालेश्वर सिंह के सुपुत्र **सत्यपाल**, रोसड़ा की ऊँची शान।।

नगरपालिका की सेवा की, वार्ड आयुक्त बन आए थे।
घुड़सवारी के शौकीन वह, रूतबा अपना बनाए थे।।

कठिन दौर था देश का, जब गांधी जी की हत्या हुई।
स्वयंसेवकों पर संकट था, हर ओर गिरफ्तारी हुई।।

विचारों के पक्के थे वह, जेल की सलाखें चूमी थीं।
राष्ट्रभक्ति की अलख जगाने, उनकी आत्मा घूमी थी।।

साठ का वह दशक था, जब आए माधव गोलवलकर।
रज्जू भैया के कदमों से, पावन हुआ था घर–आँगन।।

सत्यपाल के द्वारे पर, संतों का सानिध्य मिला।
विचारधारा के उपवन में, निष्ठा का यह फूल खिला।।

विरासत अब भी कायम है, पुत्रों ने मान बढ़ाया है।
फूलेन्द्र सिंह मुख्य अभियंता बन, सेवा का धर्म निभाया है।।

पवन सिंह के सुपुत्र संतोष, पत्रकारिता के हैं स्तंभ।
अपनी धारदार लेखनी से, करते सच का ही प्रारंभ।।

कौशल किशोर ने सम्भाली, जनसेवा की पावन डोर।
वार्ड आयुक्त बन कर चमके, सेवा की हर एक ओर।।

बाजार समिति के उपाध्यक्ष बन, पाया गौरव का सम्मान।
छत्रपतिनगर का यह कुनबा, है रोसड़ा का अभिमान।।

।। विद्वत्ता का सूर्यः डॉ. देवनारायण यादव ।।

विभूतिपुर की कोख से जन्मा, गंगोली का मान है।
संस्कृत के नभ में चमकता, वह देदीप्यमान है।।

पंद्रह जनवरी, साठ (1960) की, वह शुभ घड़ी निराली थी।
जब मिथिला की माटी ने, एक नई ज्योति सम्हाली थी।।

पाली, संस्कृत, अंग्रेजी पर, जिनका पूर्ण अधिकार है।
आचार्य की गरिमा से मंडित, उनका सदा विचार है।।

पी–एच.डी. और डी.लिट्. की, ऊँची पदवियाँ पाई हैं।
ज्ञान के पथ पर चलकर उन्होंने, अपनी धाक जमाई है।।

सत्तरह (17) ग्रंथों का संपादन, जिनके श्रम की गाथा है।
शास्त्रों की जटिल गुत्थियों को, उन्होंने सदा सुलझाया है।।

सात पत्रिकाओं के माध्यम से, साहित्य की लौ जलाई।
संस्कृत–संस्कृति की सेवा में, अपनी सारी उम्र बिताई।।

'संजीवनी' के पन्नों पर, स्वर्ण अक्षरों सा नाम है।
डॉ. देवनारायण यादव, आपको कोटि–कोटि प्रणाम है।।

आप जैसे मनीषियों से ही, यह धरती गौरव पाती है।
ज्ञान की यह पावन सरिता, युगों–युगों तक बहती जाती है।।

।। सारस्वत साधकः डॉ. केदार नाथ 'लाभ'।।

दो मई उन्नीस सौ उनतीस, वह मंगल घड़ी आई।
दुधपुरा की पावन माटी, हर्षित हो मुस्काई।।

हसनपुर का लाडला, जग में बड़ा नाम कर गया।
साहित्य के आकाश में, वह सूर्य बन उभर गया।।

छपरा के प्रांगण में जिसने, हिंदी को सम्मान दिया।
प्राध्यापक बन शिष्यों का, जीवन देदीप्यमान किया।।

सेवा से निवृत हुए तो, और वेग से कलम चली।
मैथिली और हिंदी की, हृदय–कुंज में खिली कली।।

'भारती' के खंड–काव्य में, भक्ति का रसधार बहा।
'लखिमा रानी' की गाथा को, अद्‌भुत छंदों में कहा।।

गीत, गजल और छंदों में, प्राणवान शैली ढाली।
शब्द–शब्द में 'लाभ' जी ने, लय की गरिमा पाली।।

चिरस्मरणीय नाम रहेगा, जब तक सुरभित काव्य यहाँ।
उनके जैसा शिल्पी अब, ढूँढेगा ये विश्व कहाँ?।।

विद्या और विनय के वे, साक्षात प्रतिमान रहे।
साहित्य के मंदिर में, वे सदा अमर विद्वान रहे।।

।। साहित्य के साधकः डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'।।

हसनपुर की माटी में जन्मे, बीस जनवरी का वह साल था।
उन्नीस सौ अड़तीस की बेला, प्रतिभा का अनूठा हाल था।।

शिक्षा की सीढ़ी चढ़ते–चढ़ते, **'विद्या वारिधि'** का मान मिला।
हिन्दी, मैथिली, अंग्रेजी, नेपाली का उन्हें ज्ञान मिला।।

विराट नगर के कॉलेज से, प्राध्यापन का अध्याय शुरू।
वैशाली के आंगन में बनकर चमके वे शिक्षा के गुरु।।

मुजफ्फरपुर के विश्वविद्यालय में निभाई विशेष जिम्मेदारी।
लेखन और शोध की राहों में अर्पण कर दी जीवन–सारी।।

बुद्ध की करुणा, प्राचीन कला, और विरासतों के थे वह मीत।
समीक्षा की पैनी नजर और लोक–संस्कृति से अटूट प्रीत।।

'राजा सलहेस', 'था लोकगीत', **'ब्रह्म ग्राम सुनसरी'** उनकी शान।
'हमारे लोक देवी–देवता' जैसी कृतियों से बढ़ाया मान।।

हसनपुर और समस्तीपुर को, दुनिया के मानचित्र पर लाए।
'कुमार संग्रहालय' की स्थापना कर, इतिहास के दीप जलाए।।

मौन रहकर भी जो मुखर रहे, साहित्य के ऐसे पावन धाम।
प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' को, शब्द–सुमन से कोटि प्रणाम।।

।। साधना का शिखरः डॉ. मेघन प्रसाद ।।

विभूतिपुर की पावन माटी, **शिवनाथपुर** का गाँव।
जहाँ जन्म लिया उस शिल्पी ने, पाकर ममता की छाँव।।

स्वर्गीय **फुद्दी महतो** के आँगन का, वह गौरव–दीप प्रखर।
माता **सरोजिनी देवी** का आशीष, रहा सदा जिनके सिर पर।।

'मैथिली कथा साहित्य' की, गहराई को जिसने नापा।
पटना विश्वविद्यालय से, पी–एच.डी. का मान है छापा।।

'मिथिला मिहिर' के योगदान पर, शोध की मशाल जलाई।
कथा–साहित्य के उपवन में, एक नई सुगंध बिखराई।।

'मैथिली कथा कोश' लिखकर, आलोचना को दी नई धार।
साहित्य जगत ने मुक्त कंठ से, किया जिनका सत्कार।।

'विद्यापति पुरस्कार' मिला, राजभाषा विभाग का मान।
बिहार सरकार ने भी माना, उनका ज्ञान और सम्मान।।

लेखनी केवल पन्नों तक नहीं, दृश्यों में भी उतरी है।
सौंप **'मेला'** की डॉक्यूमेंट्री, जिसकी गूँज अभी तक बिखरी है।।

जमशेदपुर के सम्मलेन में, जब सम्मान का मिला उपहार।
मैथिली की सेवा का वह, बना सबसे सुंदर श्रृंगार।।

हर्षपति सिंह कॉलेज मधेपुर के, बने कुशल **'प्राचार्य'** आप।
मधुबनी की उस धरती पर, छोड़ी अमिट पद–चाप।।

ज्ञान, शोध और सादगी के, आप अनूठे संगम हैं।
साहित्य और शिक्षा जगत के, मेघन एक अप्रतिम सरगम हैं।।

।। साहित्य की साधिकाः सुशीला झा ।।

समस्तीपुर की माटी से, एक स्वर ऐसा उभरा है।
साहित्य के पावन उपवन में, जो बन वसंत बिखरा है। 1।

दिसंबर की इक्कीस तारीख, सन उन्नीस सौ पैंतालीस।
एरौत (रोसड़ा) की धरती पर, जन्मी एक दिव्य आशीष। 2।

पंडित राधा रमण झा और **सुमित्रा** की वे लाडली।
ज्ञान और संस्कारों की, पहनी जिन्होंने पाहुली। 3।

हिंदी, मैथिली, बांग्ला हो या हो अंग्रेजी का ज्ञान।
हर भाषा पर रहा सदा ही, उनका सम अधिकार समान। 4।

संपादन की राह चुनी और रची कई स्मारिकाएं।
उत्थान की संस्थाओं में, भरीं नई अंगड़ाइयां। 5।

लेखनी जब उनकी चलती, समय भी जैसे रुक जाता।
'वाणी बोलती है' उनकी, हर पाठक का मन हर्षाता। 6।

'समय की आहट' को पहचाना, 'लज्जा' का अनुवाद किया।
'समय का सच' और **'प्रतिनिधि'** से, समाज को संवाद दिया।7।

'मिथिला की बेटी', 'छिन्नमस्ता', 'विद्योत्तमा' का सार लिखा।
'सुशीला शब्द श्री' ने शब्दों का, अनुपम संसार लिखा। 8।

'अरिपन' की उन रेखाओं में, लोक कला को मान दिया।
'मिथिलांचल लोक कथाओं' को, नया एक सम्मान दिया। 9।

संस्कृति की वे रक्षक हैं, और शब्दों की वे साधिका।
मिथिला की इस धरा पर, वे हैं साहित्य की राधिका। 10।

।। मिथिला की ज्योतिः शकुंतला चौधरी ।।

समस्तीपुर की पावन माटी, जहाँ हुआ अवतार।
बल्लीपुर की उस बिटिया ने, बदला था संसार।।

सन् उन्नीस सौ उनतीस (1929) की, वह शुभ घड़ी महान।
शकुंतला जी के रूप में, जन्मा एक गौरवमयी सम्मान।।

जब समाज की संकुचित सोचें, पाँव पकड़ती थीं।
मर्यादा की झूठी दीवारें, नारी को रोकती थीं।।

तब घर की चौखट लाँघकर, वह बाहर निकल आई।
पुत्र और पुत्रवधू को भी, सेवा की राह दिखाई।।

परिवर्तन पहले स्वयं से हो, गांधी का था मंत्र।
उसी मंत्र को साध लिया, जो बना शक्ति का यंत्र।।

डॉ. नरेश कुमार 'विकल' को, जिसने सत्य सुनाया।
प्रेस वार्ता के मंचों पर, अपना परचम लहराया।।

पटना की साहित्यिक गोष्ठियाँ, उनकी ऋणी रहेंगी।
चेतना समिति की यादें, हर पल उनकी यादें कहेंगी।।

'मैथिली महिला संघ' की, वह संस्थापक आधार।
नारी चेतना को दिया, जिसने एक नया आकार।।

मैथिली भाषा की सेवा को, अपना धर्म बनाया।
'आशाक अंत' और **'कचनारक गाछ'** से, उपवन को महकाया।।

कथा–संग्रह की खुशबू ने, दिलों को जोड़ा था।
कलम की धार से उन्होंने, रूढ़ियों को तोड़ा था।।

आकाशवाणी पटना से, जब स्वर उनका आता था।
गीत–नाद और नाटकों में, मन सबका रम जाता था।।

विद्यापति की स्मृति में, जो आनंद मेला सजता था।
उनके कुशल नेतृत्व का, डंका वहाँ बजता था।।

समस्तीपुर का नाम किया, पूरे विश्व के मानचित्र पर।
साहित्य–सेविनी बनीं रहीं, वह अपने पावन चरित्र पर।।

दो हजार पंद्रह (2015) में, शांत हुआ वह तन।
मगर अमर है विश्व में, उनका दिव्य सृजन।।

।। साहित्य के अनन्य साधकः सत्य नारायण झा ।।

सिंघिया घाट की पावन माटी, जहाँ हुआ पावन अवतार।
रामबती देवी की ममता, और **भुवनेश्वर झा** का संस्कार।।

8 जनवरी 1942 की वह तिथि, बनी एक नई शुरुआत।
मैथिली के अंबर में जैसे, हुआ हो नया प्रभात।।

राष्ट्रवाद के प्रखर प्रवक्ता, जिनकी वाणी में है ओज।
मातृभूमि की सेवा में जो, करते रहे नित नई खोज।।

शिक्षक के पावन दायित्व से, ज्ञान की अलख जगाई है।
हिन्दी और मैथिली की बगिया, अपनी कलम से सजाई है।।

'परिमल' की खुशबू बिखेरी, रचनाओं के उपवन में।
विनय की पताका फहराई, साहित्य के पावन गगन में।।

'फहरय विनय पताश' जिनकी, प्रसिद्ध अनुपम कृति बनी।
सहज, सरस अभिव्यक्ति से, जन–जन की धड़कन बनी।।

आप साहित्यानुरागी, आप लेखनी के हैं धनी।
मैथिली की सेवा में, आपकी साधना है सबसे घनी।।

मधुबनी से समस्तीपुर तक, गूँजता आपका यश–गान।
हे साहित्य के मनीषी, आपको बारम्बार प्रणाम।।

।। श्रद्धा के सुमनः महंत रामचंद्र दास ।।

नवटोल की पावन कोख से, एक ज्योति पुंज मुस्काया था।
श्रीपुर गाहर की माटी ने, तब अपना मान बढ़ाया था।।

ननिहाल की गलियों में बीता, वह बचपन बड़ा सलोना था।
किसे पता था इस बालक को, बस राम–नाम का होना था।।

पर समय चक्र की छाया ने, खुशियों के पल भी छीने थे।
जीवन की छोटी दहलीज पर, दर्द बड़े ही झेले थे।।

माँ छूटीं पहले साये से, फिर पिता ने भी मुख मोड़ा था।
1950 तक अनाथ हुए, पर राम ने हाथ न छोड़ा था।।

गाहर की ठाकुरबाड़ी ही, फिर उनका मंदिर–धाम बनी।
तप, सेवा और साधुता ही, उनकी सच्ची पहचान बनी।।

1958 का वो पावन दिन, जब गद्दी का अधिकार मिला।
101 गाँवों के भक्तों को, गुरु का दिव्य दुलार मिला।।

शिष्य बहुत से आए–गए, पर एक अनूठा नाम हुआ।
मौनी बाबा की भक्ति से, सिद्ध गुरु का काम हुआ।।

बारह वर्षों का मौन साध, जिसने वैराग्य कमाया था।
रामचंद्र के चरणों में ही, अपना सर्वस्व चढ़ाया था।।

दूर–दूर तक फैली कीर्ति, महकी उनकी पावन सुगंध।
समर्पित सेवक, शांत हृदय, वे थे मूरत मय आनंद।।

आज भी उनकी महिमा का, गूँज रहा हर ओर स्वर।
धन्य हुए वे भक्त सभी, जिन पर रहा गुरु का हाथ प्रखर।।

।। शब्द–शिल्पी आचार्य राम जपी शर्मा ।।

मिर्जापुर की माटी से, एक सूरज ऐसा निकला था।
ज्ञान–रश्मि की आभा ले, जो जग को राह दिखाता था।।

रोसड़ा की गलियों में गूँजी, जिनकी विद्वत्ता की गान।
समस्तीपुर का मान बढ़ाया, वे थे विद्या के कीर्तिमान।।

संस्कृत की मधुरिम वाणी, और कबीर का पावन सार।
आध्यात्म और साहित्य का उनमें, दिखता अद्‌भुत संगम द्वार।।

'बीजक' के वे भाष्यकार, और **'कबीर पथ'** के थे प्राण।
सद्‌गुरु के उन वचनों को, दी नई एक पहचान।।

हाथों की रेखाओं में, जो कल का सच पढ़ लेते थे।
ज्योतिष और नक्षत्रों का, वे गहरा ज्ञान भी रखते थे।।

'कहे कबीर हँस अलबेला', 'शोषण' की उठती पुकार।
'सिंगरहार के फूलों' सी, कविताएँ थीं जिनका श्रृंगार।।

जमशेदपुर से बंगाल तक, गुंजित था जिनका सम्मान।
'विद्यालंकार', 'साहित्यालंकार', भारत का गौरव गान।।

आकाशवाणी के स्वर में, उनकी रचनाएँ बहती थीं।
मानवता और दर्शन की, जो पावन कथाएँ कहती थीं।।

अल्पायु में ही छूट गया, वह साहित्याकाश का तारा।
पर **'पथिक अंतिम सफर का',** आज भी मार्ग दिखाता सारा।।

आचार्य राम जपी शर्मा, युगों–युगों तक याद रहेंगे।
अपने शब्द–पुष्पों की महक से, वे हर हृदय में खिलेंगे।।

।। भीरहा का गौरवः प्रो फूलेन्द्र राय ।।

मिथिला की पावन धरती पर, **भीरहा** ग्राम अनूप है।
जहाँ ज्ञान की प्रखर रश्मि है, संस्कारों का रूप है।।

पीरापुर की पुण्य भूमि से, पूर्वज यहाँ पधारे थे।
नीलमणि कुल–दीपक बन, जन–जन के उजियारे थे।।

शांडिल्य गोत्र की शुचिता लेकर, अड़रिये ब्राह्मण वंश खिला।
राधा किशोर के आंगन में, सुत **'फूलेन्द्र'** सा रत्न मिला।।

यू.आर. कॉलेज, रोसड़ा के वे, अंग्रेजी के विद्वान रहे।
विद्या की उस पावन वेदी पर, अविरल ज्ञान–धार बहे।।

परम विद्वान, सरल व्यक्तित्व, गुणों की वह थाती थे।
शिष्यों के अंधियारे पथ में, वे दीपक की बाती थे।।

पंचतत्व में विलीन हुए वे, पर यश–काया शेष रहा।
भीरहा की उस वाटिका में, उनका पावन आशीष रहा।।

पिता के पुण्य–प्रताप को अब, सुपुत्र आगे बढ़ाते हैं।
न्याय–क्षेत्र में **दीपेन्दु**, निज गौरव–ध्वज फहराते हैं।।

अधिवक्ता बन दीन–दुखी की, वे ही संबल–शक्ति हैं।
पूर्वज की सेवा ही मानो, उन की पितृ–भक्ति है।।

अमर रहे **भीरहा** का गौरव, अमर रहे यह नाम सदा।
प्रोफेसर फूलेन्द्र राय की गूँजे, पावन जन्म स्थान सदा।।

।। माटी का लाल:सहदेव महतो ।।

हरिपुर की पावन माटी में, जन्मा एक उजियारा था।
सादगी की मूरत बना वह, जनता का सहारा था। 1।

1922 की बेला में, जिस आँगन में वह आए।
रोसड़ा की उस धरती ने, गौरव के गीत सुनाए। 2।

शिक्षा की राहों में चलकर, अपनी पहचान बनाई।
अदालत की दलीलों से, न्याय की अलख जगाई। 3।

जब उठा देश में **'भारत छोड़ो'** का वह इंकलाब।
आजादी के परवानों में, वह भी थे बेहिसाब। 4।

राजनीति की डगर कठिन थी, पर डिगे नहीं सहदेव।
जनता के विश्वास के रक्षक, बने रहे सदैव। 5।

दलसिंहसराय से समस्तीपुर तक, पाँच बार परचम लहराया।
विधानसभा की चौखट को, जन–सेवा से महकाया। 6।

जाति–पाति से ऊपर उठकर, जमात की राजनीति की।
अखिल भारतीय कुशवाहा सभा में, एकता की प्रीति दी। 7।

दो–दो बार मंत्री पद का, गौरव जिन्हें प्राप्त हुआ।
किन्तु हृदय जन–कल्याण हेतु ही, सदा व्याप्त हुआ। 8।

कृष्णापुरी की गलियाँ आज भी, नाम उनका दोहराती हैं।
सहदेव महतो मार्ग की राहें, गाथा उनकी सुनाती हैं। 9।

74 की उस जून में, भले ही थमी हृदय की धड़कन।
अमर रहेगा बिहार की धरती पर, उनका पावन अर्पण। 10।

।। जन–नायकःश्री बंधु महतो ।।

कापन की माटी से उठकर, जिसने मान बढ़ाया था।
विभूतिपुर की गलियों में, अपना भाग्य जगाया था।।

चौधरी महतो के आँगन का, वह दीपक बड़ा निराला था।
अंग्रेजी में एम.ए. करके, शिक्षा का उजियारा पाला था।।

विधायक बनकर सेवा की, दो बार चुना था जनता ने।
सत्तर के उस दौर में, लोहा माना था सत्ता ने।।

मंत्री परिषद् की गरिमा को, अपनी निष्ठा से सजाया।
कांग्रेस के झंडे तले, राज्यसभा तक कदम बढ़ाया।।

हार–जीत तो खेल समय का, कभी गिरे तो कभी सम्भले।
कभी मिली जनता की जीत, तो कभी राहों में कांटे निकले।।

अस्सी और नब्बे की हार ने, उनका साहस नहीं डिगाया।
क्षेत्र के विकास की खातिर, अपना पूरा जीवन लगाया।।

छह सालों तक संसद में, गूँजी उनकी प्रखर आवाज।
बिहार की इस धरती को, उन पर रहा सदा ही नाज।।

फरवरी दो हजार सोलह में, वह सूरज अस्त हुआ।
पर कार्यों की खुशबू से, यह सारा चमन प्रशस्त हुआ।।

शब्दों में जीवित रहेंगे वे, जन–जन के सम्मान में।
बंधु महतो का नाम रहेगा, बिहार के गौरव–गान में।।

।। जन–नायक: गंगा प्रसाद ।।

विभूतिपुर की पावन माटी, राजनीति की वह परिपाटी।
सत्तर के उस दौर में चमका, एक सितारा भारी था।।

गंगा प्रसाद श्रीवास्तव का, व्यक्तित्व बड़ा ही न्यारा था।
एसएसपी के टिकट पर जिनका, जन–जन को सहारा था।।

वर्ष उनहत्तर (1969) की वह बेला, जब जीत का परचम लहराया।
लोकप्रियता के बल पर उन्होंने, दिल्ली तक को थर्राया।।

कांग्रेस के दिग्गज को हराया, जनता का विश्वास मिला।
सतरह हजार मतों के साथ, सेवा का नया आकाश मिला।।

वक्त की धारा बदलती है, राजनीति की बिसात पर।
हार और जीत लिखे होते हैं, जनमत के ही हाथ पर।।

बहत्तर (1972) के चुनाव में जब, बदली हवा की चाल थी।
संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की, स्थिति कुछ बेहाल थी।।

मात्र कुछ वर्षों में ही देखो, वोट का ग्राफ गिर सा गया।
छह हजार पर सिमटी ताकत, तीसरा स्थान ठहर सा गया।।

सड़सठ (1967) की हार का साया, फिर सत्तर में भी आया था।
परिवर्तन की लहर ने फिर से, अपना रंग दिखाया था।।

उतार–चढ़ाव तो जीवन का, एक शाश्वत सा खेल है।
कभी जीत की शहनाई है, तो कभी हार का मेल है।।

किन्तु विभूतिपुर के पन्नों पर, उनका नाम लिखा जाएगा।
गंगा प्रसाद का वह संघर्ष, सदा याद किया जाएगा।।

।। विभूतिपुर का प्रथम स्वरः परमानन्द सिंह मदन ।।

विभूतिपुर की पावन माटी, जब जग उठी उमंगों में।
इतिहास रचा था **मदन जी** ने, लोकतंत्र के रंगों में।।

वर्ष '67' की वह बेला, जब नया क्षेत्र अस्तित्व में आया।
प्रथम विधायक बन कर उन्होंने, जन–जन का आशीष पाया।।

भाकपा का लेकर ध्वज हाथ में, सेवा की राह चुनी थी।
सत्रह हजार मतों की शक्ति, जनता ने स्वयं बुनी थी।।

गंगा प्रसाद को मात दी थी, संघर्षों के उस दौर में।
नाम गूँजा था मदन जी का, समस्तीपुर के शोर में।।

वक्त बदला और हवा भी बदली, '69' का वह साल था।
हारी बाजी, बिखरे सपने, पर मन में न कोई मलाल था।।

टिकट छिना पर यादें शेष हैं, उस पहले प्रतिनिधि की।
विभूतिपुर के पन्नों में लिखी, गौरव–गाथा मदन जी की।।

।। विभूतिपुर का 'लौहपुरुष': चन्द्रबली ठाकुर ।।

विभूतिपुर की पावन माटी, **बेलसंडीतारा** का लाल।
साधुशरण के आंगन उपजा, संघर्षों का वह प्रतिपाल। 1।

स्नातक की डिग्री हाथों में, जनसेवा का मन में ध्येय।
चन्द्रबली ने राजनीति में, गढ़ा नया एक नाम अजेय। 2।

चौहत्तर में युवा शक्ति बन, कांग्रेस की कमान संभाली।
दशकों तक संगठन सींचा, लाई चेहरे पर लाली। 3।

पचासी में विजय पताका, पहली बार फहराई थी।
विभूतिपुर की जनता ने, उनको पलकों पर बिठाई थी। 4।

नब्बे के उस दौर में जब, अपनों ने ही था टिकट काटा।
निर्दलीय हुंकार भरी, और जन–जन का था प्यार बांटा। 5।

भले हार हुई मत–गणित में, पर साख नहीं कम होने दी।
पचपन हजार वोटों की ताकत, विरोधियों की नींद छीनी। 6।

कांग्रेस, लोजपा, भाजपा तक, वैचारिक पथ बदलते रहे।
पर क्षेत्र के उत्थान हेतु, वे अनवरत ही चलते रहे। 7।

'लौहपुरुष' की संज्ञा पाई, अटल इरादे वाले थे।
छह बार के रणबांकुरे, वे जन–मन के उजियाले थे। 8।

अगस्त बाइस की चौदह तारीख, विदा हुआ वह कोहिनूर।
सूना हुआ सियासी आंगन, थम गया वह तेज भरपूर। 9।

चन्द्रबली ठाकुर का नाम, इतिहास सदा दोहराएगा।
विभूतिपुर की हर धड़कन में, वह नेता अमर हो जाएगा। 10।

।। विभूतिपुर का अमर सेनानीः श्री रामदेव वर्मा ।।

विभूतिपुर की पावन धरती, जिसका **'मिनी मास्को'** है नाम।
वहाँ के नायक **रामदेव वर्मा** को, सादर शत–शत बार प्रणाम।।

पतैलिया गाँव में जन्मे वे, संघर्षों की राहों पर चले।
पाँच दशकों की राजनीति में, जन–जन के दुखों को दले।।

कैंसर जैसा रोग भी उनके, साहस को न तोड़ सका।
मृत्यु को ललकारा जिसने, कोई उसे न मोड़ सका।।

नौ बार चुनाव लड़े रण में, छह बार विजय का तिलक लगा।
शोषित और मजदूरों के मन में, नव चेतना का दीप जगा।।

सिद्धांतों पर अडिग रहे वे, निज पथ से कभी न विचलित हुए।
पार्टी ने निष्कासित किया पर, जनता के मन में अंकित हुए।।

मुजफ्फरपुर की शिक्षा से, राजनीति के शिखर चढ़े।
उजियारपुर की लोकसभा तक, वे दृढ़ता से आगे बढ़े।।

22 मई 2022 को, बुझ गया वह दीपक महान।
पर अपनी अमर स्मृतियों से, वे बढ़ा रहे माटी की शान।।

विभूतिपुर का कण–कण आज भी, उनके गीत सुनाता है।
भारत माँ का वीर सपूत वह, इतिहासों में पूजा जाता है।।

।। जनसेवकः श्री मुसाय नायक ।।

रोसड़ा की माटी का चंदन, जन–जन का आधार थे।
सादगी की मूरत **मुसाय नायक**, सेवा के अवतार थे।।

सारी गाँव से आए नायक, पितृ–धर्म को निभाया।
नगरपालिका के आंगन में, अपना जीवन महकाया।।

शिक्षा भले ही 'मिडिल' थी, पर सोच बड़ी महान थी।
स्त्री–शिक्षा की लौ जगाना, उनकी अपनी शान थी।।

संत कबीर मुसाय नायक कॉलेज, जिसकी पहचान है।
उन्हीं के दृढ़ संकल्पों का, ये सुंदर वरदान है।।

कंधे पर था भार शहर का, स्वच्छता का ध्यान रखा।
पानी की हर बूँद सहेजी, जनता का सम्मान रखा।।

वार्ड आयुक्त से शुरू किया, परिषद के सदस्य बने।
नगरपालिका अध्यक्ष होकर, जन–गण के हृदय बने।।

सत्येन्द्र नायक के पिता वही, **बाल गोविन्द** के लाल थे।
कर्मठता और ईमानदारी की, वे एक मिसाल थे।।

फरवरी ग्यारह, सत्तासी में, बुझ गया वह दीप प्रखर।
किन्तु यादें उनकी आज भी, गूँजती हैं रोसड़ा नगर।।

।। जननायकः गजेन्द्र प्रसाद हिमांशु ।।

परदह की माटी से उपजा, एक व्यक्तित्व महान था।
समाजवाद की राह पे चलता, वो बिहार की शान था।।

महज सत्ताईस की उम्र में, लोहिया का विश्वास मिला।
हसनपुर की धरती पर, सेवा का नया प्रकाश खिला।।

सात बार के बने विधायक, जनता के वे लाडले।
त्याग और शुचिता के पथ पर, कभी न पीछे पाँव धरे।।

साइकिल चढ़कर चुनाव लड़ा, चंदे की पूँजी पास थी।
पर सीने में जनता के लिए, सेवा की सच्ची प्यास थी।।

दलों के जोड़–तोड़ से, उन्होंने सदा ही दूरी रखी।
सत्ता के लालच के आगे, अपनी मर्यादा ऊँची रखी।।

मंत्री और अध्यक्ष पद की, गरिमा को उन्होंने बढ़ाया।
पर नैतिकता के दामन पर, कभी कोई दाग न आया।।

जयप्रकाश हों या लोहिया, सबका स्नेह उन्हें प्राप्त था।
उनके निष्पक्ष निर्णयों में, एक अलग ही प्रताप था।।

राजनीति के इस समर में, वे एक अडिग मिसाल रहे।
साफ–सुथरी छवि के साथ, वे जन–मन के प्रतिपाल रहे।।

।। श्यामा कुमारीः संघर्ष की एक प्रतिध्वनि ।।

सिंधिया की पावन धरती पर, जो पहली महिला नाम हुई।
श्यामा कुमारी जन–जन की, सेवा का एक पैगाम हुई।।

सत्तावन (1957) के उस प्रथम भोर में, आरक्षित पद को मान दिया।
विधायक बनकर जनता को, अपना जीवन ही दान दिया।।

सरल नहीं था पथ उनका, संघर्षों की थी लंबी राह।
सड़सठ (1967) में फिर जीत मिली, जनता की पाकर वाह–वाह।।

कांग्रेस की वह दिग्गज नेत्री, निष्ठा की एक मिसाल रहीं।
जीतीं या हारीं चुनाव, पर सदा क्षेत्र की ढाल रहीं।।

हायाघाट की रणभूमि में, बालेश्वर से टकराई थीं।
हार–जीत से परे हटकर, वे साहस की गहराई थीं।।

लोकसभा की दहलीज पर, हाजीपुर ने उन्हें पुकारा था।
राम विलास के सम्मुख भी, वे मन से कभी न हारी थीं।।

वारिसनगर की गलियों तक, श्यामा ने अलख जगाई थी।
हर चुनाव के आँकड़ों में, जन–सेवा की सच्चाई थी।।

भले चुनावी परिणामों ने, रुख उनका कभी मोड़ दिया।
पर सेवा के उन पदचिह्नों ने, नाम सुनहरी जोड़ दिया।।

।। सिंधिया के जननायकः श्री राम जतन पासवान ।।

सिंधिया की पावन धरती पर, जो लाल परचम लहराया था।
संघर्षों की तपती धूप में, जिसने खुद को तपाया था।।

मार्क्सवाद की राह पकड़कर, जिसने जन–मन को जीता।
इतिहास गवाह है उस नायक का, जिसने नया वक्त लिखा।।

सन् बहत्तर (1972) की वो पहली जीत, जब गूँजा इंकलाब का नारा।
विधानसभा में पहुँचा था तब, सिंधिया का वह राज–दुलारा।।

सतहत्तर (1977) और अस्सी (1980) में, विजय का परचम फहराया।
लगातार तीन बार जीतकर, अपना लोहा मनवाया।।

कभी सीताराम को मात दी, कभी लक्ष्मी और जगदीश को।
जनता ने भी सर आँखों पर रखा, अपने उस आशीष को।।

पर हार–जीत के इस खेल में, वह कभी न डरा, न झुका रहा।
उनहत्तर (1969) की हार से भी, वह अविरल आगे बढ़ता रहा।।

पचासी (1985) की उस टक्कर में, वह रनर बनकर खड़ा रहा।
नब्बे (1990) और दो हजार (2000) में भी, सीपीआईएम से खड़ा रहा।।

भले चुनावी आंकड़ों में, कभी पीछे वह रह जाते थे।
मगर सिंधिया के गलियारों में, वह 'दिग्गज' ही कहलाते थे।।

सात बार लड़ा चुनाव जिसने, सीपीआईएम की शान बना।
गरीबों की जो आवाज बना, मजलूमों की पहचान बना।।

तीन जीत का गौरवशाली, वह अमर रिकॉर्ड बनाया है।
राम जतन पासवान ने अपना, नाम सुनहरे अक्षरों में लिखवाया है।।

।। लोकप्रिय जननायकः श्री रामाश्रय राय ।।

भीड़हा की माटी से जन्मे, जन–जन के **'बच्चा बाबू'**।
अडिग रहे संकल्पों पर वे, कभी न हुए बेकाबू।।

रोसड़ा की गलियों में गूँजी, उनकी सेवा की परिपाटी।
बच्चा राय के नाम से महकी, मिथिला की पावन माटी।।

1972 का वह रण था, जनसंघ का साथ मिला।
विजय–ध्वज लहराया ऐसा, जन–सेवा का फूल खिला।।

दल बदले पर दिल न बदला, जनहित ही था उनका धर्म।
जनता ने भी साथ दिया सदा, देख उनके पावन कर्म।।

कभी कांग्रेस, कभी जनसंघ, हर टिकट पर वे भारी थे।
विरोधियों के चक्रव्यूह में, वे अकेले ही योद्धा जारी थे।।

वकालत की मर्यादा रखी, दरभंगा बार के सचिव रहे।
निजी कोष से मार्ग बनाया, लोक–कल्याण की नदी बहे।।

भीड़हा गाँव के पुस्तकालय में, उनकी मेहनत बोलती है।
ललित आदमकद प्रतिमा उनकी, गौरव–गाथा खोलती है।।

शिक्षा का दीप जलाने को, विद्यालय भी एक बनाया।
अपने क्षेत्र के विकास हेतु, जीवन अपना सर्वस्व लगाया।।

हार–जीत तो लगी रही, पर साहस कभी न कम हुआ।
रोसड़ा की जनता के दिल में, उनका ही परचम रहा।।

कोटि–कोटि नमन है ऐसे, कर्मठ और निस्वार्थ को।
सार्थक कर गए वे जग में, अपने मानव–स्वार्थ को।।

।। लोकतंत्र के सेनानीः श्री रमाकांत झा ।।

सोनूपुर की पावन माटी से, एक नाम उभरा था भारी।
रमाकांत झा बने जहाँ में, जन–सेवा के अधिकारी।।

बावन (1952) के रण में हार मिली, पर अडिग खड़ा वह योद्धा था।
हार को जिसने जीत बनाया, वह साहस का पौधा था।।

सत्तावन (1957) में मधुबनी से, विजय पताका फहराई।
प्रजा सोशलिस्ट के सिपाही ने, अपनी शक्ति दिखाई।।

फिर बासठ (1962) और सरसठ (1967) में, रोसड़ा की ललकार बनी।
जीत की हैट्रिक से झा जी की, अद्भुत एक पहचान बनी।।

समय बढ़ा और धारा बदली, साठ–नौ (1969) में हार गए।
पर जन–गण के विश्वासों को, वह हिम्मत से संवार गए।।

अस्सी (1980) में जब फिर लौटे, बहेड़ी ने सम्मान दिया।
भारी मत के अंतर से, विरोधियों को मात दिया।।

सिद्धांतों की राह पे चलकर, सात बार जो लड़े चुनाव।
चार बार की विजय लिखी, था गहरा जन–जुड़ाव।।

कभी 'कर्पूरी' संग मिलकर, समाजवाद को धार दिया।
आजादी के आंदोलन में, सर्वस्व अपना वार दिया।।

बिहार परिवहन बोर्ड के अध्यक्ष, बनकर गौरव बढ़ाया था।
विधानसभा की गूँज बने, हर प्रश्न को सदन में उठाया था।।

कालिगामे के ब्राह्मण कुल का, बढ़ाया जिसने मान सदा।
प्रशासन, सेना, बैंक, स्वास्थ्य में, परिजन रहे विद्यमान सदा।।

एक सेनानी, एक विधायक, एक प्रखर वक्ता वो महान।
रमाकांत झा के चरणों में, शत–शत है नमन और सम्मान।।

।। जनसेवा के पावन स्वरः श्री महावीर राउत ।।

रोसड़ा की पावन माटी के, वह अनमोल सितारे थे।
जन–सेवा के पथ पर चलते, सबके राज–दुलारे थे।।

सन् बावन में जब गूँजा था, लोकतंत्र का पावन स्वर।
चुने गए थे **प्रथम विधायक**, वो **'महावीर'** निडर होकर।।

सत्ता का नहीं मोह उन्हें, बस जन–हित का आधार था।
सत्तावन में फिर से जीता, जनता का अटूट प्यार था।।

बासठ में जब रोसड़ा बँटा, और 'ईस्ट' क्षेत्र नया बना।
तीसरी बार भी जीत दर्ज कर, सेवा का नव अवसर चुना।।

हसनपुर के रण में उतरे, संघर्षों की राहों पर।
हार–जीत तो खेल समय का, अडिग रहे विश्वासों पर।।

चार चुनाव की लड़ी लड़ाई, तीन बार विजयी आए।
रोसड़ा के गलियारों में, आज भी उनके किस्से छाए।।

हथौड़ी घाट का वह पुल हो, या बाढ़ से लड़ने की ठानी।
सदन के भीतर गूँज उठी थी, उनकी मुखर प्रखर वाणी।।

सिंचाई मंत्री से प्रश्न किए, और विकास की माँग करी।
अस्पताल को राजकीय कराया, जन–सेवा की झोली भरी।।

हनुमाननगर के आँगन से, जो चली थी सेवा की धारा।
आज भी उनकी अगली पीढ़ी, देती है समाज को सहारा।।

नमन है ऐसे जननायक को, जिसने कर्म को धर्म चुना।
रोसड़ा और **हसनपुर** की मिट्टी में, अपना स्वर्णिम नाम बुना।।

|| जननायकः श्री बालेश्वर राम ||

समस्तीपुर की माटी से, एक सूरज ऐसा निकला था।
जनसेवा का संकल्प लिए, जो पथ पर अपने अविचल था।।

बटहू राम के आँगन में, वह सात मार्च को आया था।
बालेश्वर नाम की आभा से, मिथिलांचल को हर्षाया था।।

बावन के पहले चुनाव में, रोसड़ा से हुंकार भरी।
विधानसभा की चौखट पर, पहली बार पदचाप धरी।।

दलसिंहसराय और हायाघाट, सब बने कर्म की पावन भूमि।
उनकी निष्ठा, उनकी सादगी, जनता ने बारंबार चूमी।।

कभी बिहार के पर्यटन मंत्री, कभी सूचना की बागडोर।
विकास की राह दिखाते रहे, वे चारों ओर और हर छोर।।

हार मिली जब सतहत्तर में, वे विचलित कभी न हो पाए।
अस्सी में रोसड़ा के सांसद बन, दिल्ली तक अपना मान बढ़ाए।।

इंदिरा जी के शासन में, केंद्र की शोभा बढ़ा दी थी।
कृषि और ग्रामीण विकास में, अपनी ऊर्जा लगा दी थी।।

दलितों के वे मसीहा थे, शोषितों के वे संबल थे।
पद की गरिमा साथ लिए, हृदय से वे अति कोमल थे।।

आज भले ही भौतिक तन से, वे हम सबके बीच नहीं।
पर उनके कार्यों की खुशबू, अब भी है कुछ कम नहीं।।

रोसड़ा, दरभंगा, हसनपुर में, आज भी उनका प्यार बचा।
एक कांग्रेसी परिवार के रूप में, अपना गौरवपूर्ण इतिहास रचा।।

|| कुल का गौरवः महेश्वर प्रसाद सिंह ||

रोसड़ा की पावन माटी में, खिला ज्ञान का पुष्प महान।।
छत्रपति नगर के आंगन में, गूंज रहा जिनका सम्मान।।

रामी सिंह के वंश–वृक्ष की, चौथी पीढ़ी की शान थे।।
कामेश्वर सिंह के ज्येष्ठ पुत्र वे, घर के स्वाभिमान थे।।

पाँच भाइयों की अटूट शक्ति, जैसे मर्यादा का सार।।
महेश्वर, सुरेश, उमेश, दिनेश्वर, नरेश्वर–एक ही संस्कार।।

चार बने शिक्षक जगत में, एक बने अभियंता वीर।।
ज्ञान और विज्ञान की धारा, बहती रही गंभीर।।

सबसे अग्रज, सबसे ऊंचे, वटवृक्ष की छाया जैसे।।
महेश्वर बाबू ने संवारा, कुनबा अपना सदा प्रेम से।।

जीवन की हर राह चुनी पर, राह न बदली अपनी कभी।।
आर.एस.एस के स्वयंसेवक बन, जीए राष्ट्र के लिए सभी।।

आजीवन जो अडिग रहे, भगवा ध्वज की छाया में।।
राष्ट्र–भक्ति का दीप जलाया, इस नश्वर सी काया में।।

कर्तव्यनिष्ठ, सरल हृदय, और संस्कारों के धनी रहे।।
अपने कुल और अपनी धरती के, अनमोल रतन वे बने रहे।।

।। वीरः श्री ठक्कन चौधरी ।।

पबड़ा की मिट्टी का चंदन, वीर बाँकुरा वो अभिमानी।
इतिहास के पन्नों में अंकित, जिसकी अमर अमिट कहानी।।

रोसड़ा की गलियों ने देखी, ठक्कन की वह अजब डगर।
आजादी की आग लिए जो, चलता था निर्भीक निडर।।

गांधी के आह्वान पे जिसने, अपना सब कुछ वार दिया।
ब्रिटिश हुकूमत के शासन पर, शब्द–बाण से वार किया।।

साथ लिए **बालेश्वर–गंगेश, रामाकांत** की टोली थी।
आजादी के दीवानों की, अपनी एक ही बोली थी।।

नमन है उस सेनानी को, जिसने हमें स्वाभिमान दिया।
पबड़ा के उस अमर लाल ने, भारत को वरदान दिया।।

जब–जब गूँजेगा इंकलाब, रोसड़ा का गौरव गाएगा।
ठक्कन चौधरी का नाम यहाँ, सदा अमर हो जाएगा।।

।। रमौल का अमर स्वाभिमानः महावीर मंडल ।।

रमौल की माटी का चंदन, वीरों की वह गाथा है।
महावीर मंडल के चरणों में, झुकता सबका माथा है।।

शिवाजीनगर की पावन धरती, जिसका मान बढ़ाया था।
आजादी की वेदी पर, जिसने सर्वस्व चढ़ाया था।।

बयालीस की उस ज्वाला में, वे बने क्रांति की धार थे।
अंग्रेजों की चूलें हिलीं, ऐसे वह राजकुमार थे।।

समस्तीपुर की सड़कों पर, जब गूँजी उनकी ललकार थी।
गोरी हुकूमत थर्रा उठी, महावीर की वो तलवार थी।।

आज खड़ा है ग्राम रमौल में, उनका ऊँचा स्मारक पावन।
प्रतिमा उनकी देख आज भी, श्रद्धा से भर जाता मन।।

हर साल सात दिसंबर को, वहाँ मेला सा लग जाता है।
बच्चा–बच्चा वीर सपूत को, माल्यार्पण कर गाता है।।

स्मारक उनका कहता है, आज भी वह गौरव गाथा।
जिसने झुकने नहीं दिया कभी, भारत माँ का माथा।।

युगों–युगों तक गूँजेगा, उनका ये जयगान।
रमौल के उस बेटे पर, पूरे बिहार को है अभिमान।।

।। भीरहा का फतह नारायण रायः एक अमर सेनानी ।।

भीरहा की पावन माटी का, वह अनुपम गौरव गान है।
फतह नारायण राय जहाँ के, स्वाभिमान और प्राण हैं।।

रोसड़ा के उस वीर सपूत ने, ऐसा बिगुल बजाया था।
गोरों की काली सत्ता को, जड़ से पकड़ हिलाया था।।

खादी की उस धवल ओट में, इंकलाब की ज्वाला थी।
मातृभूमि की रक्षा हित, पहनी कष्टों की माला थी।।

ना झुके कभी वह जुल्मों से, ना डरे कभी वे कोड़ों से।
हवा बात करती थी उनकी, आजादी के घोड़ों से।।

गाँव–गाँव में अलख जगाई, क्रांति की मशाल ली।
देश की बलिवेदी पर, अपनी हस्ती डाल दी।।

भीरहा का बच्चा–बच्चा, आज भी उन्हें नमन करता है।
उनकी पावन यादों से, रग–रग में जोश भरता है।।

।। कलम की शहादतः पत्रकार विकास रंजन।।

रोसड़ा की उन गलियों में, वह सच का पहरेदार था।
अन्याय के विरुद्ध खड़ी, '**हिन्दुस्तान**' की वह ललकार था।।

हाथ में उसके कलम नहीं, जैसे कोई शमशीर थी।
बदलेगा वह सूरत शहर की, यही उसकी तकदीर थी।।

वर्ष दो हजार आठ (2008) का वह कालखंड भारी था।
सच लिखने वाला हर शख्स, जुल्म का शिकारी था।।

पर विकास की लेखनी ने, डर का दामन छोड़ दिया।
भ्रष्टाचार के किलों को, अपनी जिद से तोड़ दिया।।

25 नवम्बर की उस शाम, जब जुल्म ने जाल बिछाया था।
कायरों ने अपनी गोली से, एक निर्भीक को घेरा था।।

मगर वह डरा नहीं, न झुका कभी उन बाहुबलियों के आगे।
सो गया वह चैन से, पर सोए हुए समाज को जगा के।।

शिवाजी नगर से रोसड़ा तक, उसकी गूँज आज भी बाकी है।
हर जुल्म के खिलाफ लिखी, उसकी हर एक साखी है।।

2008 की वह चीख, हवाओं में अब भी तैरती है।
उसकी शहादत आज भी, कायरों की रूह को घेरती है।।

अपराधियों ने सोचा था, कि रूह को भी मार देंगे।
उन्हें क्या पता था कि '**विकास**' को, वह अमर नाम कर देंगे।।

खून से सींची है उसने, पत्रकारिता की पावन जमीं।
आज भी खलती है सबको, उस जांबाज की भारी कमी।।

इतिहास के पन्नों पर दर्ज, वह बलिदान महान रहेगा।
जब तक जिंदा है पत्रकारिता, **विकास रंजन** का नाम रहेगा।।

नमन है उस शहीद को, जिसने सच का साथ न छोड़ा।
मौत को गले लगा लिया, पर जमीर को न मरोड़ा।।

।। कलम का सिपाहीः रेवती कांत पाठक ।।

करियन रोसड़ा की मिट्टी से, एक ऐसा नाम उभरा है।
जिसने न्याय की दहलीज पर भी, साहित्य का रंग भरा है।।

कन्त लाल का अंश और **सुमित्रा** की ममता का जो मान रहा।
रेवती कांत पाठक बनकर, वह जन–गण की पहचान रहा।।

पटना उच्च न्यायालय में, जब गूंजी उनकी दलीलें भारी।
अदालत के उन कमरों ने भी, देखी उनकी कलम की बारी।।

वरिष्ठ अधिवक्ता का चोला पहन, जो न्याय की राह दिखाते थे।
वही हाथों से शब्दों के जरिए, नई दुनिया भी सजाते थे।।

'सात समुंदर पार' जाकर, जिन्होंने भावों को विस्तार दिया।
'लाल भौजी' और **'महाकाल'** लिख, जनमानस को झकझोर दिया।।

'रेलदूत' की सीटी बनकर, जो समय की रफ्तार बताते रहे।
वैदिक धर्म के उद्धारक **'उदयनाचार्य'** की गाथा हमें सुनाते रहे।।

कहानियों का संग्रह हो, या कविताओं की बहती वह धार।
शब्द–शब्द में झलकता है, उनका अद्वितीय संस्कार।।

न्याय और साहित्य का संगम, विरले ही कहीं होता है।
पाठक जी का व्यक्तित्व तो, मिथिला का अनमोल मोती है।।

।। मिथिला का गौरवः बासुकीनाथ ।।

समस्तीपुर की उर्वरा माटी, जहां **'पटसा'** का वास है।
वहीं से उपजा एक स्वर, जिसमें साहित्य की प्यास है।।

पिता–पुरखों के संस्कारों को, अपनी लेखनी में ढालकर।
चले **बासुकीनाथ** निरंतर, ज्ञान का दीप संभालकर।।

मगध विश्वविद्यालय की गलियाँ, साक्षी हैं उनके श्रम की।
जहाँ सींचा उन्होंने मानस, मिटाई धुंध हर भ्रम की।।

शिक्षण की मर्यादा ओढ़कर, जो गुरुवर कहलाए।
वही आज शब्दों के शिल्पी, जग में आदर पाए।।

'बोध–संकेतन' मात्र पुस्तक नहीं, गहन चिंतन की धारा है।
मैथिली के अंबर में चमकता, यह एक ध्रुव तारा है।।

विभिन्न ग्रंथों की भूमिकाओं को, जब माला में पिरोया।
तब जाकर साहित्य ने अपना, अनमोल रत्न है जोया।।

ग्रियर्सन की विरासत और मिथिला विभूति का मान।
सब सिमट आए आज, बनकर अकादमी का सम्मान।।

निबंधों के तर्क में, और विमर्शों के सार में।
गूंज रहा है नाम उनका, इस हिंदी–मैथिली संसार में।।

धन्य हुई वह पटसा की धूल, धन्य हुआ वह गाँव।
जहाँ मिली थके हुए शब्दों को, सुकुन भरी इक छाँव।।

रहे चिरंजीवी यह लेखनी, रहे ज्ञान का यह उल्लास।
बासुकीनाथ झा के रूप में, अमर रहेगा यह इतिहास।।

।। गीतों का मछेराः बुद्धिनाथ मिश्र ।।

मिथिला की पावन मिट्टी से, एक स्वर ऐसा उभरा था।
जिसने शब्दों की माला को, गीतों में ही सँवारा था।।

समस्तीपुर का देवधा गाँव, जहाँ बचपन मुस्काया था।
वाराणसी की गलियों ने, विद्वत्ता का मान बढ़ाया था।।

'जाल फेंक रे मछेरे' कह, जिसने जड़ता को तोड़ा।
यथार्थवाद की पगडंडी से, नवगीत का नाता जोड़ा।।

अंग्रेजी–हिंदी की शिक्षा, पर मन में बसी मैथिली है।
कंठ में जिनके सरस्वती और, शब्दों में मिश्री घुली है।।

खनकते शब्द, सुरीले बिम्ब, और ऋजु व्यक्तित्व की छाया।
साहित्य जगत ने मुक्त कंठ से, उनका ही यश गाया।।

रूस, मॉरीशस, न्यूयॉर्क तक, हिंदी का परचम फहराया।
पुश्किन और **निराला** सम्मानों ने, उनका गौरव हर्षाया।।

बैंकों की राजभाषा सेवा, और सम्पादन की बारीकी।
हर मोड़ पर उन्होंने दिखाई, अक्षर–अक्षर की नजदीकी।।

आकाशवाणी की गूँज बने, या **'प्रभात वार्ता'** का कोना।
उनके लिखे हर शब्द में मिलता, शुद्ध भावों का सोना।।

आज भी **'स्वयंप्रभा'** बनकर, जो साहित्य दीप जलाते हैं।
बुद्धिनाथ मिश्र ही हैं, जो गीतों में प्राण फूँक जाते हैं।।

।। राष्ट्र–साधकः डॉ० राम विलास राय।।

मिथिला की पावन मिट्टी से, एक ऐसा नाम उभरता है।
भीरहा (रोसड़ा) की गोदी में, जो प्रतिभा बन कर पलता है।।

विद्या के पावन मंदिर में, जिसका जीवन अर्पण है।
डॉ० राम विलास राय जी, शुचिता का एक दर्पण हैं।।

एम.ए., पी–एच.डी. की डिग्री, पांडित्य का परिचय देती है।
सभ्य समाज की आधारशिला, जिनके दर्शन में होती है।।

संस्कृत महाविद्यालय रोसड़ा के, कुशल प्रधानाचार्य रहे।
शिक्षा की अविरल धारा बन, ज्ञान के सागर में बहे।।

केवल अक्षर–ज्ञान नहीं, आरएसएस के संस्कार लिए।
जनसंघ और भाजपा संग, राष्ट्र–भक्ति के दीप जिए।।

रोसड़ा विधानसभा से जब, विधायक का चुनाव लड़ा।
जनसेवा के संकल्पों में, कद उनका और हुआ बड़ा।।

कुलपति काशीनाथ मिश्र ने, किया जिन्हें सम्मानित है।
कामेश्वर सिंह संस्कृत विवि में, जिनका नाम प्रतिष्ठित है।।

साहित्यिक संस्था **'अभिव्यक्ति'** ने, गौरव गान सुनाया है।
शिक्षक और राजनीति में, अपना मान बढ़ाया है।।

काव्य, कहानी, लेखों में, उनकी लेखनी सजती है।
पत्र–पत्रिकाओं के पन्नों में, उनकी ख्याति गूंजती है।।

'श्रीमद्भागवत माहात्म्य' की, काव्यांजलि को रचा उन्होंने।
भक्ति, कर्म और राजनीति को, धर्म से सींचा उन्होंने।।

रोसड़ा, समस्तीपुर की धरती का, वे अनुपम श्रृंगार हैं।
ज्ञान, राष्ट्र और लेखनी के, वे दिव्य एक अवतार हैं।।

।। साधना का शिखरः प्रो. शिवशंकर प्रसाद सिंह ।।

शुभ्र धवल शुचिता की मूरत, ज्ञान का अक्षय कोष हैं।
अनुशासन की जीवंत परिभाषा, वाणी में संतोष है।।

यू. आर. कॉलेज की गलियों में, जिनकी गूँज पुरानी है।
रोसड़ा की इस पावन माटी की, यह अमिट कहानी हैं।।

अस्सी की दहलीज खड़ी पर, तरुणाई शरमाती है।
साहित्यिक आयोजनों में, जिनकी ऊर्जा रंग लाती है।।

लोक मंच हो या संगम, या हो परिषद की गरिमा।
इनके बिना अधूरी लगती, इस अंचल की महिमा।।

शहर की चौपालें हों या, सुदूर गाँव की पगडंडी।
सम्मान भाव ऐसा उमड़े, जैसे श्रद्धा की पावन नदी।।

पदभार तो बस नाम मात्र, ये सेवा के पर्याय बने।
अगणित संस्थाओं के स्तंभ, संस्कृति के अध्याय बने।।

वक्त थमा सा रहता है, जब ये मंच पर आते हैं।
अनुभव के मोती बिखराकर, सबको राह दिखाते हैं।।

सिर्फ शिक्षक नहीं, वे एक युग के निर्माता हैं।
रोसड़ा के हर हृदय–पटल पर, अमिट प्रेम के दाता हैं।।

शिव का नाम, **शंकर** सी आभा, **शिवशंकर** सा तेज है।
साहित्य के इस उपवन में, इनका अनुपम क्रेज है।।

प्रसाद बनकर ज्ञान बाँटते, **सिंह** सी दहाड़ है।
रोसड़ा के मान–मर्यादा के, ये अडिग पहाड़ हैं।।

।। साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्रः डॉ. परमानंद मिश्र ।।

ज्ञान–पुंज, शुचि अस्मिता, विद्या का आधार।
साहित्यिक नभ में उदित, आप चंद्र–साकार।।

पिता **चन्द्र शेखर जी** का, मिला शुभ संस्कार।
माता बिन्दा देवी का, पाया सदा दुलार।।

रोसड़ा की पावन धरा, यू.आर. कॉलेज संस्थान।
हिन्दी के प्राध्यापक बन, बढ़ाया पद का मान।।

आरसी बाबू के काव्य का, किया शोध–अनुप्राण।
पीएचडी की मेधा से, मिला नया परिमाण।।

संस्कृत शिक्षा बोर्ड में, संभाला गुरुतर भार।
परीक्षा के नियंत्रक बन, किया व्यवस्था सुधार।।

मंचों का संचालन हो या, अध्यक्षता का मान।
वाणी की गरिमा से, किया सबका ही कल्याण।।

शिष्य परम्परा धन्य हुई, पाकर आपका सान्निध्य।
संजीव कुमार जैसे रत्नों ने, पाया ज्ञान का बोध।।

सेवा से निवृत्त हुए, पर रुकी न लेखनी आपकी।
साहित्य–साधना बन गई, सार्थकता जीवन की।।

शिक्षाविद् की श्रेणी में, हिमालय सा व्यक्तित्व।
हिंदी की सेवा में समर्पित, आपका पावन कृतित्व।।

नमन आपको गुरुवर, आप साहित्य के ज्योति–पुंज।

अक्षुण्ण रहे कीर्ति आपकी, जैसे नभ में रवि का पुंज ।।

।। साधना का शिखरः रमाकांत 'रमा' ।।

विभूतिपुर की पावन माटी, जिसका कण–कण चन्दन है।
'माना राय टोल' के उस साधक को, शत–शत वंदन है।।

पॉच जनवरी पैंतालीस को, जन्मा एक उजियारा था।
साहित्याचार्य की पदवी पाकर, जिसने जग को संवारा था।।

दलसिंहसराय, बिहट, ताजपुर, बने ज्ञान की पाठशाला।
जहाँ गुरुवर ने प्रेम भाव से, जलायी विद्या की ज्वाला।।

शिक्षक बनकर गढ़ा भविष्य, और शिष्य को दी परवाज।
दो हजार पाँच में सेवा–निवृत्त हुए, पर गूँज रहा अंदाज।।

'फूल पात' की कोमलता है**, 'भांगक गोला'** की मस्ती।
लेखनी में बसती है उनकी, संपूर्ण मिथिला की हस्ती।।

'कटैत पांखि–हसैत आंखि' में, जीवन का सार पिरोया है।
मैथिली की सेवा में उन्होंने, निज सुख–चैन को खोया है।।

मंचों पर जब शब्द गूँजते, रस की धार बरसती है।
मातृभाषा की सेवा को, आज भी रूह तरसती है।।

अपने क्षेत्र और मिथिला के प्रति, अटूट है उनका समर्पण।
कवि 'रमा' के चरणों में, यह लघु कविता है अर्पण।।

।। काव्य–साधना का 'दिवाकर' ।।

रोसड़ा की पावन माटी का, जिसने मान बढ़ाया है।
ज्ञान–दीप बन **'दिवाकर'** ने, घर–घर अलख जगाया है।।

शिक्षण की पगडंडी पर चल, जिसने पीढ़ी गढ़ी नई।
साहित्य सृजन की सरिता में, अपनी नाव चलाई है।।

मात भारती की सेवा में, समर्पित जिनका जीवन है।
'शंखनाद' की गूँज उठी, पावन जिसका अंतर्मन है।।

प्रकृति–प्रेम और पुरुष भाव की, सुंदर व्याख्या करते हैं।
मैथिली के मधुर–गीतों से, जन–जन की झोली भरते हैं।।

'अकाशवाणी' की लहरों पर, स्वर जिनका लहराता है।
बिहार के अखबारों में भी, नाम सदा जो आता है।।

'समन्वय' की बात करें और 'दूर–देहात' का गौरव हैं।
साहित्य जगत के उपवन में, ये तो अनुपम सौरभ हैं।।

त्याग तपस्या की मूरत हैं, सादगी ही जिनकी पहचान।
अविचल पथ पर बढ़ते जाते, 'लक्ष्य–भेद' जिनका अरमान।।

प्रलयंकर के **शंखनाद** से, नई चेतना जो भरते।
कलमकार वो **अनिरुद्ध** हैं, सच को जो अंकित करते।।

|| अधिवक्ता की गजलः रोसड़ा का गौरव ||

न्याय की डगर पर चलते–चलते, शब्दों का संसार बसाया है।
बेगूसराय के लाल ने देखो, **रोसड़ा** को ही अपना घर बनाया है।।

व्यवहार न्यायालय की जिरह के बीच, जो गजलें गुनगुनाते रहे।
अधिवक्ता बनकर आए थे, पर साहित्य के स्तंभ कहलाते रहे।।

गजल कुंभ के आंगन में, जिनकी गूँज सदा ही न्यारी है।
तराशे गए जो प्यार से, वह शख्सियत बड़ी ही भारी है।।

गजल की महफिल सजती है जब, आपका नाम मशहूर हुआ।
शायरी और जिरह का संगम, हर दिल को मंजूर हुआ।।

'घायल मन' की पीड़ा को, जब गजल का जामा पहनाया।
'शब्दों का गुलदस्ता' देकर, हर महफिल को महकाया।।

अदालत के दस्तावेजों से, जो फुर्सत के पल चुराते हैं।
उन्हीं पलों में **अवधेश्वर जी**, गजल की किताब सजाते हैं।।

लक्ष्मीपुर की गलियों में, अब सृजन का दीया जलता है।
समस्तीपुर की गोदी में, साहित्य का सूरज पलता है।।

कौशिकी और गणतंत्र की, जिन्होंने नई अनुभूति दी।
रोसड़ा की इस पावन धरती को, आपने गजल की विभूति दी।।

साहबपुर कमाल की माटी, बेगूसराय का मान है।
अधिवक्ता की ओजस्वी **वाणी, साहित्य की ऊँची उड़ान है।।**

'तराशे गए हम बहुत प्यार से', जिनकी अनुपम कृति बनी।
शब्दों के उस गुलदस्ते से, महक रही यह अवनी।।

स्वर्गीय रामावतार सिंह के कुल का, जो दीप प्रज्वलित करते हैं।
माता **गिरजा देवी** के आशीष से, साहित्य के रंग भरते हैं।।

'घायल मन' की पीड़ा को भी, कविता में जो ढाल दिया।
'शब्दों का गुलदस्ता' लाकर, उपवन को खुशहाल किया।।

‘कौशिकी’ और ‘स्वाधीनता संदेश’ का, संपादन जिनका कौशल है।
‘गणतंत्र की अनुभूति’ में दिखता, राष्ट्रप्रेम का संबल है।।

हिंदी भाषा परिषद के जो, उपाध्यक्ष बन शान बने।
देश भर की संस्थाओं में, जो सम्मानों की जान बने।।

रोसड़ा के न्यायालय में, जो न्याय के पक्ष में लड़ते हैं।
वही **अवधेश्वर** लेखनी से, सृजन की सीढ़ी चढ़ते हैं।।

79 वर्षों का अनुभव, और सादगी ही जिनकी छाया है।
ईश्वर ने बड़े ही प्यार से, इस शिल्पकार को तराशा है।।

।। साहित्य के साधकः डॉ. तृप्ति नारायण झा ।।

एरौत ग्राम की माटी का, वह चंदन माथे पर सोहे।
हाही झा टोल का पौरुष, जिसके पावन मानस को मोहे।।

रोसड़ा अनुमंडल के गौरव, ज्ञान पुंज अवतारी हैं।
डॉ. तृप्ति नारायण झा, साहित्य जगत के अधिकारी हैं।।

शिक्षा के मंदिर में जिसने, अड़तीस वर्षों तक तप किया।
मुरादपुर की पावन स्थली पर, विद्या का ही जप किया।।

लेकर अवकाश कर्मपथ से, अब शब्द–शिल्प को गढ़ते हैं।
साहित्य सिंधु के मंथन से, नव–आलोक में बढ़ते हैं।।

पहली ही कृति ने जन–मानस में, भक्ति का दीप जलाया है।
'मेरे राम हमारे राम' कह, सबको राम से मिलाया है।।

घर–घर में गूँजी वह वाणी, वह राम–कथा की पावन रीत।
लोकप्रियता के शिखर चढ़ी, मर्यादा की पावन प्रीत।।

हिंदी की वह अमित शक्ति, और होम्यो का विज्ञान मिला।
विद्यापति की उस धरती पर, मिथिला का वरदान मिला।।

'साहित्य शिखर' और 'काव्य रत्न', सब चरणों में आ शीश झुकाएँ।
एरौत के इस महाप्राण की, सब मिलकर मंगल गाथा गाएँ।।

कलम अमर, संकल्प अमर, और अमर आपका नाम रहे।
आपके शब्द–संगम में, जग का पावन विश्राम रहे।।

।। साहित्य सारथीः श्री राम स्वरूप सहनी 'रोसड़ाई' ।।

मनिया देवी की ममता और **यदु सहनी** का विश्वास मिला।
रोसड़ा की पावन माटी से, जिसे सृजन का आकाश मिला। 1।

बावन की वह प्रथम भोर, जब 'कालीवेदी' मुस्काई थी।
साहित्य जगत में तब एक, नई क्रांति सी आई थी। 2।

पाँच सुरीली भाषाओं का, संगम जिसके पास खड़ा।
विज्ञान पढ़ा, पर हिंदी से, नाता जिसका बहुत बड़ा। 3।

सैंतीस वर्ष तक 'संत कबीर' की, पाठशाला को आलोकित किया।
प्राचार्य बन कर शिक्षा का, हर घर में दीप प्रज्वलित किया। 4।

चेतना, अभिव्यक्ति, परिषद् हो, या संगम की वह शक्ति।
हर संस्था में रची–बसी है, जिनकी पावन शब्द–भक्ति। 5।

संयोजक, संचालक अद्भुत, खेल–कूद के भी हैं प्रेमी।
सांस्कृतिक पथ के राही, और ज्ञान मार्ग के अति संयमी। 6।

आरसी बाबू का मान मिला, काशी ने 'काव्य कुंभ' दिया।
मिथिला के इस अमर दीप ने, जग को नव आलोक दिया। 7।

'राम स्वरूप सहनी रोसड़ाई', कलम आपकी अमर रहे।
संजीव कुमार सिंह के भावों में, आपकी कीर्ति प्रखर रहे। 8।

'वीर एकलव्य' के खंड काव्य से, 'मेरे बोल' सुनाओ तुम।
'गमला–ए–गजल' की खुशबू से, यह सारा चमन महकाओ तुम। 9।

साहित्य संगम के स्तंभ हो, तुम संस्कृति के प्रहरी हो।
रोसड़ा के तुम मान–बिंदु, जैसे गंगा गहरी हो। 10।

।। जीवन की अनकही राहें ।।

कलम हाथ में, न्याय हृदय में, सत्य का पथ अपनाया है।
रोसड़ा की पावन माटी में, अपना फर्ज निभाया है।।

'मेरी जीवन यात्रा' में सिमटी, संघर्षों की हर एक कहानी।
कानून की पोथी सी पावन, उनकी अपनी अमर कहानी।।

माता इन्द्रपरी की ममता, **पिता उदित नारायण** का नाम।
नयानगर की गलियों से चलकर, पाया अपना एक मुकाम।।

एल.एल.बी. की शिक्षा पाकर, न्याय का दीप जलाया है।
नोटरी और अधिवक्ता बन, जन–जन का मान बढ़ाया है।।

सत्य साईं के चरणों में, जिनके मन का विश्वास बसा।
सच्चाई की राह पे चलना, जीवन का मूल प्रयास रहा।।

अनुभव के मोतियों को चुनकर, शब्दों में है पिरो दिया।
अपनी जीवन यात्रा को, जग के सम्मुख खोल दिया।।

।। न्याय के पथ परः चित्तरंजन प्रसाद सिंह ।।

नयानगर की पावन माटी, संस्कारों का मेल है।
जीवन की इस लंबी डगर में, वक्त का अनूठा खेल है।।

चित्तरंजन प्रसाद सिंह जी ने, कलम से अपनी बात कही।
सत्य और न्याय की धारा, जिनके जीवन में सदा बही।।

माता–पिता के आशीषों को, मस्तक पर सजाया है।
सत्य साईं की प्रेरणा से, धर्म का मार्ग अपनाया है।।

रोसड़ा के न्यायालय में, कानून का मान बढ़ाते हैं।
अधिवक्ता बन पीड़ित को, न्याय का द्वार दिखाते हैं।।

'मेरी जीवन यात्रा' उनकी, संघर्षों का दर्पण है।
समाज और इस माटी को, उनका हर पल अर्पण है।।

ज्ञान, कर्म और निष्ठा का, अद्‌भुत संगम इनमें है।
सच्चाई की जीत लिखी, जो उनके पावन मन में है।।

।। व्यक्तित्व का आलोकः तेज नारायण सिंह 'तपन' ।।

तेज पुंज सा मुख मंडल है, **नारायण** सा शांत हृदय।
सिंह सरीखा साहस मन में, कर्मठता की नित्य विजय।।

तेज नारायण सिंह नाम है, **'तपन'** जिसकी पहचान बनी।
ज्ञान–दान की पावन धारा, जिनसे जन–जन के बीच तनी।।

कलम हाथ में लेकर अपनी, सत्य की राह सजाता हूँ।
शिक्षक का वह धर्म निभाकर, मन का दीप जलाता हूँ।।

समस्तीपुर की माटी का, चंदन माथे पर सोहे।
कटघारा की उन गलियों का, प्रेम सदा मन को मोहे।।

'तपन' हूँ मैं, तपना मेरी नियति भी है, शान भी।
मिट्टी से जुड़ा हुआ हूँ, यही मेरी पहचान भी।।

बी.एससी. और बी.एड. कर, ज्ञान का बीज लगाया था।
शिवाजीनगर के बच्चों में, मैंने भविष्य जगाया था।।

'उर्मिला' की उस पीड़ा में, संवेदना के स्वर घोले।
'स्मृति पंख' फैलाकर मेरे, भावों के पंछी डोले।।

आकाशवाणी दरभंगा से, जब गूँजे मैथिली बोल।
लगा कि जीवन सार्थक है, और प्रेम ही सबसे अनमोल।।

'सरस्वती सम्मान' मिला, और मिला गुरु का मान जहाँ।
मुम्बई ने भी शीश नवाया, मिले गुरुजी का प्यार वहाँ।।

आज भले अवकाश लिया, पर थका नहीं है पाँव अभी।
'नन्हा–मुन्हा राही' बनकर, गढ़ने हैं बदलाव कई।।

अध्ययन और काव्यानुराग ही, अब मेरा विश्राम है।
शिक्षक था, और आज भी, जगाना ही मेरा काम है।।

शब्दों के इस उपवन में, खिले हुए हैं भाव कई।
तेज नारायण सिंह 'तपन' की, लिखी जा रही कथा नई।।

।। काव्य–साधना का शिखरः विजय व्रत कंठ ।।

हसनपुर की कोख से उपजा, वह व्यक्तित्व महान है।
देवधा गाँव की मिट्टी का, **विजय व्रत** ही मान हैं।।

जहाँ गीत–ऋषि बुद्धिनाथ मिश्र का, पावन घर–आवास है।
वहीं **कंठ जी** की लेखनी में, काव्य का उल्लास है।।

बगल में बहती गीत–धारा, पड़ोस में विद्वान हैं।
तभी तो इनकी पंक्तियों में, झलकता हिंदुस्तान है।।

शिक्षा की मशाल थामे, जीवन पथ पर चलते रहे।
बटहा के विद्या मंदिर में, ज्ञान–दीप बन जलते रहे।।

'सपने होंगे सच' पुकारे, इनकी पावन साधना।
शब्द–शब्द में बसी हुई है, जन–जन की आराधना।।

सेवानिवृत्त होकर भी जो, थके नहीं, रुके नहीं।
साहित्य के स्वाभिमान में, जो कभी भी झुके नहीं।।

मिथिला का गौरव बने, और समस्तीपुर की शान हैं।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन के, वह अमूल्य वरदान हैं।।

द्रोणाचार्य, शिखर सम्मान, पदकों की बौछार है।
पर सादगी ही **'कंठ जी'** का, असली श्रृंगार है।।

हसनपुर के लाल आप, देवधा का आप गौरव हैं।
साहित्यिक इस उपवन के, आप ही तो सौरभ हैं।।

बुद्धिनाथ जी का सान्निध्य, और **माँ शारदे** का हाथ रहे।
आपकी अमर लेखनी का, जग को सदा साथ रहे।।

|| साहित्य साधक : डॉ. प्रवीण कुमार प्रभंजन ||

समस्तीपुर की माटी का, एक अनुपम लाल निराला है।
सुशीला–दिनेश्वर के आँगन में, जिसने ज्ञान संभाला है।।

मई तिहत्तर में जन्मा जो, भूधर गाँव की शान बना।
विद्यापति की पावन धरती पर, हिंदी–मैथिली का मान बना।।

बनभौरा से शिक्षा पाकर, कुशेश्वरस्थान में बढ़ाया कदम।
समस्तीपुर कॉलेज ने देखा, जिसके लेखन में बड़ा है दम।।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से, जिसने पात्रता पाई है।
सन् निन्यानवे के दौर में, अपनी विद्वत्ता चमकाई है।।

विद्यापति शिखर सम्मान मिला, जब स्नातक का वह छात्र रहा।
काव्य–पाठ की गूँज उठी, वह शब्द–शिल्प का पात्र रहा।।

'आचार्य सुमन' की शिक्षा और **'कैलाश झा'** की स्मृति पाई।
खगड़िया से बिहार तक, जिसने अपनी साख जमाई।।

मैथिली की पत्रिकाओं में, दर्जनों लेखों का अंबार लगा।
साहित्य संगम और **मिथिला मंच** का, रोसड़ा ही संसार रहा।।

पत्र–लेखन हो या अभिनंदन, मंचों पर जिसकी धाक रही।
साहित्य सृजन की लौ मन में, अहर्निश जिसकी साक्षी रही।।

विद्यावाचस्पति बन करके, नूतन कीर्तिमान बनाया।
'महाभारत' के विश्लेषण का, पावन मार्ग दिखाया।।

दो हजार पच्चीस में जाकर, यह गौरवपूर्ण उपाधि पाई।
बुद्धिनाथ झा के महाकाव्य पर, अपनी प्रखर लेखनी चलाई।।

विशालकाय उस ग्रंथ का, गहरा अध्ययन सार किया।
मैथिली भाषा के गौरव का, जन–जन में विस्तार किया।।

विरासत में मिली लेखनी, पिता के पदचिह्नों पर चलते हैं।
काव्य–कुंज के इस उपवन में, नित नए पुष्प ही खिलते हैं।।

प्रभंजन जिसका नाम सत्य है, जो अविरल बहता जाता है।
साहित्य जगत में **'प्रवीण'** बनकर, अपना परचम लहराता है।।

।। मिथिला का गौरवः सरोज कुमार झा ।।

सोनपुर की माटी से उठकर, जिसने नभ को छुआ था।
मिथिला के संस्कारों का, जिसमें अनुपम मेल हुआ था।।

स्वतंत्रता की मशाल लिए, पितृ–पथ पर जो चला था।
सरोज कुमार झा नाम का, वह सूरज अद्वितीय ढला था।।

समुद्र की लहरों पर लिखी, विजय की एक कहानी।
भारत–बाँग्ला सीमा पर, दिखाई अपनी चतुरानी।।

न्यू मोर आइलैंड का संकट, जिसने हंसकर टाला था।
अपनी कुशाग्र बुद्धि से, भारत का मान संभाला था।।

इंटरनेशनल कोर्ट में गूँजी, उसकी तर्कों की ललकार।
संतुष्ट हुआ न्यायालय भी, हुई सत्य की जय–जयकार।।

कौशल ऐसा अद्भुत जिसका, हर ओर चर्चा भारी थी।
भारत के पक्ष में आई, वह जीत सबसे प्यारी थी।।

परम विशिष्ट सेवा मेडल, जिसके सीने पर सजा।
नौसेना के सागर में, लहराया विजय का ध्वजा।।

विकास की नई राहों पर, जिसने अपना सर्वस्व दिया।
राष्ट्रभक्ति की अलख जगाकर, जन–जन का मन जीत लिया।।

31 दिसंबर 2015 को, सेवा से ली उन्होंने विदा।
पर उनके कार्यों की गाथा, रहेगी दिलों में सदा।।

समस्तीपुर के राजपत्र में, अंकित जिनका स्वर्ण नाम।
ऐसे वीर सपूत को, हमारा शत–शत कोटि प्रणाम।।

।। साहित्य के 'बालक': राम बालक सिंह ।।

बेलसण्डीतारा की माटी, जहाँ हुआ शुभ भोर।
शिवचरण–जानकी के आँगन, गूँजी किलकारी चहुँ ओर।।

तीन जनवरी बावन को, जन्मा एक व्यक्तित्व महान।
विज्ञान हाथ में थाम लिया, पर साहित्य में बसी थी जान।।

विज्ञान को अपनाया जिसने, तर्कों की डगर चुनी।
पर हृदय की कोमल भावनाओं ने, अनुपम काव्य–कथा बुनी।।

'बालक' उपनाम सजाकर, जो चले कलम के पथ पर।
शब्द–शब्द में घोल दिया, जन–मानस का पावन स्वर।।

रचनाओं का संसार सजाया, जैसे उपवन खिला–खिला।
'बालक काव्य मंजरी' में, गीतों का अनूठा रंग मिला।।

'अभिनंदन पुष्पों की माला', श्रद्धा का एक अर्पण है।
'काव्य काया' और **'अमर प्रेम',** संवेदना का दर्पण है।।

उठा कलम जब समाज हेतु, तब एक अलख जगाई थी।
'दुल्हन ही दहेज है' कहकर, कुप्रथा की जड़ हिलायी थी।।

माटी की खुशबू महकी, हर छंद और हर सौरव में।
लिख दिया इतिहास स्वयं, बनकर **'गांव का गौरव'** वह।।

विज्ञान की दृष्टि मिली, और मिला साहित्य का बोध।
लेखनी में बहती रही, नित नई–नई ही शोध।।

राम बालक सिंह 'बालक' जी, आप कलम के शिल्पी हैं।
शब्दों के इस महायज्ञ में, आप ही ज्योति और दीप्ति हैं।।

।। साहित्य के पथिकः वाचस्पति सौरभ ।।

मिथिला की पावन मिट्टी से, जिसने चंदन रूप लिया।
शब्द–साधना की लौ जलाकर, माँ भारती को नमन किया।।

रोसड़ा की गलियों से उठकर, जिसने नभ को छुआ है।
वाचस्पति उपनाम सजाकर, साहित्य का सृजन हुआ है।।

पिता **'राम जपी'** का आशीष, माता **'सुकुमारी'** का दुलार।
रग–रग में बसता है जिनके, संस्कारों का शुद्ध विचार।।

गद्य–पद्य की धारा में, जिनका लेखनी–रथ दौड़ रहा।
भावों के कच्ची माटी को, जो नित नवीन रूप मोड़ रहा।।

'मांडवी' के त्याग की गाथा, खंडकाव्य में गाई है।
'एक सबन का सिरजनहारा', कथा–जगत की गहराई है।।

स्वयं राह के राही बनकर, पथ को नई दिशा दी है।
पिता के **'अंतिम सफर'** को भी, संपादन की संज्ञा दी है।।

कलमकार मंच जयपुर से, जब प्रथम पुरस्कार आया।
'सर्वश्रेष्ठ समीक्षक' बन, दिल्ली में मान बढ़ाया।।

'विद्यापति' की थाती और **'आरसी'** का सम्मान मिला।
क्रांतिधरा मेरठ में, **'साहित्य सुकुमार'** सा पुष्प खिला।।

गीत, गजल और लघुकथा, हर विधा में नाम किया।
हिंदी की सेवा को ही, अपना जीवन तमाम किया।।

मिथिला का यह लाल आज, हिंदी का गौरव गान है।
सौरभ वाचस्पति रोसड़ा में, साहित्य का बढ़ता मान है।

।। विरासत के संवाहक: डॉ. विजय कुमार चौधरी ।।

विभूतिपुर की कोख से, एक दिव्य प्रकाश निकला है।
वाजिदपुर बम्बैया से, इतिहास का पथ पिघला है।।

पंद्रह मार्च, सत्तावन (15–03–1957) की, वह शुभ घड़ी आई थी।
जब समस्तीपुर की माटी ने, एक नई आभा पाई थी।।

विरासत की धूल झाड़कर, गौरव को जिसने जगाया है।
अतीत के धुंधले पन्नों पर, एक नया सवेरा लाया है।।

पांडु, रामचौरा, चेचर की, खुदाई जिसने करवाई।
दबी हुई उन सभ्यताओं की, दुनिया को झलक दिखाई।।

'द वैदिक एक्सपीरियंस' का, पांडित्य पूर्ण सम्पादन किया।
ज्ञान के इस महायज्ञ में, अपना सर्वस्व अर्पण किया।।

ह्वेनसांग की राहों का, जो बना आज अन्वेषक है।
काशी प्रसाद जायसवाल संस्थान का, कुशल निदेशक है।।

मौलाना आजाद सम्मान मिला, उनकी निष्ठा के प्रमाण में।
एक नाम स्वर्ण अक्षरों में, आज इतिहास के आसमान में।।

स्मारकों के रक्षक बनकर, जो नित नया सृजन करते।
बिहार की इस पावन भूमि का, मान निरंतर जो भरते।।

वह इतिहास के चितेरे हैं, वह संस्कृति के संवाहक हैं।
डॉ. विजय कुमार चौधरी, भविष्य के सच्चे मार्गदर्शक हैं।।

।। साहित्य के साधकः डॉ. प्रभात कुमार ।।

नया नगर की पावन माटी, समस्तीपुर का मान।
जन्मे जहाँ **प्रभात** सरीखे, हिंदी के विद्वान।।

अंग्रेजी पर पकड़ अनूठी, हिंदी से अनुराग।
लेखनी में है गूँज रही, मानवता की राग।।

पत्रकारिता धर्म निभाया, जन–जन की आवाज बने।
कविता और कहानियों से, सुंदर कई समाज बुने।।

पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी, इनकी मेधा की आभा।
शब्द–शब्द में झलकी देखो, ज्ञान–पुंज की परिभाषा।।

'जितना कोई आदमी', अनुपम काव्य–कृति महान।
साहित्य जगत में बढ़ा रही है, इनका ऊँचा नाम।।

सरल हृदय और प्रखर बुद्धि के, धनी हैं आप सुजान।
सादर नमन **डॉ. प्रभात** को, आप देश की शान।।

।। साधना का शिखरः नरेंद्र कुमार सिंह ।।

महथी की उस उर्वर माटी का, संचित आशीष मिला।
सत्तर के उस दशक बीच ही, हृदय–कमल था एक खिला।।

पिता **स्व. हरे कृष्ण सिंह** की, पावन छाया साथ रही।
साहित्य सृजन की अविरल गंगा, रग–रग के भीतर बही।।

स्नातक विज्ञान किया पर, मन शब्दों में रमा रहा।
बेगूसराय का कोना–कोना, उनकी लगन से थमा रहा।।

'समय सुरभि' जो जली मशालें, **'अनंत'** राह दिखलाती हैं।
छब्बीस बरसों की थाती यह, गौरव–गाथा गाती हैं।।

'एक कदम आगे' बढ़कर ही, मंजिल को पहचाना था।
'एक दीया' और 'आकाश' समेटे, सृजन बढ़ाना था।।

'धूप आयी सीढ़ियों तक', जब गजलें गुनगुनाने लगीं।
साहित्य–साधक की पीड़ा भी, शब्दों में मुस्काने लगी।।

राष्ट्रकवि दिनकर की धरती, का मान बढ़ाया है आपने।
प्रगतिशील लेखक संघ को, अपना बनाया है आपने।।

'पुष्पांजलि' श्रीबाबू पर, या **'शंख कारवां'** गूँजा हो।
संपादन के हर पन्ने पर, बस सत्य भाव ही पूँजा हो।।

उत्तर प्रदेश की राजभाषा, या जनसत्ता की बात करें।
आकाशवाणी के स्वर में, नई चेतना ज्ञात करें।।

राष्ट्रीय स्तर के सम्मानों का, लगा हुआ अम्बार यहाँ।
पर सादगी ही जीवन का, असली है श्रृंगार यहाँ।।

'शिवपुरी' के उस आँगन में, अब भी दीप जलता है।
साहित्य और संस्कृति का, जहाँ कारवां चलता है।।

संपादक, प्रकाशक बनकर, जो ज्योति जलाई है आपने।
सृजन–लोक की इस धरती पर, एक स्वर्ग सजाई है आपने।।

।। माटी का गौरवः अनुकूल रॉय ।।

रोसड़ा की पावन माटी से, एक नया सितारा उभरा है।
बचपन के उन खेल–मैदानों में, जिसका सपना सुनहरा है।।

हाथों में गेंद और मन में जिद, मंजिल को अपनी पाना था।
पढ़ाई से ज्यादा क्रिकेट की, उन गलियों में दिल लगाना था।।

सुधाकर जी का मान बढ़ा, दादा का सपना सच कर दिखाया।
चयनकर्ताओं को प्रतिभा से, झुकने पर मजबूर कर आया।।

अंडर–19 की नीली जर्सी, जब कंधे पर उसने सजायी थी।
अपनी स्पिन की जादूगरी से, दुनिया में धाक जमायी थी।।

समस्तीपुर का लाल है वह, बिहार का वह अभिमान है।
धीमी गति के खेल में छुपा, ऊँची उड़ान का अरमान है।।

मैदान पर जब वह उतरता है, कौशल का जौहर दिखता है।
कलम **'संजीव'** की गर्व से आज, उसकी गाथा लिखता है।।

मैदान का जादूगरः अनुकूल रॉय

समस्तीपुर की गलियों से, जो चला सफर अनजाना था।
लक्ष्य बड़ा था सामने, और पक्का उसका निशाना था।।

न्यूजीलैंड की उस धरती पर, जब विश्व कप का रण सजा।
अनुकूल की फिरकी का जादू, हर बल्लेबाज के सिर चढ़ा।।

पापुआ न्यू गिनी के विरुद्ध, वह पंजे का प्रहार था।
विकेटों की उस झड़ी में, हिंदुस्तान का जयकार था।।

पूरे टूर्नामेंट में 'सर्वाधिक विकेट', उसका नाम पुकारते।
दुनिया ने देखा वह मंजर, जब बड़े–बड़े दिग्गज हारते।।

आईपीएल के उस मंच पर भी, उसने अपना लोहा मनवाया।
कभी 'ब्लू' तो कभी 'पर्पल' जर्सी में, अपना हुनर दिखाया।।

झारखंड की रणजी टीम का, वो बना भरोसा अटूट है।
खेल के प्रति समर्पण ही, उसकी सफलता का सबूत है।।

बल्ले से भी जब गरजता है, गेंद सीमा पार जाती है।
'आलराउंडर' की उसकी खूबी, टीम को जीत दिलाती है।।

रोसड़ा के उस छोटे से घर की, आज गूँज रही है शान है।
अनुकूल रॉय की मेहनत से, बढ़ता बिहार का मान है।।

।। सुरों का साधकः अर्जुन कुमार चौधरी ।।

समस्तीपुर की माटी से, एक सुरभित स्वप्न जगाया था।
शिवाजीनगर के **परवाना** ने, अपना मान बढ़ाया था।।

अर्जुन के हाथों में सजकर, नाल और तबला बोले।
बगैर सिफारिश किस्मत ने, खुद आगे बढ़कर पट खोले।।

पिता 'लक्ष्मीकांत' से सीखी, सुर–ताल की बारीकी।
पटना की गलियों में खोयी, अपनी कलाबाजी सिखी।।

बी–हाई ग्रेड की पदवी पाई, आकाशवाणी के आँगन में।
प्रयाग विवि से शिक्षा लेकर, डूबे संगीत के सावन में।।

बिसमिल्ला खां सम्मान मिला, प्रतिभा को नया मुकाम दिया।
विलुप्त वाद्य यंत्रों को, फिर से नया नाम दिया।।

छप्पन यंत्र खोज निकाले, जो गाँवों में कहीं खोए थे।
'डगरडोल' और **'भोरबाजा'** के, बीज हृदय में बोए थे।।

रविंद्र जैन, अनुराधा पौडवाल, संग सुरों का मेल किया।
'गैंग्स ऑफ वासेपुर' की तालों पर, नाल का जादू खेल किया।।

पद्मश्री शारदा सिन्हा संग, बरसों तक संगत निभाई है।
कॉमनवेल्थ के मंचों पर, **'रिदम ऑफ बिहार'** गूँजाई है।।

वह कहते हैं गाँवों की माटी में, प्रतिभा की कमी नहीं।
बस सलीके से सँवारने की, अब तक कोई रश्मि नहीं।।

सीखे बिना जो अष्टयाम में, अद्भुत ताल बजाते हैं।
वही असल में इस धरती के, सच्चे रत्न कहलाते हैं।।

।। साहित्य का युवा साधकः जगमोहन चौधरी।।

समस्तीपुर की पावन मिट्टी, बागमती का तीर है।
आरसी बाबू के गाँव के उत्तर, बसा **'वैद्यनाथपुर'** धीर है। 1।

श्रीमती किशोरी, श्री निर्मल के घर, एक दीपक मुस्काया था।
12 सितंबर 1990 के दिन, **जगमोहन** इस जग में आया था। 2।

किसान कुल की सादगी ले, मन में ऊँचे ख्वाब बुने।
इतिहास की उन गहराइयों के, अनगिनत फिर मार्ग चुने। 3।

प्राचीन संस्कृति, पुरातत्व का, गहरा उन्होंने ज्ञान लिया।
गया के केंद्रीय विवि से, एम.एड का भी मान लिया। 4।

दो बार नेट की बाधा लांघी, मेधा का परचम लहराया।
ललित नारायण विवि से, **'स्वर्ण पदक'** भी पाया। 5।

'नींव का पत्थर' बनी पहचान, पहली पुस्तक की वह धार है।
काव्य जगत में गूँज उठी, उनकी कलम की झंकार है। 6।

जी.डी. साहित्य सम्मान मिला, नीलकंठ की आभा है।
पोद्दार अरुण स्मृति शिक्षा की, गौरवमयी परिभाषा है। 7।

आज रोहतास की धरती पर, शिक्षक बन अलख जगाते हैं।
जगमोहन जी अपनी लेखनी से, नूतन विहान सजाते हैं। 8।

|| नयानगर का नक्षत्र: राहुल कुमार भारद्वाज ||

समस्तीपुर की माटी का, एक अनुपम सा उजियारा है।
नयानगर के आँगन से, हिंदी का चमका सितारा है।।

बारह अगस्त उन्नीस सौ तिरासी को हुआ उदय।
शशिभूषण के आँगन में, गूँजा जो पावन स्वरमय।।

मंजू माँ की ममता ने दी, लेखनी को वह दिव्य ओजस।
जिसमें समाहित बचपन से ही, साहित्य का अनुपम रस।।

मुंबई की उन गलियों में, जिसने यंत्रों को साधा है।
इंजीनियरिंग की शिक्षा संग, साहित्य प्रेम अगाध है।।

हसनपुर के उस बेटे ने, नया इतिहास रचाया है।
राहुल कुमार भारद्वाज ने, कलम से मान बढ़ाया है।।

'हिंदी गजल के युवा चेहरे' में जिनका नाम खिला।
अनिरुद्ध सिन्हा की पारखी नजर का, जिसे सम्मान मिला।।

व्यंग्य की पैनी गजलों से, जो सोई चेतना जगाते हैं।
'आजतक' के मंचों पर, जो अपनी धाक जमाते हैं।।

राष्ट्रीयता की लौ जलाए, मानव मूल्यों का है गान।
मंचों पर जब गूँजती वाणी, बढ़ जाता बिहार का मान।।

लिखते रहें आप यूँ ही, समाज का दर्पण बन कर।
बढ़ते रहें निरंतर आगे, हिंदी का अर्पण बन कर।।

नयानगर का यह साधक, गजल का एक नया सवेरा है।
राहुल कुमार भारद्वाज की प्रतिभा में, सुनहरे कल का बसेरा है।।

।। विरासत और विकासः श्री अशोक कुमार ‘मुन्ना’ ।।

रोसड़ा की पावन माटी का, गौरव और सम्मान हैं।
सेवा की इस गौरव–गाथा की, **मुन्ना** ही पहचान हैं।।

स्वर्गीय **भोला मांडर** जी का, नाम यहाँ सम्मान से होता।
पिता विधायक रहे जहाँ के, पुत्र ने वहाँ बीज विजय का बोया।।

विधायक पिता की विरासत को, और भी भव्य बनाया है।
राजनीति के इस आँगन में, अपना लोहा मनवाया है।।

सन दो हजार में समता से, शुरू किया था अपना काम।
फिर वारिसनगर की धरती पर, गूँजा मुन्ना जी का नाम।।

शिक्षित मन, उच्च विचार और इंजीनियरिंग की साख है।
नीतीश कुमार के साथ खड़े, वह दल की एक मजबूत साख हैं।।

दस, पंद्रह और बीस में, जीत की हैट्रिक लगाई थी।
जनता की सेवा की खातिर, अपनी उम्र बिताई थी।।

परंपरा अब आगे बढ़ती, नई पीढ़ी की बारी है।
वारिसनगर की सेवा में, पुत्र की अब हिस्सेदारी है।।

डॉ. मांजरिक मृणाल अब, पिता की राह अपनाते हैं।
वारिसनगर के **विधायक** बन, वह जन–जन के मन को भाते हैं।।

तीन पीढ़ियों का यह संगम, जनसेवा की मिसाल है।
मांडर परिवार की निष्ठा, सच में बड़ी बेमिसाल है।।

अशोक कुमार ‘मुन्ना’ का, व्यक्तित्व बड़ा ही पावन है।

यह परिवार तो क्षेत्र के हित में, जैसे खिला हुआ उपवन है।।

।। सफर सेवा काः सिद्धांतों की नई किरण ।।

विभूतिपुर की माटी का गौरव, समस्तीपुर की शान हैं।
बालेश्वर राम की विरासत, और सेवा ही पहचान हैं।।

कल तक हाथ का साथ रहा, अब **'तीर'** संग कमान है।
जन–जन की खुशहाली ही**, डॉ. अशोक** का अरमान है।।

छह बार विधानसभा की चौखट, जनता ने सर आँखों पर बिठाई।
रोसड़ा और **सिंघिया** की गलियों में, जीत की गूंज सुनाई।।

दिल्ली की राहें कठिन मिलीं, संघर्षों का दौर भी देखा।
पर हार नहीं मानी कभी, खुद लिखी भाग्य की रेखा।।

बदला वक्त, बदली राहें, अब जेडीयू की बारी है।
नीतीश के विकास मिशन में, अब इनकी हिस्सेदारी है।।

खादी वही, सादगी वही, बस नया एक संकल्प मिला।
बिहार की तरक्की की खातिर, सेवा का नया कल्प मिला।।

चौदह बार चुनावी समर में, अपना सब कुछ झोंक दिया।
विपक्षियों के भी सम्मान ने, इनके कद को और बड़ा किया।।

मृदुभाषी, सरल हृदय, राजनीति के वह संत हैं।
डॉ. अशोक के संघर्षों का, होता नहीं कभी अंत है।।

संगठन को सींचा सदा, अब नए पथ पर बढ़ना है।
विकास की इस राजनीति में, नया इतिहास गढ़ना है।।

पद से बड़ा व्यक्तित्व है, जग ने यह माना है।
डॉ. अशोक कुमार को बिहार ने, अपना **'रत्न'** पहचाना है।।

।। कर्मयोगी कलमकारः ललित कुमार ।।

रोसड़ा और **शिवाजीनगर** की, पावन मिट्टी का यह चंदन है।
बहादुरपुर की जन्मस्थली को, शत–शत बार अभिनंदन है।।

बल्लीपुर पंचायत की माटी का, वह अनुपम गौरव गान है।
जनवरी पहली, सतहत्तर (1977) में जन्मा, बिहार की शान है।।

ललित कुमार सिंह नाम जिनका, कर्म ही जिनका धर्म है।
सृजन और सेवा का संगम, जीवन का मुख्य मर्म है।।

खाकी पहन दिल्ली की रक्षा, वर्षों तक जिसने की है।
कलाम साहब की सुरक्षा में, अपनी सेवा दी है।।

पर हृदय में साहित्य बसा, और हाथों में कलम की धार।
लिख डाले अनमोल शब्द, कर दिया बिहार पर उपकार।।

'**बदलते बिहार के मायने**', दुनिया को दिखलाया है।
'डॉ. कलाम के सपनों का बिहार', पन्नों पर सजाया है।।

'साक्षात्कार में सफलता का मंत्र', युवाओं को सिखाते।
'महामहिम कोविंद की जीवनी' से, नया आदर्श बनाते।।

'बिहार के आदर्श शिक्षक' और **'सीतामढ़ी के व्यक्ति विशेष'**।
लेखनी में उतर आए, मानवता के सुंदर संदेश।।

'शिवाजीनगर के कर्मवीर' का, जो अनुपम उपहार दिया।
पुरखों की पावन स्मृतियों को, शब्दों में साकार किया।।

पुपरी में **डी.सी.एल.आर.** बन, न्याय की अलख जगाए।
ललित जी अपनी लेखनी से, स्वर्णिम इतिहास सजाए।।

|| कलम का मुसाफिरः त्रिपुरारि ||

एरौत की उन गलियों से, एक ख़्वाब पुराना निकला था।
समस्तीपुर की मिट्टी से, शब्दों का दीवाना निकला था।।

गंगा–जमुनी तहजीब लिए, उर्दू–हिंदी का मेल बना।
साहित्य जगत के आँगन में, वह सुंदर सा एक खेल बना।।

दिल्ली की उन राहों ने, दी तालीम जिसे साहित्य की।
मास–कॉम की समझ मिली, और धार मिली निज कृत्य की।।

कभी 'सरिता' की लहरों में, कभी 'हिंदुस्तान' के पन्नों पर।
कभी गूँज उठी आवाज उसकी, सोशल मीडिया के मंचों पर।।

गजलें उसकी मरहम जैसी, गीत सुहाने गाता है।
पटकथा की उलझनों को, वह सरलता से सुलझाता है।।

नेटफ्लिक्स की दुनिया हो या एमिली डिकिंसन का सार।
अनुवाद की उस कला में भी, झलकता है उसका प्यार।।

महाराष्ट्र की किताबों में, अब नाम दर्ज है उसका।
युवा दिलों की धड़कन में, पैगाम दर्ज है उसका।।

सपनों की नगरी मुंबई में, वह नित नया इतिहास रचे।
मार्गदर्शक बन कर सबका, लेखन का वह विश्वास रचे।।

फेलोशिप और सम्मान मिले, पर सादगी वैसी ही है।
कलम की उस जादूगरी में, आवारगी वैसी ही है।।

त्रिपुरारि! तेरी लेखनी को, हमारा कोटि–कोटि प्रणाम।
यूँ ही महकता रहे सदा, तेरा और साहित्य का नाम।।

।। ब्रह्मेन्द्र झा: शब्द और साधना का संगम ।।

मिथिला की पावन माटी का, समस्तीपुर का मान हैं आप।
बल्लीपुर की गलियों से उभरे, **ब्रह्मेन्द्र झा** महान हैं आप।।

स्वर्गीय **यादवेंद्र झा** का आशीष, सदा आपके साथ रहा।
लेखनी की इस पावन पथ पर, गौरवमय हर हाथ रहा।।

पत्रकारिता का धर्म निभाया, सत्य की राह पर अडिग रहे।
जागरण से प्रभात खबर तक, कर्मठ और निडर रहे।।

संपादन की सूक्ष्म दृष्टि से, पत्रिकाओं को रूप दिया।
हिन्दी–मैथिली की सेवा में, अपना जीवन अर्पण किया।।

आकाशवाणी के स्वर में गूँजी, आपकी कथा और मीठी वाणी।
सम्मानों की गौरव–गाथा, कहती आपकी अमर कहानी।।

पर इन सब उपलब्धियों में, एक पल सबसे अनमोल रहा।
जब आपकी मेधा का, मैथिली में अनूठा बोल रहा।।

'प्रथम मैथिली कथा संग्रह', जैसे भोर की पहली किरण।
ब्रह्मेन्द्र झा की मेधा का, मिथिला एवं मातृभाषा को समर्पण।।

पहली पुस्तक की वह खुशबू, जैसे माटी का श्रृंगार है।
उसमें बसी मिथिला की संस्कृति, और जन–जन का प्यार है।।

'भनसाघर' के व्यंग्य बाण से, कुरीतियों पर प्रहार किया।
सरल हृदय और स्पष्ट सोच से, सबका मन जीत लिया।।

बढ़ती रहे यह कीर्ति आपकी, लेखनी कभी न मौन हो।
साहित्य के इस अंबर पर, **ब्रह्मेन्द्र** सा न कोई और हो।।

।। कुल का गौरवः डॉ. महेश कुमार ।।

राजस्थान की माटी से उठकर, जिसने नई पहचान चुनी।
पूर्वजों के साहस और पुरुषार्थ की, एक नई कहानी बुनी।।

1956 की वह पावन तिथि, मार्च की तीसरी सुबह सुहानी।
विश्वनाथ और **रतन देवी** के आँगन में, आई खुशियों की रुबानी।।

महेश नाम से महक उठा घर, बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि पाई।
बी.बी.एन. की शिक्षा ने, भविष्य की सुनहरी नींव सजाई।।

मन में था संकल्प बड़ा, कि **'मानवता की सेवा'** करनी है।
चिकित्सा की राह कठिन सही, पर खुशियाँ सबकी भरनी है।।

पटना से एम.बी.बी.एस. कर, दरभंगा से 'सर्जक' कहलाए।
1987 में **'लखोटिया क्लिनिक'** के, द्वार सेवा के लिए खुलवाए।।

केवल उपचार नहीं करते वह, मरहम बन घाव सुखाते हैं।
अपने पिता की पावन विरासत, बखूबी आज निभाते हैं।।

जीवन की बगिया महक उठी, जब हेमा का संग पाया।
1982 के दिसंबर में, एक नया रिश्ता मुस्कुराया।।

दो लक्ष्मी रूपी बेटियों ने, घर का आँगन स्वर्ग किया।
पिता के आदर्शों को जीवन में, फिर से जीवंत कर दिया।।

।। शौर्य और शास्त्र का संगमः बिहार ।।

जहाँ **बुद्ध** की करुणा जागी, और **महावीर** का ज्ञान पला।
जहाँ **चाणक्य** की नीति निखरी, लोकतंत्र का दीप जला।
गंगा की लहरों में जिसके, गौरव का संस्कार है।
हाँ! माथे का चंदन है यह, यही मेरा बिहार है।। 1।।

जहाँ **उदयनाचार्य** के तर्कों ने, ईश्वर को भी राह दी।
न्याय की उस पावन धरती ने, दर्शन की परिभाषा दी।
मिथिला की उस मेधा को, शत–शत नमस्कार है।
शास्त्रों की यह जन्मभूमि, यही मेरा बिहार है।। 2।।

आरसी के गीतों में यहाँ, यौवन का उल्लास खिला।
सुरेन्द्र झा सुमन की वाणी से, मिथिला का विश्वास मिला।
बुद्धिनाथ की कविताओं में, छंदों का संसार है।
शब्दों की यह जादूगरी, यही मेरा बिहार है।। 3।।

बासुकीनाथ की प्रज्ञा चमकी, मौन का अद्भुत सार यहाँ।
साहित्य के इन साधकों से, सजता सदा विचार यहाँ।
श्रम की शक्ति, मेधा की धरती, ऊँचा जिसका आधार है।
संस्कृति का अनमोल खजाना, यही मेरा बिहार है।। 4।।

संजीव की लेखनी से अब, नया रूप यह गढ़ता है।
पत्रकारिता के संकल्प से, बाधाओं पर चढ़ता है।
मानव जीवनः एक काव्य यात्रा, प्रगति का विस्तार है।
मेरे सपनों का, सबके अपनों का, यही मेरा बिहार है।। 5।।

।। रोसड़ा के पथ परःबटगामनी ।।

कोन डगरिया जाइब हे सखी, मनवा मोर मोहाय।।
रोसड़ा के पावन गाम सब, रस्ता में भेटाय। 1।

थतिया, गोविंदपुर भेलै पाछू, दामोदरपुर के बाड़ी।
उदयपुर सँ निकलैत देखू, सहियार के फुलवाड़ी।

बटहा और चकथात के पथ पर, शीतल पवन बहाय।
कोन डगरिया जाइब हे सखी –––। 2।

मब्बी–महुली, हिरमिया देखू, पांचोपुर के ठाठ।
भीरहा सँ रहुआ पहुँचली, गंडक नदी के घाट।

सोनूपुर के मंदिर सोहै, एरौत के विद्वान।
बैद्यनाथपुर और ठाहर में, बाजे मधुर निसान।
कोन डगरिया जाइब हे सखी–––। 3।

बलुआहा, गायघाट सँ होइत, बरैठा डगरिया सुंदर।
मुसहरी, कैलूटोल के रास्ता, हाही झा टोल के अंदर।

मोतीपुर, महुली, फत्तेपुर, सुख के देय संदेस।
पीट्ठाडोभी, लालपुर, मुरादपुर, जानै सब परदेस।
कोन डगरिया जाइब हे सखी–––। 4।

कलवारा, बाला, गोथरा के, बाट जोहैं सब लोग।
भटोतर, मोहम्मदपुर में, प्रेम के भेल संयोग।

हरिपुर, पंचगामा सोहै, महरौर रोसरा के पास।
ढरहा, ढट्टा, गेहूंमाना, पूरय सबके आस।
कोन डगरिया जाइब हे सखी–––। 5।

भुतहा, मिर्जापुर सँ अइली, हनुमान नगर के द्वार।
भरवारी, मालिकाना मुसहरी, देवय सब सत्कार।

संजीव कुमार सिंह के पोथी सँ फुटलै, रोसड़ा के अनुराग।
बटगामनी ई गाइब सखी, जागल हमर भाग।
कोन डगरिया जाइब हे सखी, मनवा मोर मोहाय।6।

विनय–निवेदन

दो सौ आठ कलियों को चुनकर, माला एक बनाई है।
रोसड़ा की पावन माटी की, मैंने सुगंध सजाई है।।

पर सृजन कहाँ रुक पाता है, सागर–सा विस्तार है।
कुछ छूट गया जो अनलिखा, भूल मुझको स्वीकार है।।

संजीवनी की इन लहरों में, जो विषय नहीं मिल पाएंगे।
उन छूटे हुए प्रसंगों को, हम फिर से लिख दिखलाएंगे।।

मानव हूँ, त्रुटि स्वाभाविक है, शब्द कहीं डगमगाए होंगे।
संभव है भावों के मोती, दामन में कम आए होंगे।।

मर्मज्ञ पाठक! भूल मेरी, उदार बन बिसरा देना।
जो रिक्त रह गया पन्ना है, उसे आशीष से भर देना।।

अगली बार समेटूँगा मैं, शेष बचे हर रंग को।
अभी स्नेह से अपना लो, **'रोसड़ा की संजीवनी'** के संग को।।

कलम सत्य की साक्षी है, और शब्दों में विश्वास है।
'रोसड़ा की संजीवनी', एक नया इतिहास है।।

गंडक तट की इस गाथा को, हृदय लगाकर पढ़ लेना।
माटी के इस गौरव को, मस्तक पर तुम मढ़ लेना।।

पाठकीय निवेदन

प्रिय पाठकों,

'रोसड़ा की संजीवनी' कविता संग्रह अब आपके हाथों में है। इस पुस्तक के माध्यम से मैंने 208 कविताओं की एक लंबी यात्रा तय की है, जिसमें रोसड़ा की मिट्टी की महक, यहाँ का संघर्ष और यहाँ की स्मृतियों को शब्दबद्ध करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है।

तमाम प्रयासों के बावजूद, मैं यह भली–भांति जानता हूँ कि सृजन की कोई सीमा नहीं होती। रोसड़ा जैसे समृद्ध और ऐतिहासिक परिवेश के अनेक ऐसे महत्वपूर्ण विषय और पहलू छूट गए होंगे, जिन पर संभवतः आपकी पैनीदृष्टि जाए। एक लेखक के तौर पर मेरी यह सीमा रही होगी, लेकिन मेरा विश्वास है कि अभिव्यक्ति की यात्रा कभी पूर्ण नहीं होती।

गलतियां स्वाभाविक हैं–चाहे वे विषय के चयन में हों या संकलन की किसी त्रुटि में। इसके लिए मैं आप सभी सुधी पाठकों से हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो विषय इस बार मेरी लेखनी से छूट गए हैं, उन्हें अपनी अगली कृति में सहेजने और समेटने का पूर्ण प्रयास करूँगा।

आपकी आलोचनाएँ, सुझाव और आशीर्वाद ही मेरी इस साहित्यिक यात्रा की असली पूँजी हैं।

सधन्यवाद,

संजीव कुमार सिंह

।। संजीव की लेखनी:गद्य एवं हास्य–व्यंग्य से महाकाव्य तक।।

'बिहार का सत्ता संग्राम' की हलचल से, राजनीति का पथ दर्शाया।
'रोसड़ा की राजनीतिक यात्रा' में, सच का दर्पण दिखलाया।
'अर्धांगिनी:एक काव्य यात्रा' के हास्य–व्यंग्य में, तीखी धार पुरानी थी।
और **'रोसड़ा की संजीवनी'** तो, काव्यमयी एक रूहानी थी।

अब शब्द–शिल्पी **संजीव** चले, रचने को नूतन इतिहास,
महाकाव्य की गरिमा लेकर, आया भावों का मधुमास।
दो दिव्य ग्रंथ की आभा से, साहित्य जगत मुस्काएगा,
हर पाठक इन छंदों में, अपना ही अक्स पाएगा।

मानव जीवन: एक काव्य यात्रा

जन्म–मरण के बीच खड़ा, यह संघर्षों का मेला है,
मानव जीवन की यात्रा में, मन हर क्षण ही अकेला है।

"रूपक और उपमाओं से, इस जीवन को सजाया है,
संजीव ने **महाकाव्य** में, अस्तित्व का मर्म बताया है।"

पंच प्रभा

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर, पांचों की उजियारी है,
'पंच प्रभा' की रश्मियों में, सृजन की बहती धारा प्यारी है।

अलंकारों के अलंकार से, प्रकृति का रूप सँवारा है,
तत्वों के इस महाकाव्य में, ईश्वरीय इशारा है।"

उपसंहारः

गद्य की स्पष्टता, व्यंग्य की चपलता और अब महाकाव्य की गंभीरता–
संजीव कुमार सिंह की लेखनी अब पूर्णता की ओर अग्रसर है।

'मानव जीवनःएक काव्य यात्रा' और **'पंच प्रभा'** केवल पुस्तकें नहीं,
बल्कि छंदों में पिरोया हुआ जीवन दर्शन हैं।

साहित्य प्रेमियों के ध्यानार्थः कवि संजीव कुमार सिंह,पत्रकार के लिए अगली पुस्तक **मानव जीवनः एक काव्य यात्रा** एवं **पंच–प्रभा** लेकर हम जल्द ही पाठकों के बीच प्रस्तुत होंगे।

सधन्यवाद

प्रकाशक
ब्लू रोज पब्लिर्शस